



भारत का राजपत्र The Gazette of India

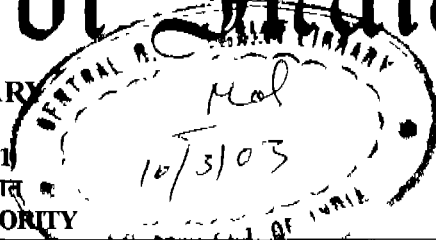
असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 254]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 25, 2002/आश्विन 3, 1924

No. 254]

NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 25, 2002/ASVINA 3, 1924

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 सितम्बर, 2002

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया गणराज्य से कास्टिक सोडा के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/10/2002-डीजीएडी.— 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं वसूली और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 के अंतर्गत:-

क. प्रक्रिया

1. जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) को उपरोक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स अल्काली मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएमएआई) (जिसे एतदपश्चात् याचिकाकर्ता कहा गया है) से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया गणराज्य (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश भी कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडियम हाइड्रोक्साइड जिसे आमतौर पर कास्टिक सोडा (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के रूप में जाना जाता है के पाटन का आरोप लगाया गया था। इस याचिका का समर्थन मैसर्स डीसीडब्ल्यू लि०, मुम्बई, मैसर्स गुजरात अलकालिस एण्ड कैमिकल्स लि०, बडोदरा, गुजरात, मैसर्स गुजरात अलकालीस, दहेज, मैसर्स सर्च कैम इंडस्ट्रीज लि०, मुम्बई, मैसर्स इंडियन रेयान एण्ड इंडस्ट्रीज लि०, वेरावल, गुजरात, मैसर्स ग्रासिम इंडस्ट्रीज, नागदा, एमपी, मैसर्स सिएल कैमिकल काम्पलैक्स, पटियाला, पंजाब, मैसर्स बिहार कास्टिक एण्ड कैमिकल्स लि०, झारखण्ड, मैसर्स जयश्री कौमिकल्स लि०, उड़ीसा, मैसर्स आंध्रा सुगर्स लि०, तनाकु, बिल्ट कैमिकल्स, डीसीएम श्री राम, नई दिल्ली और पंजाब अलकालीस एण्ड कौमिकल्स, चण्डीगढ़ द्वारा भी किया गया था।

(ii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन की प्रारंभिक जांच में कतिपय कमियां प्रकट हुई थी जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया था। अतः याचिका को विधिवत प्रलेखित माना गया था।

(iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने उक्त नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य तथा कोरिया गणराज्य के दूतावासों को सूचित किया।

(iv) प्राधिकारी ने 14.5.2002 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, अध्यापन में प्रकाशित किया गया था जिसके द्वारा चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गयी थी जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमाशुल्क कोड 281511 और 281512 (आईटीसी का 28151101, 28151102 और 28151200) के अंतर्गत वर्गीकृत है।

(v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनका ब्यौरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें पत्र की तारीख से 42 दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया।

(vi) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों (जिनका ब्यौरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और उन्हें नियम 6(2) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में आपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी गयी थी।

(vii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से भी अनुरोध किया गया कि वह जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में किए गए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करें।

(viii) प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की प्रति संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों तथा दूतावास को प्रदान की। जहां अनुरोध किया गया वहां अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अगोपनीय याचिका की एक प्रति भी प्रदान की गयी थी।

(ix) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी:

1. मैसर्स हंक्का कौमिकल कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य
2. मैसर्स संघाई क्लोर अलकाली कैमिकल कं० लि०, चीन जनवादी गणराज्य
3. मैसर्स ट्राइकोन इनर्जी लि०, अमरीका

(x) संबद्ध देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के संबंध में नियम 6(3) के अनुसार सूचना दी गई जिसमें यह अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के अंदर उत्तर देने की सलाह दें । ज्ञात निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की प्रति संबद्ध देशों के दूतावासों को भी भेजी गई थी ।

(xi) नियम 6(4) के अनुसार, एक प्रश्नावली संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को भेजी गयी थी:-

1. मैसर्स अभय कौमिकल्स लि०, बड़ौदा
2. मैसर्स अल्ब्राइट विल्सन कैमिकल्स लि०, मुम्बई
3. मैसर्स अरविंद मिल्स लि०, अहमदाबाद
4. मैसर्स बिरला सेल्यूलोस लि०, भरुच
5. मैसर्स सैन्ट्रल पल्प मिल्स लि०, दिल्ली
6. मैसर्स दीपक नाइट्राइट लि०, नन्देसरी
7. मैसर्स गोदरेज सोप्स लि०, मुम्बई
8. मैसर्स गुजरात इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड, बड़ोदरा
9. मैसर्स गुजरात नर्मदा फर्टिलाइजर्स कं. लि., भरुच
10. मैसर्स गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एण्ड कौमिकल्स लि०, बड़ोदरा
11. मैसर्स हिन्दुस्तान लीवर लि०, मुम्बई
12. मैसर्स आईसी आई इंडिया लि०, बल्साद
13. मैसर्स इंडियन फार्मर फर्टिलाइजर्स कोआप० लि० गांधी नगर
14. मैसर्स इंडियन ऑयल कारपोरेशन लि०, बड़ोरा
15. मैसर्स इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कारपोरेशन लि०, बड़ोदरा
16. मैसर्स जयंत डाइकैम लि०, मुम्बई
17. मैसर्स लिंक फार्मा लि०, बड़ौदा
18. मैसर्स मेघमानी आर्गेनिक्स लि०, अहमदाबाद
19. मैसर्स नर्मदा कैमातुर पेट्रोकेमिकल्स लि०, भरुच
20. मैसर्स निरमा लि०, अहमदाबाद
21. मैसर्स पीएबी कैमिकल्स (प्रा०) लि०, बड़ौदा
22. मैसर्स रामान्युज प्रिंटस एण्ड पेपर्स लि०, बड़ौदा
23. मैसर्स रूबामिन लि०, बड़ौदा
24. मैसर्स साबेरा आर्गेनिक्स लि०, मुम्बई
25. मैसर्स टोरेट गुजरात बॉया-टेक लि०, बड़ौदा
26. मैसर्स ट्रांसपेक इंडस्ट्रीज लि०, बड़ोदा
27. मैसर्स नेशनल एल्यूमिनियम लि०, भुवनेश्वर, उड़ीसा
28. मैसर्स सी०जे० शाह एण्ड कम्पनी, मुम्बई
29. मैसर्स साइनाइड्स एण्ड कैमिकल्स कंपनी, मुम्बई

30. मैसर्स देमोशा कैमिकल्स लि०, मुम्बई
31. मैसर्स ट्रांसपेक सिलोक्स इंडस्ट्रीज लि०, गुजरात
32. मैसर्स दीपक नाइट्राइट लि०, पुणे
33. मैसर्स हिन्सु इंडस्ट्रीज लि०, गुजरात

निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर/सूचना प्रस्तुत की थी ।

1. मैसर्स हंक्का कैमिकल कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य
2. मैसर्स संघायी क्लोर अल्काली कैमिकल कं० लि०, चीन जन. गण.
3. मैसर्स ट्राइकोन इनर्जी लिमिटेड, अमरीका

निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर/सूचना दी गयी थी:-

1. मैसर्स दीपक नाइट्राइट लि०, पुणे
2. मैसर्स ट्रांसपेक सिलोक्स इंडस्ट्रीज लि०, गुजरात
3. मैसर्स नेशनल एल्युमिनियम लि०, भुवनेश्वर, उड़ीसा
4. मैसर्स बिरला सेल्यूलोस लि०, भरूच

(xii) याचिकाकर्त्ता से क्षति के बारे में सूचना मांगी गयी थी जो उन्होंने प्रस्तुत भी कर दी थी । निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों के क्षति संबंधी मापदण्ड प्रस्तुत किए गए थे :-

1. मैसर्स डीसीडब्ल्यू लि०, मुम्बई
2. मैसर्स गुजरात अल्कालीज एण्ड कैमिकल्स लि०, बडोदरा
3. मैसर्स गुजरात अल्कालीज एण्ड कैमिकल्स लि०, बडोदरा
4. मैसर्स सर्च कैम इंडस्ट्रीज लि०, दहेज
5. मैसर्स ग्रासिम इंडस्ट्रीज
6. मैसर्स सिएल कैमिकल्स काम्पलैक्स, पटियाला, पंजाब
7. मैसर्स बिहार कार्बोस्टिक एण्ड कैमिकल्स लि०, बिहार
8. मैसर्स जयश्री कैमिकल्स लि०, उड़ीसा
9. मैसर्स श्रीराम अल्काली एण्ड कैम
10. मैसर्स आंध्रा सुगर्स लि०, कोवपुर, उनी
11. मैसर्स आंध्रा सुगर्स लि०, सगोण्डा यूनिट

(xiii) मैसर्स हांवा कैमिकल्स कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य से अतिरिक्त सूचना मांगी गयी थी जो प्रदान कर दी गयी थी ।

(xiv) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रखा ।

(xv) सामान्य तौर पर स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत तथा निर्माण एवं बिक्री की लागत निकालने हेतु लागत जांच भी की गयी थी ।

निम्नलिखित कम्पनियों की उत्पादन लागत पर विचार कर उचित जांच की गयी:-

1. मैसर्स डीसीडब्ल्यू लि०, मुम्बई
2. मैसर्स गुजरात अल्कालीस एण्ड कैमिकल्स लि०, बडोदरा
3. मैसर्स गुजरात अल्कालीस एण्ड कैमिकल्स लि०, दहेज
4. मैसर्स सर्च कौम इंडस्ट्रील लि०, दहेज
5. मैसर्स ग्रासिम इंडस्ट्रीज
6. मैसर्स सिएल कैमिकल्स काम्पलेक्स, पटियाला, पंजाब
7. मैसर्स बिहार कौस्टिक एण्ड कौमिकल्स लि०, बिहार
8. मैसर्स जयश्री कौमिकल्स लि०, उड़ीसा
9. मैसर्स श्रीराम अल्काली एण्ड कैम
10. मैसर्स आंध्रा सुगर लि०, कोव्वुर उनी
11. मैसर्स आंध्रा सुगर -सागोण्डा युनिट

(xvi) इस अधिसूचना में *** से किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गयी सूचना प्रदर्शित होती है जिसे नियमों के तहत प्राधिकारी ने ऐसा ही माना है ।

(xvii) अनुरोध प्रस्तुत करने की अंतिम तारीख 24 जून, 2002 थी । हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर समय सीमा बढ़ाकर 10, जून, 2002 कर दी गयी थी । मैसर्स शंघाई फ्लोर अल्काली कौमिकल्स लि०, चीन जनवादी गणराज्य के निर्यातक का उत्तर 22 जुलाई, 2002 को प्राप्त हुआ जिस पर भी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है ।

(xviii) जांच 1 अप्रैल, 2001 से 31 मार्च, 2002 अर्थात् जांच अवधि के लिए की गयी थी ।

ख. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

1. याचिकाकर्ता के विचार

क) विचाराधीन उत्पाद

- i) भारतीय बाजार में पाटित किए जा रहे उत्पाद का नाम सोडियम हाइड्रोक्साइड है जिसे आमतौर से कास्टिक सोडे के नाम से जाना जाता है। कास्टिक सोडे का रासायनिक नाम एन ए ओ एच है। यह एक अजैव (इन ऑर्गेनिक) रसायन है जो कि सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 में वर्गीकृत है। कास्टिक सोडा साबुन जैसा तेज अलकलाइन और गंध रहित तरल पदार्थ है। यह विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में कच्चे माल अथवा सहायक रसायन के रूप में व्यापक तौर से प्रयुक्त होता है। इसका प्रयोग मुख्यतया लुगदी और कागज अखबारी कागज, विस्कोस घागा स्टैपल फाइबर अल्युमिनियम सूती कपड़ा, नहाने व कपड़े धोने का साबुन डिटर्जेंट, रंजक (डाइस्टफ), ड्रग्स व फार्मास्यूटिकल्स, वनस्पति बनाने और पेट्रोलियम सफाई आदि में किया जाता है। कास्टिक सोडा लाइ और सॉलिडस दो रूपों में बनाया जाता है। सॉलिडस फ्लैक्स प्रिल्स ग्रेनुअल्स या किसी अन्य रूप में हो सकते हैं। कास्टिक सोडे की सभी किस्में इस याचिका की विषय वस्तु हैं।

शारीरिक उक्तकों के संपर्क में आने पर कास्टिक सोडा जलन पैदा करता है। आंखों में लगने पर यह भारी चोट पहुंचाता है। निगलने पर भी गंभीर क्षति होती है। कास्टिक सोडे का कुहरा नाक और गले में थोड़ी देर के लिए दंश जैसी संवेदना उत्पन्न करता है। उबलने की स्थिति में तेज एसिड के साथ यह बड़ी हिंसक प्रतिक्रिया करता है।

- ii) कास्टिक सोडा मूल उत्पाद है जो विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में कच्चे माल अथवा सहायक रसायन के रूप में व्यापक तौर से प्रयुक्त होता है। इसका प्रयोग मुख्यतया लुगदी और कागज अखबारी कागज, विस्कोस घागा स्टैपल फाइबर अल्युमिनियम सूती कपड़ा, नहाने व कपड़े धोने का साबुन डिटर्जेंट, रंजक (डाइस्टफ), ड्रग्स व फार्मास्यूटिकल्स, वनस्पति बनाने और पेट्रोलियम सफाई आदि में किया जाता है।

- iii) विश्व भर में कास्टिक सोडा बनाने की तीन टेक्नोलोजियां हैं। भारतीय उद्योग कास्टिक सोडा बनाने की यह तीनों प्रक्रियाएं उपयोग में ला रहा है। ये तीन प्रक्रियाएं इस प्रकार हैं-

- मर्करी सेल प्रक्रिया
- डायाफ्राम प्रक्रिया
- मेम्ब्रेन प्रक्रिया

- iv) यद्यपि भारत में कास्टिक सोडा बनाने की तीनों विधियां प्रयुक्त हो रही हैं तथापि मर्करी सेल टेक्नोलोजी और मेम्ब्रेन सेल टेक्नोलोजी भारत में व्यापक रूप से प्रयुक्त हो रही है।

- v) भारतीय कास्टिक सोडा उद्योग भारत में कास्टिक सोडे की समग्र मांग पूरी करने में मोटे तौर पर समर्थ रहा है। भारतीय उद्योग अपनी आवश्यकताओं की दृष्टि से 1975 से ही आत्मनिर्भर रहा है। जैसाकि ऊपर के पैरा में बताया गया है विशेष रूप से वास्तविक उपयोक्ताओं के लिए 1980-81 से कास्टिक सोडा ओ जी एल के तहत स्वीकृत आयातों की सूची में रहा है। किन्तु भारतीय उद्योग की मूल्यन नीति के कारण इसका आयात सीमित ही था। चीन और कोरिया में उत्पादकों द्वारा स्थापित क्षमताएं उनके अपने देश की आवश्यकताओं के अपेक्षा काफी अधिक हैं। इसके अलावा अनेक देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगा दिए जाने के कारण संबद्ध देशों के उत्पादकों को इसका भारत को निर्यात करना लाभदायक लग रहा है। इन देशों में फालतू क्षमता के कारण उत्पादकों पर अपने देश से बाहर बाज़ार खोजने के लिए भारी दबाव है। परिणामतः चीन और कोरिया के निर्यातकों ने भारत को निर्यात के लिए बहुत नीची दरें कोट की हैं। यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक है कि इन देशों के उत्पादकों ने कई बार तो सीधे भारत को आपूर्ति की पेशकश भी नहीं की है। इन देशों से उद्भूत कास्टिक सोडे की भारी मात्रा तीसरे देश के व्यापारियों द्वारा आफर की गयी है। जब पेशकश किसी व्यापारी द्वारा की जाए तब स्वभावतः वह अपने मार्जिन का भी अवश्य ध्यान रखेगा इसलिए इन देशों के उत्पादकों द्वारा कोट की गयी कीमतें अब भी नीची ही हैं। याचिकाकर्ता का विश्वास है कि आफर की गयी कीमतें संबद्ध उत्पादन लागत की दृष्टि से काफी कम है। इस प्रकार, चीन और कोरिया के उत्पादकों ने भारतीय बाज़ार में कास्टिक सोडे का पाटन करने का मार्ग अपना लिया है।

ख) घरेलू उद्योग

- i) डीसी डब्ल्यू लिमिटेड एक बहुउत्पाद कंपनी है जो सोडाऐश, कास्टिक सोडा (लाइ, सोलिड और फलेक्स), कैल्शियम क्लोराइड, सोडा बाइकार्बोनेट, अल्यूमिनियम बाइकार्बोनेट, साल्ट आदि जैसी वस्तुएं बनाती है।
- ii) गुजरात अल्कली एण्ड कैमिकल्स लिमिटेड भी एक बहु-उत्पाद कंपनी है जो बहुत से उत्पाद बनाती है और इसके उत्पादों में कास्टिक सोडा, क्लोरीन गैस, हाइड्रोक्लोराइड एसिड, हाइड्रोजन गैस, सोडियम साइनाइड, सोडियम हाइड्रोक्लोराइड, सोडियम फेरोसाइनाइड, मिथाइल क्लोराइड, क्लोरोफार्म, कार्बन, टेट्राक्लोराइड, पोटेशियम हाइड्रोक्साइड, पोटेशियम कार्बोनेट, फास्फोरिक एसिड, हाइड्रोजन पेरोक्साइड आदि शामिल हैं।
- iii) सर्च केम यूनाइटेड फास्फोरस लि० की सहायक कंपनी है। एससीआईएल येलो फास्फोरस, आइसो प्रोपाइल ब्रोमाइड, थाइओ डाई फेनोल, मेथिलीन ग्लूटारोनाईट्राइट एसेटिल ब्रोमाइड, पैरा नाइट्रो बेंजील अल्कोहल और ट्राइफोनाइल फास्फोरस थाइओनेट आदि जैसे विभिन्न उत्पाद बनाने वाली एक बहु-उत्पाद कंपनी है। यह कंपनी बिजली भी बनाती है।
- iv) ग्रासिम इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, आदित्य विक्रम बिरला ग्रुप की एक ध्वजपोत कंपनी है। ग्रासिम इण्डस्ट्रीज लिमिटेड एक बहु-उत्पाद बहुस्थानिक और सुविविधिता पूर्ण कंपनी है जो विस्कोस स्टैपल फाइबर, सफेद सीमेंट, सल्फ्यूरिक एसिड, कार्बन घरेलू उद्योग सल्फेट, रेयन ग्रेड पल्प, पेपर, स्टेबल ब्लीचिंग

पाउडर, मानव निर्मित फाइबर फैब्रिक्स, मानव निर्मित फाइबर यार्न, ग्रेसीमेंट, सीमेंट कंक्रीट की वस्तुएं, औद्योगिक मशीनें, पॉली अल्यूमिनियम क्लोराइड, क्लोरो सल्फोनिक एसिड और स्पंज आयरन आदि जैसी वस्तुएं बनाती है।

v) आन्ध्र शुगर लिमिटेड एक बहु उत्पाद, बहु स्थानिक कंपनी है जो चीनी एसेटिक एसिड, औद्योगिक अल्कोहल, सल्फ्यूरिक एसिड, सुपरफास्फेट, क्लोरोसल्फोनिक एसिड, ओलियम, एस्प्रिन, कार्बन डाइऑक्साइड, डिफूसेर्स, रसायन उपकरण, चीनी कारखाने के बाइलिंग हाउस के उपकरण अनासिमिट्रिकल डिमेथाइल बनाने और कोटन सीड्स आदि रिचवन और खली, शोधनशाला तेल का हाइड्रोजनेशन, पशु और मुर्गी चारे, पवन शक्ति विद्युत आदि के कामों में कार्यरत है।

vi) बिहार कास्टिक, जयश्री केमिकल्स और एसआईईएल केमिकल कॉम्प्लेक्स केवल कास्टिक सोडा और इसके सफेद उपोत्पाद ही बनाती हैं।

ग) समान वस्तु

i) भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और चीन तथा कोरिया से आयातित कास्टिक सोडा में कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा सामान्य रूप से और मांग डालने वाली कंपनियों द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा विशेषरूप से गुण स्वरूप आदि की दृष्टि से जैसे कि भौतिक और रासायनिक गुणों, कच्चे माल की संरचना, कार्य और प्रयोग उत्पाद विशिष्टियों मूल्यन वितरण और विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के हिसाब से समतुल्य हैं। ये दोनों ही तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से एक दूसरे का स्थान ले सकते हैं। उपभोगताओं ने इन्हें परस्पर बदली करके उपयोग किया है। पाटनरोधी नियमावली के अर्थानुसार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा को संबद्ध देशों से आयातित कास्टिक सोडा की समान वस्तु माना जाना चाहिए।

ii) जैसा कि इस याचिका में पहले चर्चा हो चुकी है, विश्व भर में कास्टिक सोडा तीन विधियों से बनाया जाता है। भारतीय उद्योग में भी कास्टिक सोडा तीनों ही विधियों से बनाया जाता रहा है। तथापि, तरीके की विविधता से उत्पाद में भौतिक और रासायनिक गुणों, उत्पाद विशिष्टियों, विपणन, मूल्यन उपभोगता प्रत्यक्ष ज्ञान और टैरिफ वर्गीकरण आदि की दृष्टि से कोई अंतर नहीं आता।

(घ) पाटन

i) चीन और कोरिया के उत्पादक भारत में पाटन कर रहे हैं। अधिकतर पाटन तीसरे देशों के व्यापारियों के माध्यम से किया गया है। किन्तु आपूर्ति सीधे इन्हीं देशों से नियोजित हुई थी।

ii) कास्टिक सोडा एक आधार भूत अजैव रसायन है जो अनेक उद्योग में कच्चे माल के तौर पर प्रयुक्त होता है। प्रधानतया इसका व्यापार थोक में होता है, इसलिए इसका पोतलदान सामान्यतः सीधे उद्गम के देशों से ही होता है। किन्तु प्रस्तुत मामले में और विशेष रूप से बड़ी भारी मात्रा में खरीद के लिए नैलको द्वारा जारी टेंडर के मामले में तीसरे देशों के व्यापारियों ने भाग लिया है जिसमें आपूर्ति सीधे संबद्ध देशों से ही की जानी है।

iii) नैलको ने अभी हाल ही में 100000 मी टन कास्टिक सोडे का टेंडर निकाला है। नैलकों द्वारा निकाले गए टेंडर में अनेक निर्यातकों ने भाग लिया है। निकाले गए टेंडर में माल की मात्रा काफी महत्वपूर्ण है।

iv) संबद्ध देशों और ऐसे अन्य देशों जिन पर अब पाटन शुल्क लगाना है या जिनके विरुद्ध जांच चल रही है, ने टेंडर में भाग लिया था। निकाले गए टेंडर के ब्यौरे निर्यातकों के नाम एजेंटों के नाम, आफर की मात्रा, आफर की गई कीमत, मांगा गया संशोधित मूल्य, बातचीत करके तय की गयी वह कीमत जिसपर नैलकों ने क्रयादेश दिए हैं, आयातित सामान की पहुंच कीमत आदि का विवरण टेंडर ब्यौरे में दिया गया है।

v) ध्यान देने योग्य है कि नैलको ने 87000 मी.टन के क्रयादेश दिए हैं जो भारत में एक वर्ष के दौरान कास्टिक सोडे के सम्मिलित आयात से भी अधिक है।

vi) चीन और कोरिया आर पी के अलावा इंडोनेशिया भी भारतीय बाजार में कास्टिक सोडे का पाटन कर रहा है। घरेलू उद्योग को बाजार से यह सूचना मिली है कि शीघ्र ही 3500 मी.टन माल भारत के सीमा शुल्क पत्तन पर आने वाला है। उल्लेखनीय है कि पहले घरेलू उद्योग ने अन्यो के अलावा इंडोनेशिया पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए याचिका दायर की थी। किन्तु इंडोनेशिया के विरुद्ध जांच आरंभ नहीं की गई थी। स्थिति का लाभ उठाते हुए अर्थात् जब कुछ अन्य देशों पर पाटनरोधी शुल्क लग गया है और इंडोनेशिया से आयातों पर शुल्क नहीं है, इंडोनेशिया के उत्पादकों और निर्यातकों को उस समय पाटन करने का अच्छा अवसर मिल गया है जब कुछ देशों की निर्यात कीमतें काफी गिर गई हैं और उनके सामने फालतू और अप्रयुक्त क्षमता की समस्या भी है।

vii) इस बारे में जानकारी प्राप्त करने के प्रयास किए गए कि कोरिया आर पी के निर्यातक अपने घरेलू बाजार में कास्टिक सोडा किस कीमत पर बेच रहे हैं। हमने निर्यातकों की मूल्य सूची या अन्य देशों को उनके निर्यातों के मूल्य साक्ष्य अथवा प्रकाशित स्रोतों से अन्य सूचना प्राप्त करने का प्रयास किया था। एक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय जर्नल से हमें कोरिया आर पी के घरेलू बाजार की कीमतों के बारे में जानकारी मिल गयी है। इस संबंध में क्लोर अल्काली में प्रकाशित जानकारी पर भरोसा किया जाता है।

viii) क्लोर अल्काली कोरिया के घरेलू बाजार में कास्टिक सोडे की कीमतें नियमित रूप से छापता है। अतः क्लोर अल्काली में दी गई कीमतों को ध्यान में रखते हुए कोरिया आर पी में सामान्य मूल्य की गणना की गई है। इस आधार पर कोरिया आर पी में सामान्य मूल्य 277 अमेरिकी डालर प्रति मी.टन आता है।

ix) भारतीय बाजार में कास्टिक सोडे के भारी पाटन से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है। इसके अलावा, जैसाकि क्षति के साक्ष्य पैरा से देखा जा सकता है, नैलको द्वारा दिए गए क्रयादेशों के कारण भी घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होगी।

ड. क्षति

- i) यह देखा गया है कि संबद्ध देशों के उत्पादकों की क्षमता उनके अपने अपने बाजारों में घरेलू मांग से बहुत अधिक है। नैलको को आफर की गई माल की भारी मात्रा इस बात का साफ सबूत है। उत्पादकों पर अपना माल बेचने के लिए भारी दबाव है। व्यापक भारतीय बाजार स्वभावतः उनके लिए निर्यात हेतु लाभकारी है जिसकी कीमत भारतीय उत्पादकों को चुकानी पड़ेगी। समझा जाता है कि अकेले चीनी उद्योग की ही क्षमता 8 मिलियन मी.टन से अधिक है जो चीन में कास्टिक सोडे की मांग से कहीं अधिक है।
- ii) समझा जाता है कि निर्यातकों ने अपने भारतीय एजेंट/एजेंटों की मार्फत भारी मात्रा में क्रयादेश बुक किए हैं। वास्तव में नैलको ने पहले ही 87000 मी.टन के क्रयादेश दे दिए हैं, जो अकेले ही भारतीय बाजार में कास्टिक सोडे के औसत वार्षिक आयात से अधिक है और अनेक भारतीय उत्पादकों की व्यक्तिगत क्षमता से भी अधिक हैं।
- iii) हमारी बाजार आसूचना का अनुमान है कि बहुत सा पाटित सामान मार्गस्थ है और शीघ्र ही उसके जहाज पहुंच जाने की आशा है। यदि बुकिंग का यही सिलसिला जारी रहा तो घरेलू उद्योग की बिक्री में भारी गिरावट होगी।
- iv) आयातित माल का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग के विक्रय मूल्य से बहुत ही कम है। भारत में संबद्ध वस्तु की मांग को देखते हुए दिए गए क्रयादेशों के सामान की मात्रा बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि यदि संबद्ध देशों के उत्पादक इन्हीं कीमतों पर भारतीय बाजार में माल बेचते रहे तो घरेलू उद्योग अपनी वर्तमान कीमतें भी बरकरार रखने में असमर्थ हो जाएगा।

V. आयातों के पहुंच मूल्य उत्पादन के कुल मूल्य से और घरेलू उद्योग के उचित विक्रय मूल्य से वास्तविक रूप से कम है। घरेलू उद्योग यदि समान मूल्य पर बिक्री करता है तो उन्हें नकद घाटे का सामना करने पर बाध्य हो जाना होगा। नैल्को द्वारा दिए गए आदेश से बाजार के मूल्यों पर प्रस्तावित जांच अवधि के बाद अत्यधिक निशानाजनक प्रभाव पड़े।

VI. पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। वे मूल्य जिन पर सामग्री निर्यात की जा रही हो, उससे उत्पादन लागत की क्षतिपूर्ति नहीं हो पाती है। भारी निविष्टियों पर लाभों का तो प्रश्न ही नहीं उठता है।

VII. तात्कालिक मामले में :

1. पाटन का एक इतिहास है। पहले घरेलू उद्योग साउदी अरब, यूएसए, जापान, ईरान और फ्रांस के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा भारत में कास्टिक सोडा के पाटित किए जाने से क्षतिग्रस्त हो गए। घरेलू उद्योग ने पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को अनुरोध किया। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विस्तृत जांच के बाद, पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जिसे अब केन्द्रीय सरकार द्वारा लगाया गया है। इन देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद कतार के निर्यातक/उत्पादक ने भारत में कास्टिक सोडा का पाटन करना प्रारंभ कर दिया है। घरेलू उद्योग में कतार के विरुद्ध भी पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांचों के बाद अनंतिम शुल्क लगाने की सिफारिश की थी। कतार के विरुद्ध जांच प्रारंभ होने के बाद संबद्ध देश के निर्यातक/उत्पादक द्वारा सामग्री का पाटन प्रारंभ कर दिया। अतः आज तक भारत में कास्टिक सोडा के पाटन का स्पष्ट इतिहास है।
2. निर्यातक इस बात की पूरी तरह जानकारी रखते हैं कि संबद्ध देशों द्वारा जिन मूल्यों पर सामग्री निर्यात की जा रही है वह पाटन मूल्य है क्योंकि पूर्व जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्धारित संदर्भित मूल्य से यह मूल्य बहुत कम है। निर्यातकों और उपभोक्ताओं को स्पष्ट रूप से यह जानकारी है कि सामग्री पाटित मूल्यों पर आयातित की जा रही है।
3. संबद्ध देशों के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा कम समय में क्षति पैदा की जा रही है। सऊदी अरब, यूएसए, जापान, ईरान, फ्रांस और कतार के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने

के शीघ्र बाद संबद्ध देश के उत्पादक ने पाटन प्रारंभ कर दिया । हमारे बाजार आसूचना यह सलाह देती है कि निर्यातक के पास बड़े आदेश है जो निर्यात प्रक्रिया के अधीन है ।

4. घरेलू उद्योग द्वारा एकल आदेश में लगभग 87000एमटी तक की बिक्री का नुकसान हुआ है।

VIII. भाग लेने वाली कंपनियों की बिक्रियों की मात्रा जो कि प्राधिकारी को दी गई है यह निर्दिष्ट करती है कि भाग लेने वाली कंपनियों की बिक्रियां जो 2000-01 तक बढ़ रही थी अप्रैल-दिसम्बर 2001 तक कम हो गई हैं । उसके बाद घरेलू उद्योग द्वारा बिक्रियों की मात्रा में हुई अधिकतम क्षति को ध्यान में रखते हुए बिक्रियों की मात्रा के कम बने रहने की संभावना है ।

IX. संबद्ध देशों से कास्टिक सोडा के निर्यात आकस्मिक रूप से बढ़े है । कभी-कभी होने वाले आयातों की स्थिति को देखते हुए अकेले नैल्को द्वारा किए गए आयात सभी देशों के आयातों की संयुक्त मात्रा एवं देश के बहुत से उत्पादकों की क्षमताओं से अधिकतम है । आयातों की मात्रा प्रोफार्मा IV -ए में अन्तर्विष्ट है । आयातों में और आकस्मिक वृद्धि के परिणामस्वरूप (क) भारत में कास्टिक सोडा के आयातों और (ख) भारत में कास्टिक सोडा की मांग के संबंध में आयातों के शेयर में वास्तविक वृद्धि हुई ।

X. भाग लेने वाली कंपनियों का उत्पादन प्रोफार्मा IV -ए में दिया है । ऐसा देखा जा सकता है कि भाग लेने वाली कंपनियों का उत्पादन जो 2000-01 तक बढ़ा है और अप्रैल-दिसम्बर 2001 में कम हो गया है । इसके अतिरिक्त याचिकाकर्ता यह निवेदन करता है कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति केवल उत्पादन स्तर में हुए परिवर्तन के कारण नहीं है । इससे अधिक महत्वपूर्ण मानदंड है वह मूल्य जिन पर संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा बिक्री के लिए की जा रही ऑफर और वह मूल्य जिस पर घरेलू उद्योग बिक्री के लिए बाध्य हो अथवा संबद्ध देशों से पाटित आयातों के विचार से बिक्री करने के लिए बाध्य हो जाए ।

XI. कास्टिक सोडा के उद्योग ने में देश में बड़े स्तर का रोजगार उपलब्ध कराया है । उद्योग में किसी भी तरह की कमी ने रोजगार को पंगु बना दिया होता ।


- XII. पाटित आयातों के कारण याचिकाकर्ता की बिक्रियों में भारी कमी हुई । नैलको आदेश के समाप्त होने से घरेलू उद्योग के लिए बिक्रियों पर भारी कमी हुई ।
- XIII. भाग लेने वाली कंपनियों की लाभप्रदता प्रोफार्मा ए में दी गई है । ऐसा देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग को बहुत भारी क्षति हो रही है ।
- XIV. अन्य देशों से (जिनमें वे देश शामिल नहीं है जिसपर पहले से पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है अथवा वे देश जिनके तहत जांच जारी है) कास्टिक सोडा के आयात न्यूनतम से कम अथवा उन मूल्य पर किए जाते हैं जो घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंचाते हैं ।
- XV. कास्टिक सोडा की मांग निरन्तर बढ़ रही है । वास्तव में गत पांच वर्षों से मांग में भारी वृद्धि हुई है । घरेलू उद्योग में देश की अपेक्षा को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता है । अतः इस मांग में परिवर्तन होने से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंची है ।
- XVI. संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है । जैसाकि याचिका में भी कहीं पर कहा गया है कि घरेलू उद्योग पिछले कई वर्षों से कास्टिक सोडा का उत्पादन कर रहा है । घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई तकनीक निर्यातक द्वारा अपनाई गई तकनीक के साथ तुलनीय है । विनिर्माण पद्धति में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है । ऐसा निवेदन किया गया है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा मूल्यों को कम करना और अन्य देशों से (जिसे) पहले शुल्क लगाया जा रहा है अथवा जिसके तहत पहले से जांच जारी है) पाटित आयात घरेलू उद्योग को हुई वर्तमान क्षति का कारण है ।

2. आयातकों के विचार

1. मैसर्स नैलको

क. विचाराधीन उत्पाद

1. कास्टिक सोडा सहित उपयोगी उपोत्पादन का विनिर्माण

याचिका  जानबूझ कर यह तथ्य स्पष्ट नहीं किया कि कास्टिक सोडा विनिर्माण की प्रक्रिया से क्लोरीन और हाइड्रोक्लोरिन एसिड का भी विनिर्माण होता है । याचिका में यह माना गया है कि याचिकाकर्ता न केवल कास्टिक सोडा परन्तु क्लोरीन के घरेलू उत्पादकों के हितों को संरक्षित करने में व्यस्त है जिससे यह स्पष्ट होता है कि क्लोरीन के उत्पादन से पर्याप्त आर्थिक लाभ प्राप्त

हुए हैं। याचिका द्वारा प्रस्तुत किए गए विवरणों में न तो दो उत्पादों के बीच बंटी हुई उत्पादन लागत के बारे में और न ही उसमें उल्लिखित क्लोरिन के परिणाम में हुई वसूली के बारे में कुछ स्पष्ट किया गया है। ऐसा निवेदन किया गया है कि क्लोरिन लागत वसूली पर्याप्त है और पाटन एवं क्षति निर्धारण दोनों के संबंध में क्लोरीन उत्पादन की जांच किए बिना कास्टिक सोडा संबंधी कोई भी याचिका पूर्ण नहीं है। यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है जैसाकि घरेलू उद्योग संबंधी विवरण में स्पष्टतया विनिर्देशों दिए गए हैं कि सभी कंपनियां बहु उत्पाद कंपनियां हैं अथवा कास्टिक सोडा उपात्पादकों के उत्पादन में व्यस्त हैं। उत्पादन की लागत संबंधी विविक्षा के अनुवर्ती वर्तमान जवाब में विस्तारपूर्ण विचार किया गया है।

II नैलको वस्तुतः यह विश्वास करता है कि याचिकाकर्ता ने क्लोरीन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए एक याचिका दायर की है। ऐसा पुनः विश्वास किया जाता है कि क्लोरीन के उत्पादन के लिए समस्त उत्पादन लागत को आरोपित करते हुए घरेलू उद्योग ने पाटन और क्षति संबंधी मामला तैयार करने की मांग की है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए ऐसा आदरपूर्वक निवेदन किया जाता है कि माननीय प्राधिकारी पाटनरोधी नियम 1995 के नियम 8 के अंतर्गत अपने सामर्थ्य के अनुसार वर्तमान याचिका में दी गई सूचना की यथार्थता की जांच करने के उद्देश्य से क्लोरीन याचिका के संबंध में शपथ-पत्र पर विज्ञप्ति की मांग करे अथवा याचिकाकर्ता से अन्य ऐसे उचित माध्यमों से जांच करने के लिए कहे। माननीय प्राधिकारी ने आईएसओ प्रोपाइल अल्कोहल, मामला सं० 12/1/2000डीजीएडी के आयात के संबंध में की गई जांच में इसी प्रकार के आश्वासन की मांग की है।

ख. घरेलू उद्योग

- I. याचिका में उल्लिखित घरेलू उत्पादकों का शामिल होना और उनका समर्थन वर्तमान याचिका अर्थात् नैलको निविदा के लिए एकमात्र उत्तरदायी कार्य के संबंध में सच्ची तथ्यपूर्ण तस्वीर नहीं दिखाता है। विवादास्पद नैलको निविदा (निविदा) और नैलको द्वारा पहले दी गई निविदाओं के संबंध में की गई जांच से स्पष्ट होता है कि घरेलू उत्पादकों, के पक्ष में विशेषतः याचिका में समर्थन देने के संबंध में कोई भी कार्य जिम्मेदार नहीं है। मौजूदा याचिका को स्पष्ट रूप से समर्थन देने वाले उद्योगों ने उनकी भौगोलिक स्थिति के

घरण नैलकों की निविदाओं में भाग नहीं लिया । घरेलू उद्योग के सदस्य जिन्होंने निविदा प्रक्रिया में भाग लिया है ने या तो उनके पास निविदा में दी गई मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त माल नहीं है अथवा माल को भिजवाने में असमर्थ है । भौगोलिक समस्याओं का विस्तृत विवरण नीचे दिया गया है ।

- II. एल्युमिना विनिर्माण के लिए नैलको की कारस्टिक सोडा की वार्षिक मांग 100 % एनएओएच आधार या अनुमान: 100,00 डीएचसी है । कारस्टिक सोडा अनुमान: 50 % एनएओएच मात्रा के साथ सज्जीदार पानी के रूप में खरीदा जाता है । इस प्रकार नैलको द्वारा अपेक्षित तरल कारस्टिक सोडा की कुल मात्रा 200,000 एमटी निकाली गई है ।
- III. नैलको को कारस्टिक सोडा आपूरित कराने में यह मुश्किल आता है कि इसका एल्युमिना प्लांट दमानजोड़ी में स्थित है जो अत्यधिक ऊंचाई पर है । अतः रेलवे दमानजोड़ी तक प्रेषण करने के लिए चार पहिया बैगनों को नहीं भेजता है । अतः एयर ब्रेक सिस्टिम वाले 8 पहिया बैगनों द्वारा ही सप्लाई की जाती है । ऐसे बैगनों को रेलवे में अनुपलब्धता के कारण घरेलू उत्पादक किसी भी प्रकार का कारस्टिक सोडा नैलको के रेल द्वारा आपूरित नहीं करा सकता है ।
- IV. कारस्टिक सोडा की विशेष किस्म दी गई है और जैसाकि याचिका में भी माना गया है अर्थात् कारस्टिक सोडा की 50 % एनएओएच बेनिस पर आपूरित मात्रा निविदा के अंतर्गत मांगी गई मात्रा से बुगुनी होगी, हालांकि रोड टैंकरों द्वारा आपूर्ति भी आर्थिक रूप से व्यवहार्य विकल्प नहीं है । रोड टैंकर 5-6 डीएमटी (10-12 तरल एमटी कारस्टिक सोडा) की अनुमानित सीमित मात्रा ले जा सकता है । अतः दमानजोड़ी के निकटवर्ती उद्योग जैसे मैसर्स आंध्र शूगर, मैसर्स रायल सीना (आंध्र प्रदेश में) उड़ीसा में, मैसर्स जयश्री कैमिकल्स सड़क मार्ग द्वारा सामान भेज सकते हैं । हालांकि उपर्युक्त उद्योगों द्वारा भी उपर्युक्त कारणों की वजह से कम मात्रा में आपूर्ति की जाती है ।
- V. एक टैंकर में आपूरित की जाने वाली मात्रा से अधिक मात्रा को सड़क मार्ग द्वारा ले जाना और प्लांट में माल उतारना बहुत कठिन है । एक महीने में 2000 डीएमटी की आपूर्ति करने के लिए 400 टैंकर की आवश्यकता होती है अर्थात् 16-20 टैंकर प्रतिदिन । इस

प्रकार अधिक टैंकरों को स्वीकार करना वास्तव में संभव नहीं है क्योंकि टैंकरों द्वारा सप्लाई किए जाने पर प्रत्येक टैंकरों से सैम्पल इकट्ठे किए जाते हैं और विशिष्टियों की पुष्टि और वजन करने के लिए विश्लेषण किया जाता है। सत्यापन की प्रक्रिया में बहुत समय लगता है और परीक्षण के लिए अतिरिक्त खर्च होते हैं।

- VI. नैलको को मुख्य सप्लाई विज्ञाग पत्तन के माध्यम से की जाती है जहां पर इसका अपना कास्टिक सोडा के स्टोरेज टैंक हैं और जिसमें अनुमान: 30,000 एमटी तरल कास्टिक सोडा स्टोर किया जाता है। नैलको विज्ञाग से दमानजोड़ी तक कास्टिक सोडा ले जाने के लिए अपने रेलवे टैंक बैगन प्रयोग करता है। समुद्रमार्ग द्वारा आपूर्ति करने के लिए केवल दो घरेलू आपूर्तिकर्ता नामतः मैसर्स डीसीडब्ल्यू और मैसर्स स्पिक ने समुद्री मार्ग प्रयोग करने की ऑफर दी थी। ऐसा कहा जाता है कि भारत के पश्चिमी तट के घरेलू विनिर्माताओं जिनमें याचिका का समर्थन करने वाले शामिल हैं, परन्तु उनकी संख्या उन्हीं तक सीमित नहीं है, में से किसी ने भी अधिक भाड़ा घटक के कारण नालकों को समुद्री मार्ग से कास्टिक सोडा की आपूर्ति करने की पेशकश नहीं की है। मैसर्स आईपीसीएल ने एक बार नैलको को इस शर्त पर कास्टिक सोडा बेचने की पेशकश की थी कि नैलको आईपीसीएल प्लांट से कास्टिक सोडा को स्वयं उठवाने का प्रबंध करे जो नैलको को ऊपर उल्लिखित परिवहन में आने वाले भौगोलिक समस्याओं को बताते हुए स्वीकार्य नहीं था। ऐसा पुनः कहा गया है कि पश्चिमी तट के विनिर्माताओं के पास या तो समुद्र मार्ग द्वारा भेजी जाने वाली शिपमेंट की अथवा विज्ञाग तक समुद्री भाड़े की व्यवस्था नहीं है और नैलको को कास्टिक सोडा की आपूर्ति करने के लिए असमर्थ है।

VII. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ता का घरेलू उत्पादकों के समर्थन पाने का वास्तविक प्रयोजन समुचित रूप से सिद्ध है, अर्थात् नैलको को वास्तव में आपूर्ति न करने वाले उद्योगों के जरिए कार्य करना और यह सुनिश्चित करना कि याचिका पर सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, मूल्यांकन और शुल्क की वसूली अथवा अतिरिक्त शुल्क) नियमावली 1995 (पाटनरोधी नियम) के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग की परिभाषा के भीतर आने वाली अपेक्षित संख्याओं की कमी से प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। उक्त नियमों में " घरेलू उद्योग " की परिभाषा निर्धारित की गई है और उसके अंतर्गत यह आवश्यक है कि याचिका दायर करने वाले घरेलू उत्पादकों का सकल घरेलू उत्पादन में अधिक हिस्सा होना चाहिए। हालांकि घरेलू उत्पादकों का घरेलू उत्पादन में अधिक हिस्सा है परन्तु वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में घरेलू उद्योग की परिभाषा को उपखण्ड (ii) के अंतर्गत उक्त नियम के परन्तुक के अनुसार निर्धारित करना होगा जो इस प्रकार है:-

बशर्ते कि नियम 11 के उपनियम (3) में निर्दिष्ट आपवादिक परिस्थितियों में संदर्भाधीन वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग को दो अथवा दो से अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी बाजारों से निर्मित माना जाएगा और इस प्रकार के प्रत्येक बाजार के भीतर उत्पादकों को उत्पादक एक पृथक उद्योग बनेंगे यदि-

(i) बाजार में मांग उद्योग में अन्यत्र स्थित कथित वस्तु के

आपूर्तिकर्ताओं द्वारा आपूर्ति की गयी किसी पर्याप्त मात्रा में नहीं है।

(viii) इसलिए माननीय प्राधिकारी की जांच विगत में अर्थात् 1994-95 से 2001-2002 में नाल्को निविदाओं में वास्तव में भाग लेने वाले घरेलू उत्पादकों तक सीमित होगी। क्षमता उपयोग, उत्पादन की लागत और क्षति निर्धारण विशेष रूप से उपर्युक्त उत्पादकों से मांगा जाएगा। उन अनेक घरेलू उत्पादकों, जिन्होंने ने नालको को आपूर्ति की/ आपूर्ति का प्रस्ताव किया को उनके द्वारा ऑफर की गयी मात्रा के साथ गोपनीय आधार पर सूचीबद्ध करके एक सारणी में उपलब्ध कराया गया है।

ग. समान वस्तु

(i) यह अनुरोध किया गया है कि सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण उस कास्टिक सोडा से सम्बद्ध है जो ठोस कास्टिक सोडा से संबंधित टैरिफ 2815.11 के अंतर्गत आता है और 2815.12 तरल कास्टिक सोडा से संबंधित है। यद्यपि भाग-1, पैरा- 3 के तहत वर्तमान याचिका में याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि भारत में उत्पादित कास्टिक सोडा प्रमुख रूप से मरकरी सैल प्रौद्योगिकी और मेम्ब्रेन सैल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उत्पादित किया जाता है लेकिन इन प्रौद्योगिकियों के ब्यौरे जानबूझ कर इस याचिका में प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। जब कि इन्हीं घरेलू उत्पादकों ने कतर से कास्टिक सोडा के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए पाटनरोधी याचिका दायर करते समय दोनों प्रौद्योगिकियों के तहत विनिर्माण प्रक्रिया निर्धारित की है।

(ii) पूर्ववर्ती याचिका में प्रक्रिया वर्णन को पढ़ने से यह पता चलता है कि कास्टिक सोडा के विनिर्माण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप तीन भिन्न उत्पादों अर्थात् कास्टिक सोडा तरल, क्लोरीन और तरल हाइड्रोक्लोरिक

एसिड का उत्पादन होता है। यहां यह भी उल्लेख किया जा सकता है कि प्रत्येक 1 मी० टन कार्बोनाट सोडा के विनिर्माण से लगभग 0.8 मी० टन क्लोरीन का भी उत्पादन होता है। इस प्रक्रिया से जो कार्बोनाट सोडा उत्पन्न होता है। वह तरल रूप में होता है जिसमें लगभग 47 प्रतिशत - 50 प्रतिशत तक एनएओएच सान्द्रण होता है और शेष जल होता है। इसके पश्चात् ठोस कार्बोनाट सोडा के विनिर्माण के लिए तरल कार्बोनाट सोडा को फ्लैक्स/पल्स के रूप में और प्रसंस्कृत किया जाता है। जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, याचिकाकर्ता ने जानबूझ कर इस तथ्य को प्रकट नहीं किया है कि कार्बोनाट सोडा के विनिर्माण की प्रक्रिया से दो वाणिज्यिक रूप से मूल्यवान सह-उत्पादों अर्थात् क्लोरीन और हाइड्रोक्लोरिक एसिड का उत्पादन होता है। आगे यह उल्लेख किया गया है कि याचिका में ठोस और तरल कार्बोनाट सोडा के उत्पादन की वास्तविक लागत को गुप्त रखने के इरादे से तरल कार्बोनाट सोडा को ठोस कार्बोनाट सोडा में बदलने के लिए शामिल अतिरिक्त प्रक्रिया को प्रकट नहीं किया गया है और याचिकाकर्ता को सबूत प्रस्तुत करने को कहा गया है।

घ) क्षति

(i) याचिका में अनुबंध - 8 में दी गयी स्थापित क्षमता और उत्पादन स्थिति को देखने से यह पता चलता है कि 5 पार्टियों जो नालको की निविदाओं में केवल भागीदार हैं, स्थापित क्षमताओं के लगभग 90 प्रतिशत का उत्पादन कर रही हैं। आगे यह भी देखा जा सकता है कि इन पार्टियों के पास केवल प्रस्तावित मात्राएं हैं जो कि नालको की आवश्यकताओं के 50 प्रतिशत - 60 प्रतिशत औसत की पूर्ति कर सकती हैं और ये घरेलू उत्पादन के मुश्किल से 15 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसलिए जब वे पार्टियां, जो नालको के आयात से प्रभावित हो सकती हैं, अपनी स्थापित क्षमताओं के 90 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन कर रही हैं और नालको द्वारा अपेक्षित मात्रा देने में सक्षम नहीं हैं, तो यह विश्वास करना मुश्किल है कि नालको द्वारा किए गए आयात से इन उद्योगों को कोई वास्तविक क्षति हो सकती है। इसके साथ ही याचिकाओं में अन्य पार्टियों को नालको की निविदाओं में कोई रुचि नहीं है और ये तार्किक समस्याओं के कारण आपूर्ति करने में अक्षम हैं इसलिए

ये नालको के आयातों द्वारा किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं होते हैं । नालको उस समय और अनुरोध प्रस्तुत करने के अपने अधिकार को सुरक्षित रखता है, जब ऐसी सूचना उद्योगों द्वारा प्रस्तुत की जाती है, जैसाकि उल्लेख किया गया है।

(ii) याचिका में कास्टिक सोडा के आयातों के संबंध में अनुबंध-2 में दिए गए आयात संबंधी आंकड़े और जिनके बारे में डीजीसीआई एंड एस की रिपोर्टों पर प्रत्यक्षतः आधारित होने का दावा किया गया है को अस्वीकार किया जाता है क्योंकि ये भ्रामक है और इन्हें संदर्भ से हटकर उद्धर किया गया है । आयात ठोस, फ्लैक्स और तरल को साथ में ध्यान में रखकर किए गए हैं जबकि यह अनुरोध किया गया है कि ये तीन उत्पाद सभी प्रकार से एक दूसरे से पूरी तरह से भिन्न हैं। आगे यह अनुरोध किया गया कि इन उत्पादों के लिए विनिर्माण प्रक्रिया, उत्पादन लागत और बिक्री कीमत भिन्न है । इसके अलावा इन उत्पादों के अंतः प्रयोक्ता भी अलग हैं । इसलिए इन सभी उत्पादों पर पाटनरोधी शुल्क के निर्धारण के प्रयोजन से एक ही शीर्ष के तहत रखकर विचार करना न केवल भ्रामक है बल्कि एक मिथ्या निरूपण भी है । यह उल्लेख किया गया है कि नालको केवल तरल कास्टिक सोडा का आयात कर रहा है । उपर्युक्त के आलोक में यह अनुरोध किया गया है कि इनमें से प्रत्येक उत्पाद पर अलग से विचार किया जाना चाहिए । इस प्रकार उनके संबंधित आयात प्रभाव, कीमतों और पाटन मार्जिन का भी अलग से निर्धारण किया जाना चाहिए । आगे यह भी अनुरोध किया गया है कि ठोस और तरल कास्टिक सोडा के विभिन्न उपयोग, कीमत, उपभोक्ता अवधारणा और टैरिफ वर्गीकरण होते हैं और इसे पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 2 (घ) के तहत समान वस्तु के रूप में नहीं माना जाना चाहिए ।

(iii) अंतर्राष्ट्रीय कीमत, जैसाकि कलोर-अल्कली रिपोर्ट से देखा जा सकता है, जिस पर याचिका ने भी भरोसा दिखाया है, इन उत्पादों अर्थात् ठोस एवं तरल कास्टिक सोडा की कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव दिखाई देता है । उदाहरण के लिए यूएसए में अप्रैल, 2001 के माह के लिए तरल कास्टिक सोडा की कीमत एफओबी यूएस पत्तन आधार पर 300-325 अमरीकी डालर के बीच दिखाई देती है, क्लोरीन की कीमत स्पॉट बाजार

के तहत 0-40 अमरीकी डालर के बीच थी । यद्यपि, यदि कीमत स्थिति मार्च, 2002 के माह अर्थात् जांच अवधि के अंत तक देखी जाती है तो यह दर्शाती है कि अमरीकी स्पॉट बाजार में तरल कास्टिक सोडा की कीमत एफओबी यू एस पत्तन आधार पर 50-75 अमरीकी डालर प्रति डीएमटी थी जबकि क्लोरीन स्पॉट कीमत 80-100 अमरीकी डालर थी । इसी प्रकार यूरोप बाजार में अप्रैल, 2001 में कास्टिक सोडा कीमत 325-355 अमरीकी डालर प्रति डीएमटी एफओबी के बीच थी, उस समय कास्टिक सोडा फ्लैक्स /पल्स कीमत 350-370 अमरीकी डालर प्रति मी0टन एफओबी थी । जबकि मार्च, 2002 में तरल कास्टिक सोडा कीमत यूरोप के बाजार में 90-110 अमरीकी डालर थी जबकि फ्लैक्स/पल्स कीमत 260-290 अमरीकी डालर प्रति मी0टन थी ।

(iv) उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि ठोस कास्टिक सोडा कीमतों के साथ तरल कास्टिक सोडा की कीमतों के बीच कोई तुलना नहीं हो सकती है । तरल कास्टिक सोडा में भी मरकरी प्रक्रिया और डाईफ्रेम प्रक्रिया के बीच कीमत में परिवर्तन हुआ और सभी कीमतों पर एक साथ विचार करके किसी निर्णय पर पहुंचना पूरी तरह भ्रामक होगा । उपर्युक्त अंतर्राष्ट्रीय कीमत प्रवृत्तियां दर्शाती हैं कि जब कास्टिक सोडा से हुई वसूली अधिक है तब उत्पादक कास्टिक सोडा की मांग को पूरा करने के लिए कम कीमत पर क्लोरीन की आपूर्ति करने के इच्छुक हैं । इसी प्रकार जब क्लोरीन की मांग होती है तब स्थिति इसके विपरीत होती है । क्लोरीन की कीमत 300 अमरीकी डालर प्रति मी0टन तक अधिक हो सकती है और ऐसे समय में कास्टिक सोडा की आपूर्ति कम दर पर की जा सकती है । अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ऐसा नियमित आधार पर होता है चूंकि उत्पादक कास्टिक सोडा, क्लोरीन और हाइड्रोक्लोरिक एसिड से और किसी एक उत्पाद से पूर्ण वसूली में इच्छुक होता है ।

इन वाणिज्यिक रूप से मूल्यवान उत्पादों के बीच उपर्युक्त संबंध के मद्देनजर पाटन रोधी शुल्क निर्धारण केवल तभी किया जा सकता है जब इन सभी उत्पादों की कीमतों पर यह निर्धारित करने के लिए विचार किया जाता है कि क्या पाटन हो रहा है और इसके कारण एक बाजार में क्षति हो रही है । इस जांच के बिना यह सारी प्रक्रिया कास्टिक सोडा

बाजार की एक अपूर्ण व्याख्या को बढ़ावा देगी, जिसके परिणामस्वरूप भ्रामक और अपूर्ण निष्कर्ष निकलेंगे ।

(v) यह अनुरोध किया गया कि एक देशीय उत्पादक, जिसने निविदा में भाग लिया, मै0 डी0सी0 डब्ल्यू ने, जो कि याचिका का भी एक हिस्सा है, प्रति डीएमटी की कारखानागत कीमत दी है । नवम्बर, 9, 2001 में प्रचलित विनिमय दर अर्थात् बिल बिक्री दर 1 अमरीकी डालर = 48.38 रुपए थी । इस प्रकार देशज दी गयी कारखाना गत कीमत *** अमरीकी डालर थी । इसके विपरीत 35 प्रतिशत की सीमाशुल्क दर पर विचार करके आयातित पहुंच कीमत लगभग *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी बनती है । इस प्रकार, आयातित पहुंच कीमत घरेलू बाजार में प्रचलित कार्बोनेट सोडा की प्रस्तावित कारखानागत कीमत से काफी अधिक थी। ऊपर उल्लिखित तार्किक समस्याओं और आपूर्ति के लिए भाड़े के ऊंचे घटकों के कारण घरेलू प्रस्ताव प्रतिस्पर्धी नहीं था ।

(vi) यह अनुरोध किया गया है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग सितम्बर, 2001 में लगभग *** रु0 प्रति मी0टन की कारखानागत कीमत पर क्लोरीन की बिक्री कर रहा था । इस प्रकार, भारतीय विनिर्माताओं की कुल वसूली कार्बोनेट सोडा और क्लोरीन दोनों के साथ *** रु0 प्रति मी.टन बनती है, जो कि कार्बोनेट सोडा, क्लोरीन दोनों के उत्पादन की लागत से काफी अधिक है । उपर्युक्त से पर्याप्त रूप से यह दर्शाया गया है कि घरेलू उद्योग ने मौजूदा याचिका मात्र उच्च लाभ मार्जिन की इच्छा से प्रेरित होकर दायर की है जिसके कारण वे विदेशी पार्टियों को व्यवसाय नहीं कर पा रहे थे । इसलिए यह उल्लेख करना सही नहीं होगा कि अंतर्राष्ट्रीय पार्टियां उस सामान्य मूल्य से काफी कम पर आपूर्ति कर रही हैं जैसा कि आरोप लगाया जा रहा है ।

(vii) दि अल्कली एसोसिएशन, एसोसिएशन ऑफ इंडियन मैनुफैक्चरर्स ऑफ कार्बोनेट सोडा एंड क्लोरीन का प्रतिनिधित्व करती है । इन विनिर्माताओं में अधिकतर के पास बहु-उत्पाद संयंत्र हैं और क्लोरीन का कुछ भाग और कुल मामलों में 100 प्रतिशत क्लोरीन का उपयोग उनके द्वारा मूल्य वर्धित उत्पादों के विनिर्माण के लिए किया जाता है और उन्हें क्लोरीन को बेचने से काफी अधिक मार्जिन प्राप्त होता है। उनके लिए

कास्टिक सोडा केवल एक सह-उत्पाद है। अल्कली विनिर्माताओं द्वारा दायर पाटनरोधी याचिका का एकमात्र उद्देश्य देश में कास्टिक सोडा की देशज कीमत में वृद्धि करना है। अल्कली मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन के जरिए इन विनिर्माता ने कास्टिक सोडा की कीमत को उस स्तर पर रखने की योजना बनाई है जो कि पाटनरोधी शुल्क के साथ कास्टिक सोडा की आयातित कीमत से कुछ कम हों। यहां यह उल्लेख किया जा सकता है कि उन देशों में से, जो कि भारत को कास्टिक सोडा का निर्यात करने में सक्षम हैं, इन अल्कली मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा दायर याचिका के कारण और देशों जिन पर पाटन का आरोप है की गैर भागीदारी के कारण पाटनरोधी शुल्क 5 देशों अर्थात् अमरीका, फ्रांस, सऊदी अरब, ईरान और जापान के संबंध में लगाई गई हैं। अनन्तिम रूप से पाटनरोधी शुल्क कतर से हुए आयातों पर भी लगाया गया है। कोरिया और चीन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के साथ ही विश्व के निर्यातक देशों, जो कि कास्टिक सोडा का निर्यात कर सकते हैं, का लगभग 90% इसमें शामिल हो जाएगा। यह देखा जा सकता है कि मार्च, 2002 में जब सम्पूर्ण विश्व *** अमरीकी डालर एफओबी की प्रचलित बाजार कीमत पर कास्टिक सोडा खरीद सकता है और विश्व के अधिकांश देशों से *** अमरीकी डालर के औसत भाड़े पर विचार करके भारत की पहुंच कीमत *** अमरीकी डालर सी आई एफ रही होती। इसके विरुद्ध तब लागू 35% के सीमाशुल्क के साथ पहुंच कीमत *** अमरीकी डालर बनती है। इसके विरुद्ध माननीय प्राधिकारी को *** अमरीकी डालर के रूप में पहुंच कीमत पर विचार करना चाहिए जो कि अब लागू पाटनरोधी शुल्क को ध्यान में रखकर निकाली जा सकती है। सामान्य अंतर्राष्ट्रीय कीमत की तुलना में अतिरिक्त अंतर्वृद्धि प्रति मी०टन 48.38 रुपए की विनिमय दर के साथ लगभग *** अमरीकी डालर प्रति मी०टन बनती है यह *** रु० प्रति मी०टन बनती है। नालको की 100,000 डीएमटी की आवश्यकता के लिए अतिरिक्त अंतर्वृद्धि *** रु० होगी। जब विश्व में कोई एल्यूमिनियम विनिर्माता भारत में पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी की कीमत पर खरीद कर सकता है तब नालको को *** अमरीकी डालर पर क्रय करने को बाधित होना पड़ेगा। यह केवल भारतीय एल्यूमिनियम उद्योग को गैर-प्रतिस्पर्धी बनाएगा और एल्यूमिनियम की देशज कीमत में वृद्धि को बढ़ावा देगा, जिसके परिणामस्वरूप एल्यूमिनियम का आयात होगा। दि इंडियन

अल्कली इंडस्ट्रीज जो पहले ही लगभग पूरी क्षमता के अनुसार उत्पादन कर रहे हैं और उनके उत्पादन से उनका लाभ मार्जिन बढ़ रहा है, लेकिन उपर्युक्त के बावजूद वे पाटनरोधी शुल्क लगाकर और लाभ कमाना चाहते हैं जो कि डब्ल्यू टी ओ के प्रति भारत की वचनबद्धता के उद्देश्य और भावना के विरुद्ध है। देशज उद्योगों को कोई क्षति नहीं हुई है और इसके विपरीत यह पाटनरोधी शुल्क देशीय विनिर्माताओं की एक साथ मिल जाने की इच्छा से प्रेरित है जिससे वे कार्बोनेट सोडा की कीमत में अपने उत्पादन की लागत से अधिक वृद्धि कर सकें और अधिक प्रतिस्पर्धी लाभ कमा सकें। निर्दिष्ट प्राधिकारी को अल्कली एसोसिएशन की इस योजना को देखना चाहिए और गलत बयानी तथ्यों को छिपाकर गलत तथ्यों को प्रस्तुत करने के मद्देनजर उनकी याचिका को खारिज करना चाहिए।

घ पाटन

1. यह उल्लेख करना गलत होगा कि विश्व में सभी देश भारतीय बाजार में कार्बोनेट सोडा का पाटन कर रहे हैं। क्लोर-अल्कली रिपोर्ट, जिसके आधार पर याचिकाकर्ता ने चीन और कोरिया जैसे देशों में इस उत्पाद का सामान्य मूल्य स्थापित करने का प्रयास किया है, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमत सारांश के मासिक आधार पर ब्यौरे देती है। जांच अवधि अर्थात् अप्रैल, 2001 - मार्च, 2002 के लिए कीमत सारांश रिपोर्ट की प्रतियां यहां प्रस्तुत की गई हैं और उन्हें अनुबंध ग के रूप में चिन्हित किया गया है। रिपोर्ट का अवलोकन यह दर्शाता है कि तरल कार्बोनेट सोडा की कीमतें अप्रैल, 2001 में एफओबी आधार पर प्रति डीएमटी संयुक्त राज्य अमरीका में *** अमरीकी डालर, पश्चिमी यूरोप में *** अमरीकी डालर, पूर्वी यूरोप में *** अमरीकी डालर के बराबर थी। उस समय सुदूर पूर्व में निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी के बराबर थी। वर्ष के दौरान कार्बोनेट सोडा की कीमत में धीरे-धीरे गिरावट आने लगी, और मार्च, 2002 तक अमरीका में कार्बोनेट सोडा की कीमत एफओबी आधार पर पश्चिमी यूरोप में *** अमरीकी डालर, पूर्वी यूरोप में *** अमरीकी डालर, सुदूर पूर्व में *** अमरीकी डालर से *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी तक कम हो गयी। सम्पूर्ण विश्व में इस उत्पाद के लिए कीमत में परिवर्तन के स्वरूप के कारण यदि किसी विशेष

देश में अप्रैल, 2001 में घरेलू कीमत पर विचार किया जाता है तो यह कास्टिक सोडा के उच्च मूल्य को प्रदर्शित करेगा जबकि यही बाजार कीमत मार्च, 2002 में प्रबल रूप से भिन्न होगी। चूंकि एक वर्ष की अवधि में इस उत्पाद के लिए परिवर्तन 500%—600% के दायरे में है किसी विशेष अवधि में याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए आंकड़ों पर विश्वास करना ठीक नहीं होगा जिन पर केवल सामान्य मूल्य के निर्धारण में विचार किया गया है। यह समझा जाता है कि अप्रैल, 2001 में अमरीका में सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर है यही सामान्य मूल्य मार्च, 2002 में *** अमरीकी डालर हो गया। इसलिए यह पता करने के लिए कि क्या कोई पाटन हुआ है अथवा नहीं, उस बिन्दु तक पहुंचना होगा जब आयात के लिए निविदाओं को अन्तिम रूप दिया गया था और उस समय उन देशों में प्रचलित कीमतें क्या थी। इसकी आवश्यकता इसलिए है क्योंकि कीमतों में परिवर्तन न केवल माह से माह के आधार पर होता है बल्कि यह काफी प्रबल रूप से भी होता है। इसलिए याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए पृथक आंकड़ों के आधार पर निकाला गया कोई निष्कर्ष गलत होगा और यह सच्चे कास्टिक सोडा बाजार को प्रदर्शित नहीं करेगा।

यह आरोप कि मैम्ब्रेन/मरकरी ग्रेड के लिए *** अमरीकी डालर और डाइप्रेम ग्रेड के लिए *** अमरीकी डालर की कीमत पर दिया गया 88,000 डीएमटी का नालको का आयात आर्डर सामान्य मूल्य से कम पर आयात किया जा रहा है और इसलिए इसका भारतीय बाजार में पाटन किया जा रहा है क्या झूठा और भ्रामक होने के कारण नकार दिया गया है। नालको ने अपनी वार्षिक आवश्यकता के लिए बेसिक प्रेस निविदाएं आमंत्रित की और पार्टियों ने 28 सितम्बर, 2001 को निविदाएं प्रस्तुत की। वाणिज्यिक मुद्दों का स्पष्टीकरण दिया गया था और इसके पश्चात् कीमतें खोली गयी थीं। कीमत बिड 9 नवम्बर, 2001 को खोली गयी थी। याचिका में दिए गए कीमत संबंधी सारांश से यह देखा जा सकता है कि निविदा में कोरिया, चीन, रोमानिया, कतर, ईरान की पार्टियों द्वारा दी गयी सीआईएफ, विशाखापत्तनम् कीमत *** अमरीकी डालर की सीमा में थी। यह माना जाता है कि चूंकि यह निविदा सितम्बर, 2001 में प्रस्तुत की गयी थी इसलिए सितम्बर में प्रचलित कास्टिक सोडा की अंतर्राष्ट्रीय कीमत अनिवार्य है क्योंकि निविदा में भाग लेने वाली पार्टियां प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करती हैं और कीमत प्रवृत्ति को

मानकर निविदा में उद्धृत करती हैं। तार्किक कारणों से भाड़ा कारक को देखते हुए सुदूर पूर्व से प्राप्त प्रस्ताव अधिक प्रतिस्पर्धी है। सितम्बर, 2001 की क्लोर-अल्कली रिपोर्ट से यह देखा जा सकता है कि सुदूर पूर्व में कीमतें एफओबी आधार पर *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी की सीमा में हैं, जो यह दर्शाते हैं कि सुदूर पूर्व से हुए निर्यातों के लिए सी आइ एफ भारतीय पत्तन पर उपलब्ध अंतर्राष्ट्रीय बाजार कीमत *** अमरीकी डालर प्रति डीएमटी बनती है। इसके अलावा उस अवधि के दौरान तरल कार्बोनेट सोडा के लिए कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति थी जबकि क्लोरीन की कीमतें अधिक होनी शुरू हो गयी। इस पर विचार करते हुए नालको की निविदा में कीमत निर्धारण पूरी तरह प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमत के अनुसार है और इसलिए सामान्य बाजार कीमत से कम कीमत पर विचार नहीं किया जा सकता।

2. मै0 ग्रासिम

(i) मै0 ग्रासिम ने अनुरोध किया है कि उन्होंने अभी तक किसी देश से कार्बोनेट सोडा का आयात नहीं किया है बल्कि भारतीय विनिर्माताओं से कार्बोनेट सोडा खरीदा है।

3. मै0 ट्रांसपेक इंडस्ट्रीज लिमिटेड

क. क्षति एवं अन्य मुद्दे

(i) हम आपको सूचित करना चाहेंगे कि हम अपने विनिर्माण कार्य कलापों में कार्बोनेट सोडा का उपयोग नहीं करते हैं। तथापि, हम भारतीय बाजार में कार्बोनेट सोडा के पाटन के अपरोक्ष प्रभाव को प्रस्तुत करना चाहेंगे।

(ii) हम क्लोरीन का विशाल मात्रा में उपयोग करते हैं। क्लोरीन का विनिर्माण जीएसीएल जैसे संयंत्र द्वारा किया जाता है तथा यह कास्टिक सोडा के साथ एक सह-उत्पाद है।

(iii) चीन तथा कोरिया में विनिर्माताओं द्वारा कास्टिक सोडा के पाटन के परिणामस्वरूप कास्टिक सोडा तथा क्लोरीन के विनिर्माताओं को प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए उन्हें कास्टिक सोडा के अपनी कीमतों को घटाना होगा। कास्टिक सोडा के निर्वर्तन में उनके द्वारा उठाए गए घाटों की प्रतिपूर्ति उन्हें उसी के अनुरूप क्लोरीन की कीमत बढ़ाकर करनी होगी।

(iv) जैसाकि ऊपर बताया गया है, हम क्लोरीन की उच्च कीमत का भुगतान करने को बाध्य होंगे जिसका हमारे द्वारा विशाल मात्राओं में उपयोग किया जाता है। वस्तुतः क्लोरीन की कीमत का जनवरी में रुपये 4750/-प्रति टन से बढ़ाकर जून, 2002 में रुपये-9350/-प्रति टन संशोधित किया गया है।

(v) यह भी अवलोकन किया जाएगा कि इसी अनुरूप कास्टिक सोडा की कीमत जनवरी, 2002 में 12810/-रुपए प्रति टन से घटकर जून, 2002 में रुपये 8960/- प्रति टन हो गई है। कुछ उत्पाद जैसे थाईओनाइल क्लोराइड जिसके क्लोरीन प्रयुक्त होता है, हमारे द्वारा निर्यात किए जा रहे हैं। इन निर्यातों के प्रभावित होने की संभावना है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में हमारे उत्पाद की कीमतें प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होंगी।

(vi) हम इसलिए आपके द्वारा कास्टिक सोडा पर पाटनरोधी शुल्क लगाकर लिए गए उपर्युक्त कदम की सख्ती से वकालत करते हैं, जो कास्टिक तथा क्लोरीन की लागतों को प्राकृतिक स्तर तक स्थिर बनाने में मदद देगा और इस प्रकार-गुजरात स्थित क्लोरीन आधारित उद्योगों को सहायता मिलेगी।

4. मै0 दीपक नाइट्राइट लि0, नन्देसरी

(क) क्षति एवं अन्य मुद्दे

(i) हम अपने उत्पाद, सोडियम नाइट्राइट के विनिर्माण में कास्टिक सोडा लाई का उपयोग करते हैं। हम भारत में इस सामग्री के मुख्य उत्पादक हैं तथा अपने उत्पादन का करीब 10-15% का निर्यात भी करते हैं।

(ii) कास्टिक सोडा आधारभूत संघटकों में से एक है जिसका प्रायः सभी रासायनिक उद्योगों द्वारा उपयोग किया जाता है, और इसलिए ऐसी कोई कार्यवाही जिससे इसकी कीमत वृद्धि हो सकती है, का रासायनो की कीमत तथा प्रतिस्पर्धात्मकता क्षेत्र पर प्रपाती प्रभाव होगा। इससे विदेश की विशिष्ट सामग्री की तुलना में भारतीय अंतिम प्रयोक्ता उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो जाएगी।

(iii) कास्टिक सोडा का विनिर्माण साथ-साथ क्लोरीन, हाइड्रोक्लोरिक एसिड तथा हाइड्रोजन का उत्पादन करता है। क्लोरो-अलकली उद्योग की समग्र प्रतिस्पर्धात्मकता इस विशाल उत्पादों की संतुलित मांग की उपलब्धता तथा क्लोरीन और हाइड्रोजन के भंडारण की परिसीमाओं पर निर्भर करता है। समग्र-औद्योगिकीय वृद्धि पर निर्भर रहते हुए, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की भिन्न-भिन्न मांग पद्धति है और इसलिए कास्टिक सोडा लाई की कीमत वसूली को निर्धारक कारक के रूप में विचार नहीं किया जाना चाहिए। बल्कि निर्यातक देश में समस्त उत्पादों अर्थात् मुख्य उत्पाद एवं सह-उत्पादों की समग्र कीमत की जांच की जानी चाहिए कि निर्यातक ने भारत में सामग्री का पाटन किया है।

(iv) याचिकाकर्ता ने बिक्री कीमत अर्थात् निर्यात कीमत के आधार पर कोरिया आरपी में संबंध वस्तुओं के सामान्य मूल्य का दावा किया है। तथापि, यह काल्पनिक प्रतीत होता है क्योंकि हमारी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार कोरिया से भारत में कास्टिक सोडा लाई का नगण्य आयात होता है।

चीन के सामान्य मूल्य की घोषणा करने के समय, प्राधिकारी ने सिर्फ कास्टिक सोडा लाई की कीमत पर विचार किया है तथा अन्य उत्पादों जैसे क्लोरीन, हाइड्रोक्लोरिक एसिड तथा हाइड्रोजन की कीमतों पर विचार नहीं किया गया है, जैसाकि प्रतीत होता है।

(v) याचिकाकर्ताओं ने डीजीसीआई एंड एस आकड़ों के अनुसार सीआईएफ कीमत को इंगित किया है जिसमें उन्होंने नालको द्वारा जारी निविदाओं को निर्दिष्ट किया है। नालको देश में कास्टिक सोडा लाई का सबसे बड़ा उपभोक्ता है और उनके द्वारा प्राप्त निविदा कीमत को इस गोजनार्थ संदर्भ कीमत के रूप में विचार नहीं किया जा सकता है।

(vi) कास्टिक सोडा लाई तथा इसके सह-उत्पादों के विनिर्माण में घटकों का मुख्य लागत विद्युत लागत है। जांच के अधीन देशों में अधिकतर देशों में बहुत ही कम विद्युत लागत अर्थात् भारतीय लागत का करीब $1/3$ से $1/5$ है, जिससे वे उत्पाद को घरेलू विनिर्माताओं की तुलना में कम कीमत पर बेचने में समर्थ हैं।

(vii) भारत में क्षमता स्थापित भारतीय मांग की तुलना में काफी अधिक है, जिसके कारण इसका उपयोग होता है। यह नोट किया जाना चाहिए कि आयातों की प्रतिशतता नगण्य है और वस्तु पिछले तीन वर्षों में घट रही है। आयातित उत्पाद की कीमत में गिरावट नहीं आ रही है, बल्कि अधिक अथवा कम स्थिर है। यह नोट किया जाना चाहिए कि कास्टिक सोडा लाई का विभिन्न देशों अर्थात् यूरोपीय महाद्वीप, अमेरिका और एशिया से आयात किया जा रहा है। इस प्रकार भारत को निर्यात किए गए कास्टिक सोडा लाई की कीमत स्तर विशाल संयंत्रों, सस्ते विद्युत एवं अन्य कच्चे माल तथा समस्त उत्पादों के लिए मैचिंग मांग पद्धति द्वारा समर्थित पैमाने की

मितव्ययता पर आधारित विदेश में कास्टिक सोडा लाई उद्योग की समग्र प्रतिस्पर्धात्मकता का प्रतिबिम्ब है ।

(viii) इन परिस्थितियों के तहत, हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से पाटन के स्वरूप, यदि कोई हो, निश्चित करते समय, समग्र संदर्भ में मुद्दे की जांच का अनुरोध करते हैं ।

3. निर्यातकों के विचार

1. मै0 ट्रिकन इनर्जी लि0, यूएसए

क. याचिकाकर्ता की स्थिति

(i) याचिकाकर्ता दावा करते हैं कि याचिका मै0 अल्कालाइन मैन्यूफैक्चरस एसोसिएशन आफ इंडिया द्वारा दायर की जा रही है । याचिका में इसके अतिरिक्त क्षति विश्लेषण हेतु "भागीदार कम्पनियों" के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं ।

(ii) यह सविनय अनुरोध है कि यह भारत में पाटनरोधी नियम तथा प्रक्रिया के विपरीत है । सभी समर्थक याचिकाकर्ताओं को इस कार्यवाही हेतु पूर्ण तथा पूरे आंकड़े अवश्य उपलब्ध कराने चाहिए । स्पष्ट रूप से भागीदार कम्पनियों के आंकड़े समग्र रूप से उद्योग के क्षति का आधार नहीं हो सकता है । वस्तुतः यह मामला सही हो सकता है कि गैर-भागीदार कम्पनियों के आंकड़े इंगित करते हों कि कोई क्षति नहीं हुई ।

(ख) विचाराधीन उत्पाद

विचाराधीन उत्पाद जैसाकि याचिकाकर्ताओं द्वारा परिभाषित किया गया है । "सोडियम हाइड्रोक्साइड" है जो सामान्यतया कास्टिक सोडा के रूप में जाना जाता है । कास्टिक सोडा रासायनिक रूप से एनएओएच के रूप में जाना जाता है । यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के तहत वर्गीकृत एक कार्बनिक रासायन है । कास्टिक सोडा का उत्पादन दो रूप - लाई और सोलिडस में किया जाता है । सॉलिडस का प्रयोगफ्लेक्स, प्रिल्स, ग्रैनयोल्स अथवा कोई अन्य रूप में किया जा सकता है । सभी प्रकार के कास्टिक साडा वर्तमान याचिका के विषय वस्तु हैं ।

(i) यह प्रस्तुत किया गया है कि याचिकाकर्ता गलती से आगे बढ़ गए हैं और लाई तथा सॉलिडस दोनों के लिए सिर्फ एक सामान्य मूल्य तैयार किए हैं, जो स्पष्ट रूप से भारत में पाटनरोधी नियमों के तहत सीआईए/टीए जैसे दो रूपों में अनुज्ञेय नहीं है । वैश्विक रूप से क्लोर-अल्कली उद्योग क्लोरीन की मांग आपूर्ति द्वारा सांचालित किए जा रहे हैं, जबकि भारत में ऐसा नहीं है और इसलिए वैश्विक रूप से, कास्टिक सोडा को सह-उत्पाद के रूप में विचार किया जाता है । क्लोरीन की मांग कास्टिक की मांग से अधिक है और कई बार प्रक्रिया में उत्पादित कास्टिक का हिस्सा बेकार कर दिया जाता है ।

(ii) यह तथ्य में दिखाया गया है कि कास्टिक सोडा के 42 घरेलू उत्पादकों में से सिर्फ 4 उत्पादकों ने नालको निविदा में हिस्सा लिया है। इसके अतिरिक्त यह विचारणीय है कि इन चार उत्पादकों में से किसी को भी विश्व निविदा में कोई मात्रा प्रदान नहीं की गई, जिसका कारण प्रथम दृष्टया स्पष्ट नहीं हैं।

(iii) कास्टिक सोडा घोल विद्युत-अपघटनी द्वारा तीन प्रौद्योगिकियों मरकरी सेल्स, मेम्ब्रेन्स सेल्स तथा डाइफ्रैगम सेल्स द्वारा क्लोरीन के सह-उत्पाद के रूप में तैयार किया जाता है। इन सभी प्रक्रियाओं में एनएसीएल नमक का प्राथमिक कच्चे माल के रूप में उपयोग होता है। नमक को विद्युत अपटन द्वारा सीधी करेंट (डी.सी.) विद्युत का प्रयोग करते हुए विखंडित किया जाता है, परिणाम स्वरूप क्लोरीन तथा उपलब्ध सोडियम ऑयन (एनए +) तैयार होता है जिसे कास्टिक सोडा तथा सह-उत्पाद हाइड्रोजन बनाने के लिए सेल में जल के साथ रिएक्ट कराया जाता है। उत्पादित हाइड्रोजन सह-उत्पाद का इंधन स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाता है, हाइड्रोजन ग्राहकों को बेचा जाता है, अथवा उच्च शुद्धता (बर्नर ग्रेड) हाइड्रोक्लोरिक एसिड का उत्पादन किया जाता है। चौथी प्रौद्योगिकी जो वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध कास्टिक सोडा घोल का उत्पादन करती है, ट्रॉन ओर का रासायनिक रूपान्तरण है। इस प्रक्रिया से निम्न गुणता वाले कास्टिक सोडा का उत्पादन किया जाता है।

(iv) मरकरी सेल परिचालन में इलेक्ट्रोलिटिक प्रतिक्रिया तथा सोडियम एमैलगम हेतु मरकरी का कैथोड के रूप में प्रयोग किया जाता है जिसे कास्टिक सोडा घोल का उत्पादन करने हेतु डी आयोनाइज्ड जल के साथ रिएक्ट कराया जाता है। प्रक्रिया में आवश्यक रूप से मरकरी की कोई गीली खपत नहीं होती है, क्योंकि सेल के नीचले भाग के आर-पार तथा सेल डिकम्पोजर के माध्यम से मरकरी के प्रवाह के संबंध में सारे सेल "क्लोज्ड लूप" होते हैं, जहां एमैलगम को कास्टिक सोडा घोल के साथ रिएक्ट कराया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा तैयार घोल, सेल से बिना कोई अतिरिक्त वाष्पीकरण के तैयार एनएओएच के भार का 50-52% होता है। इस प्रक्रिया से वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध उच्च शुद्धता वाले कास्टिक सोडा का उत्पादन किया जाता है।

उच्च शुद्धता वाली विशेषता उत्पाद में संदूषकों के बहुत कम सांद्रण का वर्णात्मक है। नमक, अथवा NaCl विशिष्ट रूप से 30 पीपीएम के अधिकतम के साथ 10 पीपीएम से कम होता है। सोडियम क्लोरेट्स, अथवा NaClO₃ 1 पीपीएम की अधिकतम सीमा के साथ विशिष्ट रूप से 0.5 पीपीएम होते हैं। सोडियम कार्बोनेट अथवा Na₂CO₃ 0.06 भार % की अधिकतम सीमा के साथ विशिष्ट रूप से 0.02 भार % होते हैं, सोडियम सल्फेट अथवा Na₂SO₄ 20 पीपीएम अधिकतम के साथ विशिष्ट रूप से 10 पीपीएम होते हैं।

मरकरी सेल उत्पादित कास्टिक सोडा को विशिष्ट रूप से मरकरी सेल ग्रेड, कहा जाता है, अथवा इससे अधिक सामान्त्या रेयन ग्रेड कहा जाता है। रेयन फाइबर के अधिकांश उत्पाद उच्च शुद्धता वाले रेयन ग्रेड कास्टिक सोडा घोल की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं। उच्च शुद्धता वाले कास्टिक घोल का दूसरा बहुत ही सामान्य प्रयोग घरेलू उद्योग जल एक्सचेंजर्स के लिए होता है।

घरेलू उद्योग इकाई रेसिन साहित्य ने सिर्फ पुनः उत्पादन हेतु रेयन कास्टिक सोडा का उल्लेख किया है। यह स्मरणीय है कि इस साहित्य को मेम्ब्रेन्स सेल उत्पादित घोल की उपलब्धता से पहले प्रकाशित किया गया था।

(v) डायफ्रैगम सेल प्रक्रिया में सह-उत्पाद कास्टिक सोडा तथा क्लोरीन को अलग करने के लिए एस्वेस्टस अथवा एस्वेस्टस के अन्य प्रतिस्थापन का इस्तेमाल किया जाता है। 50% कास्टिक सोडा का उत्पादन प्राथमिक रूप से इलैक्ट्रोलाइटिक सेल के बाहर होता है। डायफ्रैगम सेल एक बहुत ही कमजोर सेल लिफ्टर का उत्पादन करता है जिसमें NaOH भार का 12-14% होता है तथा काम चलाऊ तौर पर वही NaCl नमक सांद्रण। बाद में सेल लिफ्टर को तीन अथवा चार प्रभाव वाले वाष्पीकरण प्रक्रिया में NaOH भार का (49-52% सीमा) के 50% का सांद्रण अंतिम अल्प सांद्रण के लिए वाष्पीकृत किया जाता है। अतिरिक्त नमक का अनुवर्ती रियूज/रिसाइकल हेतु वाष्पीकरण प्रक्रिया के माध्यम से अवक्षेपित तथा फिल्टर किया जाता है। प्रक्रिया से निम्न गुणवत्ता वाले इलैक्ट्रोकेमिकल कास्टिक सोडा घोल तैयार किया जाता है।

डायफ्रैगम सेल उत्पादित कास्टिक घोल के संबंध में गुणवत्ता के विचार करने के लिए अपेक्षाकृत उच्च नमक, क्लोरेट्स, कार्बोनेट्स तथा सल्फेट्स को शामिल किया जाता है। नमक जैसे NaCl सांद्रण विशिष्ट रूप से उत्पादक पर निर्भर रहते हुए 1.1 से 1.3 भार % की अधिकतम सीमा के साथ 1.0% होता है। सोडियम क्लोरेट्स विशिष्ट रूप से 0.3 भार % के अधिकतम के साथ 0.15 भार % होते हैं। सोडियम कार्बोनेट्स विशिष्ट रूप से 0.2 भार % के अधिकतम के साथ 0.1 भार % होते हैं। सोडियम सल्फेट्स विशिष्ट रूप से 0.02 भार % के अधिकतम के साथ 0.01 भार % होते हैं।

डायफ्रैगम सेल उत्पादित कास्टिक सोडा को प्रायः डायफ्रैगम सेल ग्रेड के रूप में जाना जाता है। यह वाणिज्यिक ग्रेड भी कहलाता है। तकनीकी ग्रेड, और कभी-कभी तकनीकी डायफ्रैगम अथवा अन्य समान सम्मिश्रण

डायफ्रैगम सेल प्रक्रिया द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा का एक अतिरिक्त ग्रेड शोधित ग्रेड होता है। शोधित ग्रेड के उत्पादन में नमक सांद्रण को कम करने के लिए डायफ्रैगम ग्रेड कास्टिक सोडा घोल का 50% वाष्पीकरण शामिल होता है। उच्च कास्टिक सोडा सांद्रण नामक का अवक्षेपण कराता है, जो विपरीत संबंध में कास्टिक सोडा घोल में घुलनशील होता है। उच्च सांद्रण घोल को तब 50% सांद्रण हेतु पुनः पतला किया जाता है जो कि वाणिज्यिक रूप से शोधित ग्रेड कास्टिक सोडा के रूप में उपलब्ध है।

सामान्य प्रयोगों में प्रक्रिया तथा बेकार जल का उदासीकरण, वस्त्र उत्पादन, साबुन तथा डिटरजेंट्स और एल्यूमिनियम उत्पादन शामिल होते हैं। ये प्रयोग तथा अनुप्रयोग सामान्य तौर पर कास्टिक सोडा के संदर्भ में होंगे क्योंकि पीछे बताए गए ग्रेडों में से कोई भी आपूर्तिकर्ता के पारिभाषिकी पर निर्भर करता है।

vi) मेम्ब्रेन्स सेल प्रक्रिया में एक चयनित मेम्ब्रेन्स का उपयोग होता है जो कि क्लोरिन तथा सोडियम आयन्स को अलग करता है। मेम्ब्रेन्स, मेम्ब्रेन्स की दूसरी तरफ जिम्में क्लोरीन गैस तथा नमक (ब्राइन) को रखते समय सोडियम आयन को मेम्ब्रेन्स के आर पार प्रवास करने की अनुमति देता है। सोडियम आयन को शोधित जल के साथ जैसा कि मरकरी सेल में किया जाता है, कास्टिक सोडा उत्पन्न करने हेतु रिएक्ट कराया जाता है। मेम्ब्रेन्स सेल द्वारा उत्पादित घोल मात्र 33-35 भार% होता है। वाष्पीकरण का जैसाकि डायफ्रैम प्रक्रिया में किया जाता है शिपमेंट्स हेतु उपयुक्त सांद्रण को नाममात्र 50 भार % घोल तक बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है। नमक सांद्रण को इस वाष्पीकरण प्रक्रिया में डायफ्रैम वाष्पीकरण के विरुद्ध मेम्ब्रेन्स के चयनात्मक ओसमोटिक प्रकृति तथा इस प्रक्रिया में अपेक्षित कम की गई वाष्पीकरण की मात्रा के कारण सार्थक रूप से सांद्रित नहीं किया जाता है। 75 पी पी एम अधिकतम तक सांद्रण करते हुए नमक की अल्प मात्रा मेम्ब्रेन्स के पार प्रवास करता है। नोट करें कि मेम्ब्रेन्स सेल प्रोद्योगिकी का उपयोग करने वाले अन्य उत्पादकों के पास कास्टिक सोडा घोल में अनुज्ञेय नमक सांद्रण पर 100 पी पी एम की उच्चतम अधिकतम सीमा हो सकती है।

उच्च विशुद्धता की विशेषता उत्पाद में कॉन्टामिनैन्ट्स के कम सांद्रण का विवरणात्मक है। नमक अथवा एन ए सी एल विशिष्ट रूप से 75 पी पी एम की अधिकतम के साथ 30 पी पी एम से कम होता है सोडियम क्लोरेट्स अथवा एन ए सी एल 03 विशिष्ट रूप से 5 पी पी एम की अधिकतम सीमा के साथ 3 पी पी एम होता है। सोडियम कार्बोनेट अथवा एन ए 2 सी 03 विशिष्ट रूप से 0.05 पी पी एम की अधिकतम सीमा के साथ 0.03 भार% होता है। सोडियम कार्बोनेट अथवा एन ए एस ओ 4 विशिष्ट रूप से 20 पी पी एम अधिकतम के साथ 15 पी पी एम होता है नोट करें कि विभिन्न मेम्ब्रेन्स सेल परिचालन के बीच अपेक्षित कुछ मामूली परिवर्तन के साथ ये सीमाएं ओलीन विशेष है।

मेम्ब्रेन्स सेल प्रक्रिया द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा को अधिकांशतः मेम्ब्रेन ग्रेड कहा जाता है।

(vii) यह सर्वविदित तथ्य है कि कास्टिक सोडा के उत्पादन खपत और व्यापारिक उद्योग के भीतर कास्टिक सोडा के लागत को क्लोरिन की लागत से जोड़ा जाता है, क्योंकि दोनों समान प्रक्रिया द्वारा उत्पादित किए जाते हैं। क्लोरिन की कीमतें बहुत अधिक होने के कारण कास्टिक सोडा की कीमतें कम होती हैं और क्लोरिन की कीमतें कम होने पर कास्टिक सोडा की कीमतें अधिक होती हैं। यह सुझात तथ्य है कि पी ओ आई के दौरान क्लोरीन की कीमतें वैश्विक रूप से हर समय अधिक रही है और इसके परिणामस्वरूप कास्टिक सोडा की कीमतें ऐतिहासिक रूप से कम थीं।

viii) सविनय निवेदन है कि मै. ट्रिकन इनर्जी लि. ने 1,00,000,00 डी एम टी प्लस/माइनस 5% (1000 एन ए ओ एच आधार पर) हेतु दिनांक 31.8.2001 के विश्व निविदा के अनुसरण में भारत में कास्टिक लाई बेचा।

ix) दो विकल्पों का प्रस्ताव किया गया था तथा मै0 ट्रिकन इनर्जी को 10 प्रतिशत एन ए ओ एच आधार पर कास्टिक सोडा लाई के 30,000 डीएमटी प्लस/माइनस 5 प्रतिशत की आपूर्ति हेतु निविदा प्रदान की गई। इस कास्टिक सोडा का उत्पादन डायफ्रैम विधि द्वारा किया जाना था जो कि विशिष्ट रूप से मेम्ब्रेन्स विधि द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा लाई से यू.एस.डी 5 सस्ता होता है। इस तथ्य की पहचान खुद निविदा दस्तावेज द्वारा की गयी थी जिससे यह नोट किया गया था कि मरकरी/मेम्ब्रेन्स गेड

की कीमतों का डायफ्रैम ग्रेड कास्टिक सोडा लाई की कीमतों के साथ तुलना हेतु प्रति डीएमटी यू एसडी 5 का वित्तीय भार डायफ्रैम ग्रेड की कीमतों पर पड़ेगा ।

x) यह नोट करना आवश्यक है कि डीएमटी का अर्थ ड्राइमेट्रिक टन है। कास्टिक सोडा लाई द्रव रूप में होने के कारण इसमें कास्टिक सोडा तथा जल होगा । कास्टिक सोडा अथवा डीएमटी प्राप्त करने के लिए जल को वाष्पीकृत करना होगा। विशिष्ट रूप से, उदाहरणार्थ 100 प्रतिशत एन ए ओ एच आधार पर कास्टिक सोडा का 500 डीएमटी प्राप्त करना, कास्टिक सोडा लाई का 1000 एमटी को घुलनशील रूप में पानी से भरा जाएगा । जब वाष्पीकृत किया जाएगा तो इससे 100 प्रतिशत एन ए ओ एच आधार पर कास्टिक सोडा का 500 डीएमटी तैयार होगा ।

xi) उपरोक्त निविदा में मै0 ट्रिक्न इनर्जी लि0 ने मै0 हानवा केमिकल कारपोरेशन का प्रतिनिधित्व किया । मै0 ट्रिक्न इनर्जी लि0 ने अन्य बातों के साथ-साथ धरोहर राशि जमा तथा निष्पादन गारंटी बैंड प्रस्तुत किया । इसके अतिरिक्त निविदा की कई अन्य अपेक्षाएं थी जिसे मै0 ट्रिक्न इनर्जी लि0 द्वारा पूरा किया गया ।

xii) मुख्य प्रतिक्रिया मै0 हानवा केमिकल कारपोरेशन द्वारा दायर की गई है, जो सही पूर्वक मै0 ट्रिक्न इनर्जी लि0 द्वारा विशुद्ध रूप से प्रलेखित तथा वाणिज्यिक तरीके के आधार पर निभाई गई भूमिका को प्रतिबिम्बित करता है । इस स्थिति को संक्षिप्त रूप से व्याख्या करने हेतु मै. ट्रिक्न इनर्जी लि ने दिनांक 10 दिसम्बर 2001 की बिक्री तथा खरीद संविदा के अनुसार मै. हानवा कारपोरेशन के साथ यू एस डी 189.36/डी एम टी सी एफ आर विजैग पर 30000 डी टी+/-5% की आपूर्ति हेतु संविदा किया । तथापि एल/सी ओपनिंग हेतु प्रपत्र बीजक मै. हानवा कारपोरेशन द्वारा मै. हानवा केमिकल कारपोरेशन तथा मै. ट्रिक्न इनर्जी के बीच पूर्ववर्ती लेन देन से यू एस डी 4.57/डी एम टी के समायोजन हेतु यू एस डी 184.79/डी एम टी सी एफ आर विशाखापत्तनम पर जारी किया गया था ।

ग. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

- i) इस तथ्य को अस्वीकार करने इसका विरोध किया जाता है कि घरेलू उद्योग में क्षति हुई है ।
- ii) सर्वप्रथम जैसा कि उपर बताया गया , क्लोरीन की कीमतें काफी अधिक थीं और घरेलू उत्पादकों ने उसका लाभ अवश्य उठाया होगा ।
- iii) द्वितीयतः क्षमता पर अभ्यावेदनों के बावजूद यह प्रस्तुत किया गया है कि घरेलू उद्योगों के पास कास्टिक सोडा की बहुत कम क्षमता है जिसे कि प्रस्तुत किया गया है । पुराने प्राधान्यिकी तथा उच्च विद्युत लागत की तुलना में इकाई का आकार स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि यदि कोई क्षति है तो वह किसी पाटन के कारण नहीं है । इसके अतिरिक्त घरेलू उत्पादकों में से एक जिसने एपिक्लोरोहाइड्रीन का भी विनिर्माण किया मै. तमिलनाडु पेट्रो प्रोडक्ट्स लि ने स्वीकार किया कि उर्जा की उच्च लागत रक्षोपाय कार्यवाही में उनकी गंभीर क्षति का कारण था । अपनी पुर्न संरचना योजना के हिस्से के रूप में उन्होंने एक आबद्ध पावर प्लांट शुरू करने का वायदा

किया था, जो उनके उत्पादन लागत को कम करेगा। इस प्रकार यह स्वीकार किया गया है कि भारतीय उद्योग पाटन को छोड़कर अन्य कारकों की वजह से क्षति उठा रहे थे।

- iv) जैसा कि ऊपर बताया गया है, नालको ने अपनी जरूरत हेतु अधिकतम प्रतिस्पर्धी कीमत प्राप्त करने के लिए विश्व निविदा जारी की। यह नोट किया जा सकता है कि नालको को आपूर्ति उस समय प्रचलित बाजार दर पर गैर पाटित कीमतों पर की गई थी जबकि दूसरी तरफ स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं को निहित हानि उतनी हुई जितनी कि मै. नालको की आवश्यकता पर स्थानीय परिवहन लागत निषेधात्मक रूप से उच्च आधारित थे कि शिपमेंट द्रव अवस्था में हो सकती है। इसके अतिरिक्त चार भारतीय बोली लगाने वालों ने अपनी उत्पादन विधि अथवा क्षमता पर ध्यान किए बिना लगभग उन्हीं कीमतों को प्रस्तावित किया। यह सादर निवेदन है कि ऐसी कीमत प्रथम दृष्टया संभव नहीं है।

उपरोक्त के लिए बिना कोई पूर्वधारणा के यह सविनय निवेदन है कि नालको निविदा के अनुवर्ती मै. हानवा केमिकल कारपोरेशन तथा मै. ट्रिक्न इनर्जी लि. द्वारा की गई मामूली आपूर्ति से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

2. मै. हानवा केमिकल कारपोरेशन कोरिया आर पी

क) विद्याराधीन उत्पाद

- i) कोरिया गणराज्य से हानवा ग्रुप दस प्रमुख संपिंडनों में से एक है। इसके अतिरिक्त हानवा केमिकल कारपोरेशन कास्टिक सोडा का विनिर्माता है जिसे विदेशी बाजारों में समूह के व्यापारिक विंडो (हानवा कारपोरेशन सिडल कोरिया) और कुछ अन्य व्यापारियों (यदि कोई हो, वर्तमान मामले में कारगों ने मै. ट्रिक्न इनर्जी यू एस ए के माध्यम से नालको को बेचा) के माध्यम से बेचा जा रहा है।
- ii) इसके मुकाबले हमारे संयंत्र पूर्णतया एकीकृत प्लांट हैं, भारत में स्थानीय निर्माता (याचिकाकर्ता) कम क्षमता वाले संयंत्र चला रहे हैं जहां वे क्लोरीन के उत्पादन को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में समर्थ नहीं हैं और इसलिए कास्टिक सोडा की अपनी उच्च उत्पादन लागत के बारे में गुहार लगा रहे हैं।
- iii) क्लोर अलकली यूनिट में, साधारण नमक से हम प्रधानतः दो चीज पाते हैं कास्टिक सोडा और क्लोरीन। अब यदि क्लोरीन (जो कि एक वस्तु है जिसकी बहुत ही खतरनाक प्रकृति के कारण इसका अंतर्राष्ट्रीय बाजार में व्यापार नहीं किया जा सकता है) को किसी अन्य प्रभावकारी तरीके (एपिक्लोरो हाइड्रिन और ई डी सी > वी सी एम > पी वी सी जैसे उत्पाद के उत्पादन के समान) से प्रयोग नहीं किया जा सकता है, क्लोरीन कीमतों का भार कास्टिक सोडा पर प्रतिबिम्बित किया जाएगा।
- iv) कास्टिक सोडा एक वस्तु है, आम कीमत संदर्भ इलेक्ट्रिक केमिकल यूनिट जिसे ई सी यू (इसमें कास्टिक सोडा+क्लोरीन शामिल होता है) के रूप में भी जाना जाता है। इसके अतिरिक्त व्यापक आकार के संयंत्र के मामले में, कीमतें विभिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होती हैं। मुख्य कारक निम्नानुसार हैं-

+ई डी सी > वी सी एम > पी वी सी की कीमत में उतार चढ़ाव

- v) उपरोक्त दो कारकों हेतु क्लोरीन मूल कच्चे माल में से एक है- यदि, अंतर्राष्ट्रीय बाजार अर्थात् पी वी सी की मांग करता है, इसका अर्थ यह हुआ कि क्लोरीन की मांग अधिक हैं, अब अधिक क्लोरीन के उत्पादन हेतु अधिक कास्टिक सोडा का उत्पादन किया जाएगा। अतः कीमत कारक की जांच के दौरान कृपया कीमतों के निर्धारण एवं किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले अन्य संबंधित कारकों की जांच भी की जानी चाहिए।
- vi) इसके अतिरिक्त व्यापक अभ्यास प्रधानतः क्लोरीन के उत्पादन के लिए है और इस प्रकार कास्टिक सोडा सह उत्पाद के रूप में जबकि भारत में यह अन्यथा प्रतीत होता है।

ख. क्षति

- i) अलकली मेकर्स एसोसिएशन की लिखित याचिका में हम पाते हैं कि कास्टिक सोडा उद्योग एक पुराना उद्योग है और यह कि कई निर्माता हैं जो दावा कर रहे हैं कि उनकी संयुक्त क्षमता भारत में मांग से अधिक है। जबकि दूसरी तरफ, हम पाते हैं कि भारत के पास पी वी सी तथा एपिक्लोरोहाइड्रिन हेतु भी अधिक क्षमता है तथापि यदि हम आगे देखते हैं तो हम पाते हैं कि भारत में पी वी सी प्लांट्स अपने मूल फीडस्टॉक के रूप में ई डी सी और/अथवा वी सी एम का आयात कर रहे हैं (और स्थानीय क्लोरीन के प्रयोग द्वारा ई डी सी और/अथवा वी सी एम का स्थानीय रूप से उत्पादन करने में समर्थ नहीं है)। निर्दिष्ट प्राधिकारी याचिकाकर्ताओं से यह पूछ सकते हैं कि और हम आश्चर्य है कि निष्कर्ष होगा कि स्थानीय कास्टिक इकाइयां सिर्फ कास्टिक सोडा लाई की स्थानीय पड़ोस मांग पर विचार करते हुए आयोजित की गई थीं। यह वर्णन करना गलत नहीं होगा कि हम स्थितियों के पार आ चुके हैं कैसे स्थानीय कास्टिक उत्पादकों के बारे में कहा जाता था कि वे वस्तुतः क्लोरीन को शून्य लागत पर तैयार कर रहे थे यह एक प्रकार से स्पष्ट रूप से उत्पादन लागतों के उनके अकुशल हैंडलिंग को दर्शाता है।
- ii) किसी सुरक्षा को बिना ध्यान में रखते हुए वे पाते हैं कि स्थिति कभी नहीं बदलगी बल्कि प्रयोक्ता उद्योग को क्षति जारी रहेगी जबकि कास्टिक इकाइयां संरक्षाओं के कारण उत्सव मना रही हैं।
- iii) हम भारतीय बाजार में सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय कीमत का प्रस्ताव करने से कास्टिक सोडा लाई के पाटन में शामिल नहीं है। भारत में कास्टिक सोडा लाई के पाटन तथा भारत में घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने का कोई इरादा नहीं है।

- (iv) सर्व प्रथम, हमने भारतीय बाजारों में प्रत्यक्ष रूप से कोई कार्गो नहीं बेचा है। मूल रूप से, हमें ट्रिकोन एनर्जी, यू एस ए से एक पड़ताल प्राप्त हुई है और हमने उन्हें भारत में नालको की आपूर्ति के लिए प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय बाजारों को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव दिये हैं। तथा ट्रिकोन ने भी नालको संविदा में भागीदारी की है।
- (v) जांच अवधि के दौरान कोरिया आर पी से निर्यात की मात्रा बहुत कम अर्थात् केवल 12569.32 डी एम टी थी और भारत में कुल खपत जो 1600000 डी एम टी है की तुलना में कुल विशिष्टियों का प्रतिशत मात्र 0.78 प्र.श. है। यह घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंचा सकता है।
- (vi) कास्टिक सोडा एक वस्तु बन गया है और इसके लिए कीमत संदर्भ अंतर्राष्ट्रीय कीमत सूचकांक से लिए गए हैं - लंदन मेटल एक्सचेंज विभिन्न धातुओं के लिए एल ई एम में धातुओं के समान तथा पालीमर्स आदि के लिए पी एल ए टी टी/आई सी आई एस में कीमत उद्धरण दिए जाते हैं। यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी हमारे द्वारा नालको को दी गई लदानों के समय प्रचलित कीमतों से भी तुलना करें तो यह काफी अधिक थी।
- (vii) नालको - भारत में एक वैश्विक आकार का अलुमिना उत्पादक है - वे बड़ी मात्रा में कास्टिक सोडा लाई का प्रयोग करते हैं और बेहतर कीमतें प्राप्त करने हेतु वे वैश्विक निविदा आमंत्रित करते हैं जिसमें स्थानीय उत्पादक तथा वैश्विक उत्पादक भागीदारी करते हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विदेशी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा किये गये प्रस्तावों के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत लागत तुलना को देखा है - तथापि यदि हम उस संविदा में स्थानीय उत्पादकों द्वारा की गई भागीदारी की जांच करें तो हम पाते हैं 42 उत्पादकों में से केवल 4 ने ही भागीदारी की उनके द्वारा प्रस्तावित कुल मात्रा (83000 डी एम टी $\pm 5\%$) है निर्दिष्ट प्राधिकारी को किसी भी निर्णय पर पहुंचने से पहले इस स्थिति पर ध्यान देना चाहिए।
- (viii) हानवा से हमने नालको को केवल डायफ्राम प्रक्रिया का प्रस्ताव किया था (यद्यपि हमारे पास मेम्ब्रेन प्रक्रिया भी है)। हम आगे दोहराते हैं कि याचिका के आधार पर याचिका कर्ता भारत में डायफ्राम प्रक्रिया के एक मात्र उत्पादक दिखाई देते हैं और उनकी स्थापित क्षमता लगभग 7250 मी.टन है। जोकि इस प्रक्रिया विशेष की नालकों की कुल आवश्यकता का मात्र $\frac{1}{4}$ है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह किसी भी तरह से पाटन नहीं है बल्कि हमने एक ऐसी ग्रेड का प्रस्ताव किया है, जिसका किसी भी स्थानीय उत्पादक ने प्रस्ताव नहीं किया है।
- (ix) याचिकाकर्ता ने यह उल्लेख किया है कि तीनों प्रक्रिया द्वारा उत्पादित कास्टिक सोडा समान होते हैं - निर्दिष्ट प्राधिकारी नोट कर सकते हैं कि इस संबंध में विशिष्टताओं में कुछेक मौलिक अंतर होते हैं। डायफ्राम ग्रेड कास्टिक सोडा की क्लोराइड की मात्रा मरकरी तथा मेम्ब्रेन ग्रेड में इसकी मात्रा से अधिक होती है।
- (x) यद्यपि याचिकाकर्ता ने याचिका में उल्लेख किया है कि ऐसी तीन उत्पादन प्रक्रियाएं हैं जिनसे कास्टिक सोडा का उत्पादन किया जाता है, प्रथम दृष्टया यह मालूम होता है कि भारतीय स्थानीय कंपनियां या तो मरकरी सेल या मेम्ब्रेन सेल आधारित कास्टिक सोडा लाई का प्रयोग करती हैं।
- (i) नालको की उक्त निविदा में भागीदारी करने वाले स्थानीय उत्पादकों की क्षमताओं के आगे के विश्लेषण में हम पाते हैं कि केवल तमिलनाडु पेट्रोप्रोडक्ट्स लि. टीपीएल (क्षमता 49500 मी टन) एवं आंध्रा सुगर्स (क्षमता 30000 मी टन) के पास ही मेम्ब्रेन सेल प्रौद्योगिकी है तथा वर्ष 2000-2001 के दौरान उनका प्रचालन अनुपात लगभग 100 प्र.श. के आसपास है।
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया इस तथ्य पर ध्यान दें कि स्थानीय कंपनियों जो अपने उत्पाद नालको को न बेचते हुए अपनी क्षमता के 100 प्र.श. या अधिक पर प्रचालन कर रही हैं - निविदा में नालको को अपने कुल क्षमता का कहीं भी 30 प्र.श. से 60 प्र.श. का प्रस्ताव करती हैं - उनका स्पष्ट इरादा क्षेत्रीय बाजार जिन्हें वे माल दे रहे हैं को प्राप्त करना है।
- (ii) यद्यपि याचिकाकर्ता यह दावा करते हैं कि भारत में कास्टिक सोडा का उत्पादन तीनों प्रक्रियाओं मरकरी, डायफ्राम तथा मेम्ब्रेन द्वारा होता है तथापि हम उनके अनुरोधों में पाते हैं कि केवल एक निर्माता सिरपुर पेपर के पास डायफ्राम आधारित उत्पादन प्रक्रिया है। उनके पास भी बहुत कम 7250 मी.टन प्रति वर्ष की ही क्षमता है।

- (xiv) एक दलील जिसके बारे में स्थानीय निर्माता बताते हैं कि भारत में बिजली की लागत काफी अधिक है जो उनकी उच्च उत्पादन लागत का कारण है और चूंकि कास्टिक सोडा के उत्पादन में बिजली का अत्यधिक प्रयोग होता है इसलिए उन्हें सुरक्षण की आवश्यकता है।
- (xv) यहाँ हम भारत में एपिक्रोपेडाईड्रीन पर क्षोपाय शुल्क संबंधी एक सुनवाई के दौरान भारत में कास्टिक सोडा के एक उत्पादक तमिलनाडु पेट्रोप्रोडक्ट्स लि. टीपीएल द्वारा किये गए अनुरोधों का हवाला देते हैं। टीपीएल ने कहा है कि वे कास्टिक सोडा तथा एपिक्रोलोहाइड्रीन का उत्पादन कर रहे हैं और इसके अलावा वे कंपैक्ट पावर प्लांट की स्थापना के माध्यम से क्लोरीन की लागत को इसकी मौजूदा लागत से एक तिहाई तक कम करने का प्रस्ताव करते हैं इस मुकाम पर हम निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि टीपीएल (कास्टिक सोडा के एक उत्पादक ने कास्टिक क्लोरीन एवम् ईसीएच के उत्पादन में स्पष्ट तौर पर संबंध स्थापित किया है) और इसके अलावा वे कहते हैं कि कंपैक्ट पावर प्लांट्स महत्वपूर्ण रूप से उत्पादन की लागत को कम कर सकते हैं। अतः हमारा अनुरोध है कि कास्टिक सोडा की लागत निर्धारण के समय इन कारकों पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
- (xvi) अपनी याचिका में - याचिकाकर्ता ने कास्टिक सोडा लाई तथा सोलिड/फ्लेक्स की विशेषताओं का वर्णन किया है - निर्दिष्ट प्राधिकारी पहली नजर में यह भली प्राकर से समझ सकते हैं कि कास्टिक सोडा की आपूर्ति के लिए कुछ विशेष प्रावधानों को करना होता है क्योंकि क्रिस्टलीकरण 12-15 डिग्री सेल्सियस पर आरंभ हो जाता है और इसी के साथ क्वथनांक 142-148 डिग्री सेल्सियस पर होता है।
- (xvii) हम पाते हैं कि याचिकाकर्ता कंपनियों का स्थान उपायोक्ता कंपनी नालको से काफी दूर है - जिसका यह अर्थ है कि उन्हें लाई के परिवहन हेतु विशेष प्रबंध करने पड़ेंगे। इसका भी यही अर्थ है कि अनेक अंतर्देशीय उत्पादकों के पास ऐसे उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क की मांग करने का कोई प्राथमिक अधिकार नहीं है जिसे वे भौगोलिक दशाओं के कारण व्यवहारिक रूप से अपने क्रेताओं को सुपुर्द नहीं कर सकते हैं इसके अलावा अन्य उत्पादकों के लिए किसी को भी विशिष्टीकृत पात्रों में लदान की सुविधाओं तथा परिणामतः क्रेताओं नालको की इसकी सुपुर्दगी पर सही मायने में ध्यान देना पड़ेगा। हम महसूस करते हैं कि यह एक प्रमुख कारण है कि केवल 4 स्थानीय कंपनियों ने नालको निविदा में भागीदारी की है।
- (xviii) यदि हम कास्टिक सोडा के भारतीय निर्यातों की जांच करें - तो यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि भारत कास्टिक सोडा का निर्यात नहीं कर सकता है जबकि सोलिड और फ्लेक्स के निर्यात उनके पास हैं।
- (xix) अब निर्दिष्ट प्राधिकारी कास्टिक सोडा के आयातों के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए अनुरोधों पर कृपया ध्यान दें यह जान पड़ता है कि याचिकाकर्ता दोनों कास्टिक सोडा लाई तथा कास्टिक सोडा फ्लेक्स/सो लिड को मिला-जुला कर जांच को पथभ्रष्ट करना चाहते हैं।
- (xx) याचिकाकर्ता ने अपने अगोपनीय अनुरोधों में पीओआई के दौरान अप्रैल से दिसम्बर 2001 के आयातों के आकड़ों के वार्षिकीकरण करने के पश्चात् कुल आयातों को 168 012 मी.टन दर्शाया है। तथापि उनके अनुरोधों का समर्थन अनुबंध केवल अप्रैल 2001 - नवम्बर 2001 के ही आंकड़े कवर करता है। वस्तुतः यह जान पड़ता है कि याचिकाकर्ता पीओआई के दौरान आयातों में नालको निविदा में दह गड़ कुल मात्रा का योग करके प्राधिकारी को भ्रमित करना चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि निविदा में दी गई मात्रा की आपूर्ति भिन्न-भिन्न लदानों में दिसम्बर 2002 तक की जानी है। पीओआई के दौरान वास्तविक आयात पिछले वर्ष की तुलना में काफी कम है। इसके अलावा यदि हम आयातों अप्रैल 01 - जनवरी 02 के आधार पर आकड़ों को वार्षिक बनाये तो कुल आयात भी कास्टिक सोडा लाई के निर्यातों में महत्वपूर्ण कमी दर्शाते हैं।
- (xxi) अब यदि नालको जैसे क्रेता - जिन्हें कास्टिक सोडा लाई की आवश्यकता है के समक्ष उपस्थित समस्याओं के बारे में सोचा जाए कि यदि उन्हें कास्टिक सोडा फ्लेक्स/सो लिड की आपूर्ति होती है और यदि उन्हें फिर से उसे लाई में परिवर्तित करने की आवश्यकता पड़े तो यह एक बड़े प्रश्न चिन्ह का सृजन करता है।
- (xxii) अन्य के साथ-साथ कोरिया हानवा केमिकल कार्पोरेशन से कास्टिक सोडा के आयातों पर पाटन रोधी शुल्क लागू करने का एक कारण यह है कि - याचिकाकर्ता अपनी याचिका में कहता है कि इन देशों की क्षमता उनकी आधारभूत घरेलू आवश्यकता से बहुत अधिक है। कास्टिक सोडा के लिए कोरिया के आयात आंकड़ों से देखा गया है कि हमारे अभ्यावेदनो से यह स्पष्ट है कि - कोरिया कास्टिक सोडा की बड़ी मात्रा

का आयात तथा निर्यात करता है। इस व्यापार का प्रमुख कारण कोरिया में कार्बोनाट की स्थितियों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना है।

- (xxiii) यहाँ यह उल्लेख करना, अनावश्यक नहीं होगा कि हमने वर्ष 2001 के उत्तरार्ध के दौरान नालको की निविदा में भागीदारी की थी। उस समय तक अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कीमतों में गिरावट शुरू हो गई थी। इसके अलावा यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अप्रैल 2002 के दौरान प्रचलित कीमतों पर नजर डालें यह 30 अमरीकी डालर प्रति डीएमटी एफओबी यूएस गल्फ तक पहुंच गई थी - तथापि मई, 02 से कीमतों ने फिर से तेजी से बढ़ना शुरू कर दिया है।
- (xxiv) हमारी उत्पादन क्षमता उत्पादन लागत स्थानीय बिक्री मात्रा तथा लागत निर्धारण आदि प्राधिकारी द्वारा यथा निर्धारित विशिष्ट प्रपत्रों में प्रस्तुत की जा रही है तथा सूचना की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए हमने इस संबंध में ब्योरे पूर्णतः गोपनीय रूप से दिए हैं। भारत के कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत कोरिया में कारखाना द्वार पर घरेलू बिक्री कीमत से बहुत अधिक है। निर्दिष्ट प्राधिकार या नामित अधिकारी इस प्रयोजनार्थ आंकड़ों की जांच कोरिया में हमारे मुख्यालय में परस्पर अनुकूल किसी भी तारीख और समय पर कर सकते हैं।

3. **क्टोर शंघाई कैमिकल कं.लि. जन.गण. चीन**

- (i) निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली प्रस्तुत की है और यह उल्लेख किया है कि यह चीनी कंपनी कानून के अनुसार वाकायदा स्थापित है शेयरो द्वारा संचालित लिमिटेड कंपनी है जो स्वतंत्र रूप से व्यवसायिक तथा उत्पादन कार्यकलापों का प्रचालन करती है तथा आपूर्तिकर्ताओं एवं उपभोक्ताओं का चयन करती है और बाजार के संकेतकों के लिए बिक्री संबंधी बाजार स्वीकारिता का विकास करती है।
- (ii) प्रतिवादियों ने एक बाजार अर्थव्यवस्था/व्यक्तिगत व्यवहार का दावा किया है।
- (iii) निर्यातक इंगित किया है कि प्रतिवादी हांगकांग में अपनी व्यापारिक कंपनी के नियम एवं शर्तों के अनुसार निर्यात कीमत का उद्धरण देते हैं जो तब बिक्री दस्तावेजों को जापान के अपने उपभोक्ताओं को देता है जो भारतीय उपभोक्ताओं के पुनः बीजक बनाये जाते हैं।
- (iv) हांग कांग की कंपनी कमीशन आधार पर कार्य कर रही है।
- (v) यह भी अनुरोध किया गया है कि तुलना कार्बोनाट सोडा आधार पर उचित प्रतिशत में की जानी चाहिए और 99 प्रतिशत संबद्ध वस्तुओं को बाहर रखा जाना चाहिए।
- (vi) निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की घरेलू विक्रियों से संबंधित सौदों और संगत उत्पादन लागत के ब्यौरों के साथ भारत को संबद्ध निर्यात कीमत को उपलब्ध कराया है।

(ग) **प्राधिकारी द्वारा जाँच**

निर्यातको, याचिकाकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए पूर्वोक्त अनुरोधों की इनके नियमानुसार संगत होने तथा वर्तमान मामले से संबंधित होने की सीमा तक इन पर इन जांच परिणामों में उचित स्थानों पर जांच ध्यान तथा कार्रवाई की गई है।

1. **विचाराधीन उत्पाद**

वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सोडियम हाईड्रोक्साइड (रासायनिक सूत्र एन ए ओ एच) है जिसे सामान्यतया कोरिया आर पी तथा जन.गण. चीन मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कार्बोनाट सोडा के नाम से जाना जाता है। कार्बोनाट सोडा एक अकार्बनिक सोपी, अत्यधिक अल्कलाइन तथा गंधरहित रसायन है जिसका अनुप्रयोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे लुग्दी और कागज, अखबारी कागज, विस्कोसयार्न स्टेपल फाइबर, एल्यूमिनियम, काटन, वस्त्र नहाने व कपड़ा धोने के साबुन, डिटर्जेंट, डाईस्टफ औषधि एवं भेषजों, पेट्रोलियम रिफ़ाइनिंग आदि के विनिर्माण में होता है।

कास्टिक सोडा को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के सीमाशुल्क शीर्ष 2815.11 तथा 2815.12 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। आई टी सी के आठ अंकीय वर्गीकरण के अनुसार उत्पाद को सीमाशुल्क शीर्ष 2815.1101, 2815.1102 तथा 2815.1200 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि यह वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और जांच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

कास्टिक सोडा को तीन प्रक्रियाओं अर्थात् मरकरी सेल प्रक्रिया डायाफ्राम प्रक्रिया एवं मेम्ब्रेन प्रक्रिया द्वारा दो रूपों अर्थात् लाई और सोलिड्स में उत्पादित किया जाता है।

कास्टिक सोडा को ओ जी एल के अंतर्गत आयात किया जा सकता है और इस पर 35 प्र.श. का मूलभूत सीमा शुल्क लगता है। वर्तमान जांच कास्टिक सोडा की सभी किस्मों को कवर करती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा यह उल्लेख किया गया है कि कास्टिक सोडा की तीन भिन्न-भिन्न प्रकार की उत्पादन प्रक्रियाएं भिन्न-भिन्न गुणवत्ता वाले कास्टिक सोडा का उत्पादन करती हैं। यह भी संकेत दिया गया है कि मेम्ब्रेन प्रक्रिया भारत में बहुत कम उत्पादको द्वारा प्रयोग की जाती है। इसके अलावा यह उल्लेख किया गया है कि 99 प्र.श. कास्टिक सोडा को जांच के कार्यक्षेत्र की परिधि से बाहर रखना चाहिए।

तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. ट्रीकोन एनर्जी लि., यू एस ए एवं मै. हानवा कैमिकल कार्पोरेशन कोरिया आर पी ने नालको की निविदा में यथा इंगित मेम्ब्रेन प्रौद्योगिकी के आधार पर 5 डालर/ मी.टन के समायोजन का संकेत दिया है। इसलिए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मै. नालको ने ऐसी एक प्रौद्योगिकी के संबंध में 5 डालर मी.टन का समायोजन लगाया है जो कि उनकी स्वयं की अपेक्षाओं पर निर्भर है और प्राधिकारी ने मै. हानवा कैमिकल कार्पोरेशन के लिए पाटन मार्जिन के मूल्यांकन के समय इस समायोजन पर पर्याप्त ध्यान दिया है। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि गुणवत्ता के आधार पर भिन्नता का सही ढंग से निर्धारण जहाँ भी जब भी साक्ष्य तथा दावा किया जाय^{जाय} उचित समायोजनों के माध्यम से किया जा सकता है। मै. हानवा कैमिकल कार्पोरेशन को प्रदान किया गया समायोजन अंतिम निर्धारण लम्बित रखते हुए प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि जांच कास्टिक सोडा की सभी किस्मों लाई एवं फ्लैक्स दोनों को कवर करती है और यह एक ही संबद्ध वस्तु के भिन्न-भिन्न रूप हैं और इन्हें उपयोक्ता की आवश्यकता के अनुरूप प्रतिस्थापनीय रूप से प्रयोग किया जाता है। इसलिए विभिन्न साद्वर्णों में दो किस्में जांच की विषय वस्तु हैं। प्राधिकारी ने आगे पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ केवल डी एम टी आधार पर उचित तुलनाएँ की हैं।

2. समान वस्तु

प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश से उत्पादित, निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है। ये दोनों वाणिज्यिक तथा तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय भी हैं और उपभोक्ता घरेलू तौर पर उत्पादित तथा आयातित वस्तुओं को स्थानापन्न ढंग से प्रयोग कर रहे हैं। यह इंगित किया गया है कि

यह निर्धारित किया गया है कि कास्टिक सोडा का पूरे विश्व में उत्पादन तीन प्रक्रियाओं अर्थात् मर्करी सेल्स प्रोसेस, डायाफ्राम प्रोसेस तथा मेन्ब्रेन प्रोसेस द्वारा किया जाता है। इन प्रक्रियाओं में अंतर का अर्थ उत्पादों के विभिन्न गुणों में अंतर से नहीं है। तीनों प्रक्रियाओं में उत्पादन लागत में भी ज्यादा अंतर नहीं है। याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि नियमों के अन्तर्गत, उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएं एवं संबद्ध देशों से आयातित वस्तुएं समान वस्तु हैं। प्राधिकारी ने दूसरे हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिये गये निवेदनो को ध्यान में रखकर तथा संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तुएँ तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के प्रतिस्थापनियता तथा स्थानापन्नता को ध्यान में रखकर अंतिम निर्धारण को लंबित रखकर प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ, नियम-2 (घ) के अनुसार निर्यातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू उत्पादित संबद्ध वस्तु को समान वस्तु मानती है।

3. घरेलू उद्योग

घरेलू उद्योग की ओर से मै० अलकली मनुफैक्चर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा याचिका दायर की गई है। याचिका का मै० डीसीडब्ल्यू लि०, मुम्बई, मै० गुजरात अलकलीस एण्ड कैमिकल्स लि०, बडोडरा गुजरात, मै० गुजरात अलकलीस, दहेज, मै० सर्वे केम इंडस्ट्रीज लि०, मुम्बई, मै० इंडियन रेयन एण्ड इंडस्ट्रीज लि०, वेरावल, गुजरात, मै० ग्रारिम इंडस्ट्रीज, नागदा, एमपी मै० सिएल केमिकल कम्प्लेक्स, पटियाला, पंजाब, मै० बिहार कास्टिक एण्ड कैमिकल्स लि०, झारखंड, मै० जायश्री केमिकल्स लि०, उड़ीसा, मै० आंध्रा सुर्गस, लि० तनाकु, बिल्ट केमिकल्स, डीसीएम श्रीराम, नई दिल्ली तथा पंजाब अल्कालीज एण्ड कैमिकल्स चंडीगढ़ द्वारा समर्थन किया गया है। कोई भी घरेलू उत्पादक ने याचिका का विरोध नहीं किया है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विभिन्न हितबद्ध पार्टियों ने यह उल्लेख किया है कि कुछेक घरेलू उत्पादकों ने ही नालको के टेडर में भाग लिया है तथा अंतर्देशीय भाड़ा अधिक होने के कारण, घरेलू उत्पादकों द्वारा समान को नालाको भेजना काफी महंगा है। यह इंगित किया गया है कि घरेलू उद्योग की परिभाषा उन्ही उत्पादकों तक सीमित रखना चाहिए जिसने सही रूप में नालको के टेडर में भाग लिया है। चूंकि नालको कास्टिक सोडा का एक मात्र उपभोक्ता है, प्राधिकारी इस तक को उपर्युक्त नहीं मानते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि नालको को लागत प्रभावी तरीके से आपूर्ति करने में असमर्थता पर विचार क्षति जाच के अन्तर्गत करनी चाहिए न कि घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र के लिए। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि नालको के समीप स्थित किसी घरेलू उत्पादकों के स्थानान्तरण की स्थिति में, उनको हुई क्षति को अन्ततः दूसरे घरेलू उत्पादकों पर प्रतिस्थापित कर दी जाएगी। तथापि, वस्तुओं का पाटन तथा नालको द्वारा उनके आयातों को पाटनरोधी नियमावली के अन्तर्गत समुचित रूप से बताया जाना है। इसलिए हितबद्ध पार्टियों को यह तर्क कि नालकों को आपूर्तिकर्ता तथा गैर-आपूर्तिकर्ता दो भिन्न-भिन्न प्रतिस्पर्धात्मक बजार का निर्माण करते हैं, सत्य नहीं है।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पाद जिन्होंने याचिका का समर्थन किया है का हिस्सा कुल घरेलू उत्पादन का 50% से अधिक बनता है और इसलिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) (क) और (ख) के अनुसार याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की ओर से दायर करने की स्थिति में है तथा नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

4. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

धारा 9(क) (1) (ग) के अधीन किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

(i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशियत हो; या

(ii) जहाँ निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अर्थात् निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो, तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा 1

सामान्य मूल्य एवं कारखाना निर्यात कीमत निर्धारण नीचे दिखाया गया है ।

क. सामान्य मूल्य

1. मै0 शंघाई क्लोर केमिकल अलकली कं0 लि0, चीन गणराज्य

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान अपने घरेलू बाजार में आयन एक्सचेंज मेम्ब्रेन ग्रेड कार्बोनेट सोडा (48%) की बिक्री का ब्यौरा प्रस्तुत किया है । कारखाना निर्यात कीमत *** डालर/ड्राई मिट्रीक टन (डीएमटी) इंगित किया गया है । निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन लागत *** डालर/डीएमटी प्रस्तुत किया है । भारत औसत घरेलू बिक्री कीमत को लाभ प्राप्त करते हुए दर्शाया गया है तथा इस प्रकार ये व्यापार के सामान्य क्रम में है । बाजार अर्थ-व्यवस्था/व्यक्तिगत व्यवहार के दावे में निर्यातक ने यह इंगित किया है कि वे चीन के कम्पनी कानून के अनुसार स्थापित है तथा वे शंघाई स्टॉक एक्सचेंज में सार्वजनिक सूचीबद्ध कम्पनी है । निर्यातक स्वतंत्र रूप से व्यवसाय एवं उत्पादन क्रियाकलापों का

प्रचालन करता है, आपूर्तिकर्ताओं तथा उपभोक्ताओं का मुक्त रूप से चयन करता है तथा बाजार के सकेतों के आधार पर बिक्री बाजार विकसित करता है। प्राधिकारी इस बारे में कि दिनांक 31 मई, 2001 की पाटनरोधी नियमावली सं० 28/2001 के सबध में अधिसूचनाओं के विशिष्ट उपबन्धों को नोट करते हैं जिनमें गैर बाजार अर्थव्यवस्था देश की शर्तों को परिभाषित किया गया है। दिनांक 4 जनवरी, 2002 की अधिसूचना में, उस देश का बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाएगा जिसे यदि जाच से पहले की तीन वर्षों के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी या डब्ल्यूटीओ सदस्य देश के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जाच के उद्देश्य से गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानने का निश्चय किया गया है या किया गया है।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि गैर बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार में छूट पर विचार करने के लिए सहयोगी निर्यातक से उनके विशिष्ट आर्हता सबध सूचना मांगी गई है। निर्यातक द्वारा दिये गये जवाब के अनुसरण में, यह नोट किया गया है कि सिर्फ बाजार सकेत पर प्रचालन सबध विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है लेकिन निर्यातकों को बाजार सिद्धांतों पर प्रचालन सबध व्यवहार को न्यायोचित ठहराने के लिए दिनांक 4 जनवरी, 2002 सीमाशुल्क अधिसूचना में यथा सूचीबद्ध विभिन्न मापदंडों के सबधों में कोई विशिष्ट सूचना पर्याप्त साक्ष्य के साथ प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसलिए प्राधिकारी अंतिम निर्धारण को लेकर रखते हुए प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ निर्यातक द्वारा अपने को बाजार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों पर प्रचालन विस्तृत विवरण पर विचार करने का प्रस्ताव नहीं करते हैं। प्राधिकारी यह भी स्मरण करते हैं कि विगत तीन वर्षों के दौरान स्टील ककीर रीडिंगफोर्सिंग बार के मामले में दिनांक 22.6.2001 के जन० गण० चीन से यूएसए, साईकिलों के मामले में दिनांक 30.6.2001 के चीन से ईयू तथा गैर शीतीत एप्पलजूस कक्रीट के मामले में 13.4.2000 के चीन से ईयू के द्वारा चीन के साथ के गैर बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार किया जाता है। इसे चीन एव चीनी ताइपेई से एसटीटीपी के पाटन के सबध में जारी प्रारंभिक जाँच परिणामों में भी इंगित किया गया था जिन्हें राजस्व विभाग ने दिनांक 17.6.02 की अपनी अधिसूचना द्वारा लागू भी कर दिया है। याचिकाकर्ताओं से यथा उपलब्ध सबध वस्तु के लागत सबधों आकड़ों जिन्हें पाटनरोधी नियमावली के अनुबध-1 और 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 9 के अनुसार परिकलित सामान्य मूल्य निकालने के लिए उपयुक्त समायोजनों के साथ उत्पादन की परिकलित लागत से सबधित सर्वोत्तम प्रक्रियाओं के प्रयोग द्वारा बाकायदा मानकीकृत किया गया है। अतः जाच अवधि के लिए सबध वस्तु का परिकलित सामान्य मूल्य ***** डालर/डीएमटी दर्शाया गया है। प्राधिकारी इस सबध में नोट करते हैं कि निर्यातक द्वारा कारखाना द्वार पर घरेलू बिक्री कीमत और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत पर प्रस्तुत आकड़े भी ***** डालर/डीएमटी की सीमा तक पाटन का प्रभाव दर्शाते हैं।

ख. निर्यात कीमत

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने जाँच अवधि के दौरान सबध वस्तु की कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत का ***** डालर/डीएमटी बताया है तथा कमीशन/छूटों के रूप में *** डालर/डीएमटी के समायोजनों का भी दावा किया है और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत को ***** डालर/डीएमटी दर्शाया है। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर मै० नालको,

जो जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के आयात हैं के उत्तर में निर्यातक द्वारा किए गए निर्यातों को सहसंबंधित किया है ।

प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण लंबित रखते हुए प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ निर्यातक द्वारा प्रस्तुत कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत को माना है और छूटो/कमीशन पर किए समायोजनों को अनुमति दी है ।

कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत **** डालर/डीएमटी बनती है । प्राधिकारी इस संबंध में निर्यातक द्वारा किए गए इस अनुरोध को भी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ उचित तुलना अर्थात् 48% संबद्ध वस्तु की 48% संबद्ध वस्तु के साथ तथ संबद्ध वस्तु के 100% साद्रण की तुलना संबद्ध वस्तु के 100% के साथ की जाए । चालू मामले में तुलना के प्रयोजनार्थ निर्यात मूल्य डीएमटी आधार पर प्रस्तुत किया गया और यथोक्त इंगित सामान्य मूल्य की भी गणना डीएमटी आधार पर की गई है ।

ग. चीन जन. गण. से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों का आकलन

(क) सामान्य मूल्य

प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 शंघाई कलोर अलकली केमिकल कं0 लि0 को छोड़कर जन. गण. चीन से कोई दूसरा निर्यातक ने जाँच के उद्देश्य से प्राधिकारी द्वारा भेजे गए प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है । इस असहयोग के परिप्रेक्ष्य में प्राधिकारी ऐसे उत्पादकों/निर्यातकों को गैर-बाजार सिद्धांत पर व्यवहार संबंधी याचिकाकर्ताओं के दावे की पुष्टि करता है । उस व्यवहार को ध्यान में रखते हुए जैसाकि उपर उद्धृत विभिन्न ईयू/ईएस के मामलों में किया गया है । प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन बैंच मार्किंग की उचित पद्धतियों द्वारा उत्पादन की मानकीकृत लागत को अंगीकार करके किया है ।

प्राधिकारी ने ऐसे उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य को *** डालर/डीएमटी संदर्भित किया है ।

(ख) निर्यात कीमत

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता द्वारा उनको डीजीसीआई एण्ड एस तथा अन्य गौण कीमतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत प्रस्तुत किया गया है । याचिकाकर्ता ने समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, अन्तर्देशीय भाड़ा, पोतखर्च और ऋण लागत को कमश *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी तक समायोजन करने का दावा किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआई एण्ड एस के अनुसार चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं का आयात 8210 मी0 टन तक का दिखाया गया है । सहयोगी आयातकों में से एक अर्थात् मै0 नालकों, के जवाब के अनुसार, जन. गण. चीन से आयात को 26505 मी0 टन का दिखाया गया है । अतः डीजीसीआई एण्ड एस का आकड़ा

सुविस्तृत तथा पूर्ण नहीं है और इसलिए इसे संदर्भित नहीं किया जा सकता है । इसके अलावा, जांच अवधि के दौरान किये गये आयातों का ब्यौरों के बारे में भी समीशुल्क से जवाब प्राप्त नहीं हुआ है । चूँकि इन परिस्थितियों में असहयोगी निर्यात के लिए सर्वोत्तम सूचना सिर्फ असहयोगी निर्यातक अर्थात् मै0 शंघाई कलोर अलकली कं0 लि0 से प्राप्त सूचना हो सकती है, जो प्राधिकारी के पास उपलब्ध सभी सूचना के आधार पर न्यूनतम निर्यात कीमत है, प्राधिकारी इसे जन. गण. चीन से असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत संदर्भित करने को उपर्युक्त मानते हैं । सीआईएफ पर समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतरदेशीय भाड़ा और पोत खर्च के लिए क्रमशः *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी के समायोजन की अनुमति दिया है ।

कारखाना निर्यात कीमत *** डालर/डीएमटी संदर्भित है ।

कोरिया गणराज्य

मै0 इनबहा कैमिकल कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य

क. सामान्य मूल्य

प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तु की अपनी घरेलू बिक्री कीमतों के बारे में दायर किये गए उत्तर को नोट किया । प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा दिए गए घरेलू बिक्री कीमत सम्बन्धी सौदेवार ब्यौरे प्रदान किए गए । निर्यातक ने *** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी/*** डालर/डीएमटी, *** डालर/डीएमटी की सीमा तक छूट पर घरेलू बिक्रियों, अंतरदेशीय भाड़े, अंतरदेशीय बीमा तथा अन्य के सम्बन्ध में समायोजनों का दावा किया है । निर्यातक ने यह भी अनुरोध किया है कि भारत को निर्यातों की अवधि के आस-पास की अवधि के दौरान की गई घरेलू बिक्रियों को भी समुचित तुलना के प्रयोजन के लिए संदर्भ लिया जाना चाहिए । प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बिक्री के सम्बन्ध में नमूना श्राव्य भी निर्यातक द्वारा दिया गया है । निर्यातक ने *** डालर/डीएमटी की सीमा तक अंतरदेशीय भाड़े के संबंध में समायोजनों का दावा किया है जिसका भाड़ा संघटक के तहत किए गए व्यय द्वारा निर्यातक ने समर्थन भी किया है ।

प्राधिकारी अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजन के लिए अंतरदेशीय भाड़े के संबंध में किए गए दावे के अनुसार समायोजनों पर विचार किया है । प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजन के लिए अंतरदेशीय बीमा तथा कमीशन पर भी अन्य समायोजनों की अनुमति दी है । प्राधिकारी ने दिसम्बर, 2001 मार्च, 2002 तक की अवधि के लिए घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ लिया है जो सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ भारत को दिए गए निर्यातों की अवधि से तुलनीय है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं, कि सम्बद्ध वस्तु की उत्पादन लागत से सकेत मिलता है कि घरेलू बिक्री कीमतें व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में प्राप्त कीमतें हैं, जैसा कि जांच की अवधि के दौरान दावा किया गया था । तथापि प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजन के लिए इस उत्पादन लागत पर विचार किया है ।

अतः अंतिम निर्धारण होने तक प्रारम्भिक निर्धारण के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी ने *** डालर/डीएमटी के रूप में सामान्य मूल्य का सदर्भ लिया है।

ख. निर्यात कीमत

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने *** डालर/डीएमटी के रूप में कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत दी है। निर्यातक ने मै० ट्राइकोन एनर्जी लि०, यूएसए के लिए निर्यात कीमत दी है जिसने बाद में जाच की अवधि में भारत को सम्बद्ध वस्तु का निर्यात किया है। इसके अतिरिक्त मै० हानबरा कारपोरेशन ने जो कि मै० हानवाह कैमिकल कारपोरेशन का व्यापारिक सहभागी है के माध्यम से निर्यात किए गए हैं। निर्यातक ने *** डालर/डीएमटी की सीमा तक मै० हानबरा कारपोरेशन के लिए छूटो/कमीशन के कारण समायोजन का दावा किया है। प्राधिकारी ने मै० ट्राइकोन इन्र्जी लि०, यूएसए द्वारा मै० नालको जा भारत में सम्बद्ध वस्तु का आयातक है, जिन्होंने जाच की अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु की सीआईएफ कीमत उपलब्ध की है, द्वारा किए गए निर्यातों को सह सम्बद्ध किया है। प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण होने तक अंतिम निर्धारण के प्रयोजन के लिए नालको की निविदा के अनुसार बिक्री के सबंध में छूटो, समायोजन तथा मै० ट्राइकोन के लिए पिछली सौदा बिक्रियो पर *** डालर/डीएमटी की सीमा तक समायोजन पर विचार किया है।

कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत *** डालर/डीएमटी बैठती है।

ग. कोरिया गणराज्य के असहयोगी उत्पादको/निर्यातकों का निर्धारण

क. सामान्य मूल्य

प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै० हानबरा कैमिकल कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य को छोड़कर किसी अन्य निर्यातक ने जाच के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया। इस असहयोग के मद्दे नजर, प्राधिकारी ने उत्पादन की सर्वोत्तम मानकीकृत लागत का सदर्भ लेते हुए याचिकाकर्त्ताओं द्वारा दिए गए आकड़े के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

प्राधिकारी ने ऐसे उत्पादको/निर्यातको के लिए *** डालर/डीएमटी के रूप में सामान्य मूल्य का सदर्भ लिया है।

ख. निर्यात कीमत

प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआई एड एस के आकड़े कोरिया गणराज्य से 56 मी० टन तक के आयातों का संकेत करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक आयातक अर्थात् मै० नालको ने कोरिया गणराज्य से 6270.43 मी० टन तक के आयात को बताते हुए उत्तर दिया। अतः

डीजीसीआई एंड एस द्वारा दी गई सूचना में आयात के पूरे आंकड़े नहीं दिए गए हैं और वह सबसे कम तथा सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना है। अतः मै0 हानवाह कैमिकल कारपोरेशन की सीआईएफ कीमत का संदर्भ असहयोगी निर्यातकों के लिए भी लिया गया है। निर्यात कीमत पर समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, पत्तन तथा अंतर्देशीय भाड़े पर क्रमशः *** डालर/एमटी, *** डालर/एमटी/, *** डालर/एमटी, *** डालर/मी0 टन और *** डालर/डीएमटी तक के समायोजनों विचार किया गया है जो सूचना याचिकाकर्त्ताओं और सहयोगी निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित है। कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत *** डालर/डीएमटी बैठती है।

5. पाटन-सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच तुलना:-

तुलना से संबंधित नियम निम्नानुसार है:

पाटन मार्जिन निकालते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात और सामान्य मूल्य के बीच एक उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के एक समान स्तर पर सामान्यता कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथा संभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर कीमत तुलनीयता पर प्रभव डालते हैं उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण दोष के आधार पर उचित छूट दी जाएगी। उक्त अंतर में बिक्री की शर्तें कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, भौतिक विशेषताएं तथा अन्य ऐसे अंतर शामिल हैं जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।

प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए जांच की अवधि में भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना भारत औसत कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के साथ की है।

निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार है :-

क्र.सं.	निर्यातक/उत्पादक	कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत	निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में पाटन मार्जिन
1.	कोरिया गणराज्य		
	1. हानवाह कैमिकल कारपोरेशन	****	बहुत कम
	2. अन्य उत्पादक/निर्यातक	****	53.22
2.	चीन जनवादी गणराज्य		
	1. मै0 खलेर शंघाई कैमिकल कं.लि.	****	74.02
	2. अन्य उत्पादक/निर्यातक	****	80.03

6. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

उपरोक्त नियम-11, अनुबंध-11 के तहत जब क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में "..... पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा।" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, कीमत वृद्धि में अन्यथा रुकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए हम उक्त नियमावली के अनुबंध-11 (iv) के अनुसार ऐसे संकेतकों पर विचार कर सकते हैं जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक लाभ प्रदत्ता, निवल बिक्री प्राप्त, डम्पिंग की मात्रा तथा मार्जिन आदि।

जहां तक क्षति के खतरों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों में निम्नानुसार कहा गया है:-

"वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों के आधार पर किया जाएगा और नकी केवल आरोप, कल्पना अथवा परीक्षा संभावना के आधार पर। परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली ऐसी किसी स्थिति का स्पष्ट तौर पर अनुमान लगाया जाना चाहिए और ऐसी स्थिति आसन्नवर्ती होनी चाहिए जिसमें पाटन से क्षति पहुंचेगी। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में आकलन करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित कारकों पर विचार करेगा:-

(क) भारत में पाटित आयातों की अत्यधिक वृद्धि पर जो पर्याप्त रूप से बढ़े हुए आयातों की संभावना को दर्शाती है।

(ख) निर्यातक के पास मुक्त रूप से निपटान योग्य पर्याप्त क्षमता या उसकी क्षमता में असांनवर्ती वृद्धि जो किन्हीं अतिरिक्त निर्यातों को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पर्याप्त रूप से बढ़े हुए पाटित निर्यातों की संभावना को प्रदर्शित करती हो।

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर किए जा रहे हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर पर्याप्त नयूनकारी या ह्रासकारी प्रभाव पड़ेगा तथा इससे आगे और आयातों की मांग में वृद्धि की सम्भावना बनेगी, और

(घ) वस्तुओं के स्टॉक की जाच की जा रही है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विभिन्न हितवद्ध पक्षों ने उल्लेख किया है कि ऐसा करना जरूरी है कि क्लोरीन और हाइड्रोक्लोरिक एसिड के साथ-साथ कार्बिक सोडा की कीमत पर विचार किया जाना चाहिए। इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि भारत में कार्बिक सोडा के घरेलू उत्पादक पुरानी प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहे हैं और बिजली की लागत के कारण उत्पादन की अधिक लागत आती है। नालको का भारत के लिए अधिक अंतर्देशीय भाड़े के मुद्दे का भी उल्लेख किया गया है।

आगे यह भी उल्लेख किया गया है कि भारत में अधिक क्षमता के कारण घरेलू उत्पादकों की क्षति हो रही है। यह भी अनुरोध किए गए हैं कि समस्त विश्व में क्लोरीन प्रमुख उत्पाद है और जबकि भारत में कार्बिक सोडा प्रमुख उत्पाद है। प्राधिकारी ने उपर्युक्त अनुरोधों को नोट करने के बाद यह माना है कि विभिन्न घरेलू उत्पादों के लिए क्षति रहित कीमत का भूल्याकन सम्बन्धित उत्पादों से बिक्री प्राप्ति पर समुचित विचार करने के बाद किया गया है। इसके अतिरिक्त अकुशलताओं को दूर करने के लिए प्राधिकारी ने कच्चे माल, उपयोगिताओं आदि के उपयोग की सर्वोत्तम पद्धतियों को मानकीकृत तथा बैच मार्क भी किया।

जहां तक क्षति का सम्बन्ध है जो भारत में उत्पादन की अधिक लागत के कारण हो सकती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय पाटनरोधी नियमों के तहत कम शुल्क के नियम का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त किसी भी स्थिति में पाटनरोधी शुल्क पाटन मार्जिन से अधिक नहीं हो सकता है। यदि ऐसी स्थिति बनती है जिसमें घरेलू उद्योग को हुए क्षति पाटन मार्जिन से अधिक हो जाती है तो इसका पाटनरोधी नियमों में निश्चित रूप से निराकरण नहीं है।

तथापि उपर्युक्त के बावजूद प्राधिकारी घरेलू उत्पादकों की उत्पादन की लागत पर समुचित विचार करते हैं और क्षति रहित कीमत का निर्धारण करने के लिए उसके मानकीकृत करते हैं।

भारत अंतर्देशीय भाड़े के कारण हुई क्षति का सम्बन्ध है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि क्षतिरहित कीमत के साथ पाटन वस्तु पहुँच मूल्य की तुलना कारखाना द्वार पर की जाती है जिसमें अंतर्देशीय भाड़ा शामिल नहीं होता है। अतः आयातक अर्थात् मै0 नैल्को पाटन रहित कीमत पर सामग्री का आयात कर सकते हैं और यदि घरेलू उत्पादक भाड़े पर विचार करते हैं तो भारत में वे संभवतः ऑर्डर नहीं दे सकते हैं।

जहां तक पुरानी प्रौद्योगिकी के प्रयोग के बारे में किए गए अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में विभिन्न घरेलू उत्पादक तीनो प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर रहे हैं और उत्पादन लागत के अकुशलताओं पर क्षति रहित कीमत का निर्धारण करते समय समुचित रूप से विचार किया जाता है। जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा क्लोरीन पर अलग से याचिकाओं को दायर किए जाने को सम्बन्ध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सम्बद्ध उत्पाद की यदि पाटनरोधी जाव की जाती है तो इसकी उत्पादन की लागत और क्षति रहित कीमत पर सामान्य लेखा तथा लागत सिद्धांतों के अनुसार समुचित रूप से विचार किया जाएगा।

याचिकाकर्ता का समर्थन करने वाले उत्पादकों के विषय में प्राधिकारी निम्नलिखित आर्थिक मानदंडों को नोट करते हुए यह पाते हैं:-

	1999-00	2000-01	2001-02
क्षमता (मी.टन)	830000	830000	842500
उत्पादन (मी.टन)	712146	730625	711556
क्षमता उपयोग(%)	85.8	88.03	84.46
विक्रय (मी.टन)	588455	583221	544046
निवल बिक्री प्राप्ति (मी.टन)	****	****	****
उत्पादन लागत (रु.मी.टन)	****	****	****
आयात सभी देशों (मी.टन)	86743	73622	93291
चीन से आयात (मी.टन)	19	17	26505
कोरिया से आयात (मी.टन)	21	33	12569
संबद्ध देशों से आयात का बाजार भाग(%)	05	07	41.88
मांग (मी.टन)	1477061	1488052	1510619

उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि:-

(क) घरेलू उद्योग की बिक्रियां 1999-2000 में 588455 से घटकर 2000-2001 में 544046 मी.टन रह गई हैं।

(ख) यह भी देखा गया है कि क्षमता उपयोग जो 1999-2000 में 85.8% था 2001-2002 में गिरकर 84.46% हो गया है।

(ग) घरेलू उद्योग का उत्पादन जो 1999-2000 में 712146 मी.टन था, 2000-2001 में घटकर 711556 मी.टन रह गया है।

(घ) हालांकि 1999-2000 की तुलना में निवल बिक्री प्राप्ति **** मी.टन से बढ़कर 2001-2002 में **** मी.टन हो गई हैं, फिर भी इस अवधि में उत्पादन मूल्य में बढ़ोतरी हुई है। फिर भी, पाटित आयातों के कारण कीमतों में कटौती की वजह से निवल बिक्री प्राप्ति, जांच की अवधि के लिए, क्षति रहित कीमत से कम रही है। जिसके कारण गैर क्षतिकारक दर की तुलना में निवल बिक्री प्राप्ति में कमी आई है।

7. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मै. नालको द्वारा यह संकेत दिया गया है कि पाटनरोधी शुल्क उनकी निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित कर सकते हैं। इस संदर्भ में प्राधिकारी का यह मानना है कि एक्जिम नीति के अंतर्गत कई योजनाएं हैं जो निर्यात उत्पान के लिए माल का आयात बिना किसी पाटनरोधी शुल्क लगाए, करने की अनुमति देती है।

प्राधिकारी का यह भी मानना है कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग का नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः बहाली करना है, जो कि देश के सामान्य हित में है।

प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों के तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन उपायों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देशों आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

3. पहुंच मूल्य

इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1962 के अंतर्गत सीमा शुल्क द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा तथा उसमें सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्क के लागू स्तर शामिल होंगे।

घ. निष्कर्ष

उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात यह पाया गया है कि:-

क) संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से (मै. हनवा केमिकल कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य को छोड़कर) निर्यातित संबद्ध वस्तु का, सभी रूपों में इसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर भारत को निर्यात किया गया है।

ख) संबंधित देश से पाटित संबंधित वस्तु की कम पहुंच कीमतों के कारण कीमत में हुई कमी के कारण घरेलू उद्योग को प्राप्त कम निवल बिक्री वसूली (एन एस आर) के रूप में उसे वास्तविक क्षति हुई है जिससे उसे वित्तीय घाटा हुआ है ।

ग) घरेलू उद्योग को क्षति संबंधित देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण हुई है ।

घ) प्राधिकारी संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाले संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ।

ड.) पाटन के मार्जिन के बराबर पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करना आवश्यक समझा गया है ताकि घरेलू उद्योग की परिणामी क्षति को समाप्त किया जा सके । तदनुसार यह प्रस्ताव किया गया है कि अंतिम निर्धारण होने तक सीमाशुल्क टैरिफ के सीमाशुल्क उप शीर्ष 2817.0001 के अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाले संबद्ध देशों के मूल अथवा वहां से निर्यातित, मै. हानवा केमिकल कारपोरेशन को छोड़, संबद्ध वस्तु के आयात पर इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से नीचे दी गई तालिका के तीसरे कॉलम में दिए गए मूल्य और डालर मी.टन में संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य के अंतर के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

क्र. सं.	निर्यातक/उत्पादक	राशि (अमरिकी \$ /मी.टन)
1	मै. हानवा केमिकल कारपोरेशन को छोड़ कोरिया गणराज्य के सभी उत्पादक/निर्यातक	353.4
2	चीन जन गणराज्य	
	1. मै. फ्लोर शंघाई केमिकल कंपनी लि.	362.34
	2. अन्य उत्पादक/निर्यातक	362.34

ड. आगे की प्रक्रिया:-

प्राथमिक जांच परिणामों को अधिसूचित कर दिये जाने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

- क प्राधिकारी इन जांच परिणामों पर सभी हितबद्ध पक्षकारों के विचार आमंत्रित करते हैं जिन पर अंतिम जांच परिणामों के लिए विचार किया जाएगा ।
- ख संबंधित ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से पत्र लिखकर अपने विचार पत्र जारी होने की तारीख से चालीस दिन के भीतर भेजने को कहा जा रहा है । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिन के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है ।
- ग जहाँ तक आवश्यक समझा जायेगा प्राधिकारी सत्यापन भी करेंगे ।
- घ प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक सुनवाई का भी अवसर प्रदान करेंगे जिसके लिए तारीख और समय की सूचना ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को अलग से दी जायेगी ।
- ड. प्राधिकारी अंतिम जांच परिणाम घोषित करने से पूर्व आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे ।

एल.बी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 21st September, 2002

Preliminary Findings

Sub: Anti-Dumping Investigation concerning imports of Caustic Soda from People's Republic of China and Korea RP.

No.14/10/2002-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof

A. PROCEDURE

- 1 The procedure described below has been followed with regard to the investigation
 - i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from M/s Alkali Manufacturers Association of India (AMAI) (hereinafter referred to as petitioner) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Sodium Hydroxide commonly known as Caustic Soda (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from People's Republic of China and Korea RP (hereinafter referred to as subject countries) The petition was also supported by M/s DCW Limited, Mumbai, M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Limited, Vadodara, Gujarat, M/s Gujarat Alkalies, Dahej, M/s Search Chem Industries Limited, Mumbai, M/s Indian Rayon and Industries Ltd, Veraval, Gujarat, M/s Grasim Industries, Nagda, M P, M/s SIEL Chemical Complex, Patiala, Punjab, M/s Bihar Caustic & Chemicals, Ltd, Jharkhand, M/s Jayshree Chemicals Limited, Orissa, M/s Andhra Sugars Limited, Tanaku, Bilt Chemicals, DCM Sriram, New Delhi and Punjab Alkalies & Chemicals, Chandigarh
 - ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner The petition was, therefore, considered as properly documented
 - iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigation against imports of subject goods from People's Republic of China and Korea RP The authority notified the Embassies of People's Republic of China and Korea RP in New Delhi about the receipt of

dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules.

- iv) The Authority issued a public notice dated 14.5.2002 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under custom Code 281511 and 281512 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 (28151101, 28151102 and 28151200 of ITC) originating in or exported from People's Republic of China and Korea RP.
- v) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporters (whose details were made available by petitioner) and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rule 6(2):
- vi) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2).
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.
- viii) The Authority provided a copy of the petition to the known exporters and the Embassy of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential petition was also provided to other interested parties, wherever requested.
- ix) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4):
 - 1. M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP
 - 2. M/s Shanghai Chlor Alkali Chemical Co. Ltd., PR China
 - 3. M/s Tricon Energy Limited, USA
- x) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with **Rule 6(2)** with a request to advise all concerned exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the known exporters was also sent to the Embassy of the subject countries in accordance with Rule 6(3).
- xi) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods in accordance with Rule 6(4):
 - 1. M/s Abhey Chemicals Ltd., Baroda
 - 2. M/s Albright Wilson Chemical Ltd., Mumbai
 - 3. M/s Arvind Mills Ltd., Ahmedabad
 - 4. M/s Birla Cellulose Ltd., Bharuch

5. M/s Central Pulp Mills Ltd., Delhi
6. M/s Deepak Nitrite Ltd., Nandesari
7. M/s Godrej Soaps Ltd , Mumbai
8. M/s Gujarat Electricity Board, Vadodara
9. M/s Gujara Narmada Fertilizers Co Ltd., Bharuch
10. M/s Gujarat State Fertilizers & Chemicals Ltd ,Vadodara
11. M/s Hindustan Lever Ltd , Mumbai
12. M/s ICI India Ltd., Valsad
13. M/s Indian Farmer Fertilizers Coop. Ltd., Gandhinagar
14. M/s Indian Oil Corporation Ltd , Vadodara
15. M/s Indian Petrochemicals Corporation Ltd., Vadodara
16. M/s Jaysynth Dyechem Ltd., Mumbai
17. M/s Link Pharma Ltd., Baroda
18. M/s Meghmani Organics Ltd., Ahmedabad
19. M/s Narmada Chematur Petrochemicals Ltd., Bharuch
20. M/s Nirma Ltd., Ahmedabad
21. M/s PAB Chemicals (P) Ltd., Baroda
22. M/s Rama News Prints & Papers Ltd , Surat
23. M/s Rubamin Ltd , Baroda
24. M/s SABERO Organics Ltd , Mumbai
25. M/s Torrent Gujarat Bio-tech Ltd., Baroda
26. M/s Transpek Industries Ltd , Vadodara
27. M/s National Alumunium Ltd., Bhubaneswar, Orissa
28. M/s C J Shah and Company, Mumbai
29. M/s Cyanides & Chemicals Company, Mumbai
30. M/s Demosha Chemicals Limited, Mumbai
31. M/s Transpek Silox Industires Limited, Gujarat
32. M/s Deepak Nitrite Limited, Pune
33. M/s Hitsu Industries Ltd., Gujarat

Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following exporters/producers:-

1. M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP
2. M/s Shanghai Chlor Alkali Chemical Co Ltd , PR China
3. M/s Tricon Energy Limited, USA

Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following Importers/user Associations

- 1 M/s Deepak Nitrite Limited, Pune
2. M/s Transpek Silox Industires Limited, Gujarat
3. M/s National Alumunium Ltd., Bhubaneswar, Orissa
- 4, M/s Birla Cellulose Ltd., Bharuch

xii) Information regarding injury was sought from the petitioner(s), which was also furnished by the petitioner. The injury parameters of the following domestic producers were furnished:-

1. M/s DCW Limited, Mumbai

- 2 M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd , Vadodara
 3. M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd , Dahej
 - 4 M/s Search Chem Industries Ltd , Dahej
 - 5 M/s Grasim Industries
 6. Siel Chemicals Complex, Patiala, Punjab
 - 7 M/s Bihar Caustic & Chemicals Ltd Bihar
 8. M/s Jayshree Chemicals Ltd, Orissa
 - 9 M/s Shriram Alkali & Chem
 - 10 M/s Andhra Sugars Ltd , Kovvur Uni
 - 11 M/s Andhra Sugars-Saggonda Unit
- xiii) Additional information from M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP was also sought, which was provided
- xiv) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- xv) Cost investigation was also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner. The cost of production data of the following companies were considered and examined appropriately:--
1. M/s DCW Limited, Mumbai
 2. M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd., Vadodara
 - 4 M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd , Dahej
 5. M/s Search Chem Industries Ltd , Dahej
 - 6 M/s Grasim Industries
 6. Siel Chemicals Complex, Patiala, Punjab
 - 7 M/s Bihar Caustic & Chemicals Ltd Bihar
 8. M/s Jayshree Chemicals Ltd, Orissa
 9. M/s Shriram Alkali & Chem.
 10. M/s Andhra Sugars Ltd., Kovvur Uni
 11. M/s Andhra Sugars-Saggonda Unit
- xvi) ****in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules
- xvii) The last date of submission was 24th June, 2002. On request of interested parties, extension of time was granted upto 10th July, 2002. Response of M/s Shanghai Chlor Alkali Chemical Co. Ltd., exporter from PR China was received on 22nd July, 2002 which has also been considered by the Designated Authority.
- xvii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 2001 to 31st March, 2002 i.e. the period of investigation (POI).

B. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

1. PETITIONER'S VIEWS

a) PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- (i) The name of the product being dumped into the Indian market is Sodium Hydroxide generally known as Caustic Soda. Caustic Soda is chemically known as NaOH. It is an Inorganic Chemical classified under Chapter 28 of the Custom Tariff Act. Caustic Soda is a soapy, strongly alkaline odourless liquid widely used in diverse industrial sectors, either as a raw material or as an auxiliary chemical. It is mainly used in the manufacture of pulp and paper, newsprint, viscose yarn, staple fibre, aluminum, cotton, textiles, toilet and laundry soaps, detergents, dyestuffs, drugs and pharmaceuticals, vanaspati, petroleum refining etc. Caustic soda is produced in two forms- lye and solids. Solids can be in the form of flakes, prills, granules or any other form. All forms of caustic soda are the subject matter of the present petition.

Caustic Soda causes burn on contact with body tissues. Contact with eyes causes severe damages, swallowing results in severe injury. Caustic soda mist causes momentary stinging sensation in nose and throat. It reacts with strong acid very violently under boiling phenomena.

- (ii) Caustic Soda is a basic product very widely used in diverse industrial sectors, either as a raw material or as an auxiliary chemical. It is mainly used in the manufacture of pulp and paper, newsprint, viscose yarn, staple fiber, aluminum, cotton, textiles, toilet and laundry soaps, detergents, dyestuffs, drugs and pharmaceuticals, vanaspati, petroleum refining.
- (iii) Three technologies are available world over for production of Caustic Soda. The Indian industry is producing Caustic Soda using all the three processes. The three processes are:
- ❖ Mercury Cell Process
 - ❖ Diaphragm Process
 - ❖ Membrane process
- (iv) Even though all three technologies are being used in India for manufacturing Caustic Soda, Mercury Cells technology and Membrane Cells technology are being widely used in India.
- (v) Indian Caustic Soda industry has been largely able to meet entire requirement of Caustic Soda in India. The Indian industry was self-sufficient in its requirement ever since 1975. As mentioned in previous para, Caustic Soda has been in the list of imports permitted under OGL particularly for actual users since 1980-81. The imports were, however, limited because of the pricing policy of the Indian industry. The capacities installed by the producers in China and Korea are far higher than the requirement in their own country. Further with the imposition of anti-dumping duties on a number of other countries, the producers in the subject

countries are finding it lucrative to export to India. The excess capacities in these Countries have put tremendous pressure on the producers to look for markets outside their country. Resultantly, the exporters from China and Korea have quoted very low prices for exports to India. It would also be relevant to point out that the producers in these countries have at times not directly offered for supplies to India. Substantial volumes have been offered by traders in third countries for supply of Caustic Soda originating in these Countries. The offers being by traders, naturally, these traders have taken care of their margins also. The prices quoted by the producers in these Countries are, therefore, still lower. The petitioners believe that the prices offered are far below the associated cost of production. Thus, the exporter from China and Korea has resorted to dumping of Caustic Soda in the Indian market.

b) DOMESTIC INDUSTRY

- (i) DCW Limited a multi product company involved in production of various products such as Soda Ash, Caustic Soda (Lye, Solid and flakes), Calcium Chloride, Soda Bicarbonate, Aluminum Bicarbonate, Salt etc.
- (ii) Gujarat Alkalies & Chemicals Limited is also a multi- product company involved in production of wide range of products which include Caustic Soda, Chlorine Gas, Hydrochloric Acid, Hydrogen gas, Sodium Cyanide, Sodium Hydrochloride, Sodium Ferrocyanide, Methyl Chloride, Chloroform, Carbon Tetrachloride, Potassium Hydroxide, Potassium carbonate, Phosphoric Acid, Hydrogen Peroxide etc.
- (iii) Search Chem. is a subsidiary of United Phosphorus Limited. SCIL is a multi product company involved in production of various chemicals such as Yellow Phosphorus, Iso Propyl Bromide, Thio di Phenol, Methylene Glutaronirite, Acetyl Bromide, Para Nitro Benzyl Alcohol and Triphenyl Phosphorus Thionate etc. The company is also involved in production for Power i.e. Electricity
- (iv) Grasim Industries Limited is a flagship company of Aditya Vikram Birla Group. Grasim Industries Limited is a multi product, multi location and well diversified company involved in production of various products such as Viscose Staple fibre, White Cement, Sulphuric Acid, Carbon Domestic industry Sulphate, Rayon grade pulp, Paper, Stable Bleaching Powder, Man Made Fibre Fabrics, Man Made Fibre Yarn, Gray Cement, Articles of Cement Concrete, Industrial Machinery, Poly Aluminum Chloride, Chloro Sulphonic Acid, and Sponge iron, etc.
- (v) Andhra Sugars Limited is a multi product, multi location company involved in production of Sugar, Acetic Acid, Industrial Alcohol's, Sulphuric Acid, Superphosphate, Chlorosulphonic Acid, Oleum, Aspirin, Carbon Dioxide, Alum, Diffusers, Chemical Equipment, Sugar Factory Boiling House Equipment's, Unsymmetrical Dimethyl Hydrazine, Cotton Seeds etc, Richburn and oil cakes processing, Refinery, Hydrogenation of oils, cattle and poultry feed, wind power, electricity, etc.
- (vi) Bihar Caustic, Jayshree Chemicals, and SIEL (Chemical Complex) are involved in production of Caustic Soda and its by-products only.

c) **LIKE ARTICLE**

- (i) There is no difference in the Caustic Soda produced by the Indian industry and imported from China and Korea. Caustic Soda produced by the Indian industry in general and the participating companies in particular is comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, raw material composition, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Caustic Soda produced by the domestic industry should be treated as like article to Caustic Soda imported from subject countries within the meaning of the anti-dumping Rules.
- (ii) As discussed earlier in this petition, world-over, Caustic Soda is being produced by three processes. Indian industry is also producing Caustic Soda using all the three processes. However, difference in process does not mean difference in the product in terms of its physical & chemical properties, product specifications, marketing, pricing, consumer perceptions, tariff classification, etc.

d) **DUMPING**

- (i) Producers in from China and Korea are involved in dumping the goods in India. The dumping has been largely resorted through traders in third Countries. However, the supplies were planned directly from these Countries.
- (ii) Caustic Soda is a basic inorganic chemical and is used by a number of industries as raw material. It is primarily traded in bulk quantity and, therefore, the shipments are normally directly from the countries of origin. However, in the instant case and particularly in the tender floated by NALCO for purchase of very significant volumes, traders in third Countries have participated wherein the supplies have to be made directly from the subject countries.
- (iii) NALCO had recently floated a tender for 100000 MT of Caustic Soda. A number of exporters participated in the tender floated by NALCO. The quantity of the tender floated is very significant.
- (iv) Exporters from subject countries as well as other country against which investigation is under progress or which are now attracting duties participated in the tender. Details of the tender floated, exporter's name, agent's name, quantity offered, price offered, revised price offered, negotiated price at which order has placed by NALCO, landed value of imported material etc. are given in the "tender detail"..
- (v) It may be seen that NALCO has placed its orders for 87000 MT, which is more than combined imports of Caustic Soda in a year in India.
- (vi) In addition to China and Korea RP, exporters and producers from Indonesia are also dumping Caustic Soda in the Indian market. It is the market information of the domestic industry that around 3500 MT material is shortly landing the custom

port in India. It would be worthy to mention here that earlier the domestic industry had filed a petition for imposition of Anti Dumping Duty *inter-alia* on Indonesia. However, the investigations were not initiated against Indonesia. Getting benefit of the situation i.e. imposition of Anti Dumping Duty against some other countries and no duty on imports from Indonesia, the producers and exporters from Indonesia have now found this a good opportunity to dump the material at times of serious decline in the export price from several countries and faced with surplus unutilized capacity.

- (vii) Efforts were made to get information on prices at which Caustic Soda is being sold by the exporters from Korea RP in their domestic market. We have also made efforts to get price lists of the exporters or price evidence for their exports to other countries or any other information from the published sources. We have been able to get information about the prices in domestic market of Korea RP from a leading international Journal. Reliance is being placed on the information published in the Chlor Alkali in this regard.
- (viii) Chlor alkali regularly reports the prices of Caustic Soda in the domestic market in Korea . Thus, considering the prices given in the Chlor Alkali, calculation of normal value in Korea RP have been done.. The normal value on this basis comes to US \$ 227 pmt in case of Korea RP.
- (ix) Massive dumping of Caustic Soda in the Indian market is causing material injury to the domestic industry. **Further, the order placed by NALCO would cause further material injury to the domestic industry, as may be seen from the para on "Evidence of Injury".**

e) INJURY

-) It is understood that the capacity of producers in subject countries is far in excess of the domestic demand in their respective markets. The huge volume of material offered to NALCO is a clear evidence in this direction. The producers are under tremendous pressure to sell the material. Vast Indian market is naturally quite lucrative to the exporters at the cost of Indian Producers. It is understood that capacity of Chinese Industry alone is more than 8 million MT, which is much more than the demand of Caustic Soda in China.
- (i) The exporters are understood to have booked orders for significant quantity through their Indian agent/s. In fact, orders for 87000 MT have already been placed by NALCO, which alone is more than average annual imports of Caustic Soda in India as also capacity of a number of individual producers in India.
- (ii) Our market intelligence suggests that a lot of dumped material is under transit and shipment is expected very shortly. Should the present trend of order booking continue, the domestic industry would loose significant sales.
- (iv) The landed price of the imported material is significantly below the selling prices of the domestic industry. The volume of material for which order has booked is very significant in terms of demand of the subject product in India. Moreover, what should be appreciated is that should the producer in subject countries

continue to sell the material at present prices in the Indian market, the domestic industry would not be able to hold even the present prices

- (v) The landed price of imports is significantly below the full cost of production and fair selling price of the domestic industry. The domestic industry would be forced to face cash losses in case it has to sell at matching prices. The order placed by NALCO has had severe depressing effect on the prices in the market, more so in the post proposed investigation period.
- (vi) The dumping margins are very significant. The price at which material is being exported does not permit recovery of even cost of production, let alone profits on huge investments.
- (vii) In the instant case -
 1. There is a history of dumping. Earlier the domestic industry has been injured from dumping of Caustic Soda in India by the exporters/ producers from Saudi Arabia, USA, Japan, Iran and France. The domestic industry requested the Designated Authority to impose Anti Dumping Duty. The Designated Authority after a detailed investigation, recommended imposition of Anti Dumping Duty, which have since been imposed by the Central Government. After imposition of Anti Dumping Duty against these countries, producer/exporter from Qatar started dumping Caustic Soda in India. The domestic industry requested the Designated Authority to impose Anti Dumping Duty against Qatar also. The Designated Authority after preliminary investigations, recommended imposition of provisional duty. After initiation of the investigation against Qatar, producers and exporters from subject countries started dumping the material. Thus, there is a clear history of dumping of Caustic Soda in India by now.
 2. The importers are well aware that the price at which the material is being exported from subject countries is a dumped price as the price is significantly below the reference price fixed by the Designated Authority in the earlier investigation. Evidently, the importers and consumers are well aware that the material is being imported at dumped prices.
 3. The injury is being caused by the producers/exporters from subject countries in a short period. Immediately after imposition of duty against Saudi Arabia, USA, Japan, Iran, France and Qatar the producer in subject countries started dumping. Our market intelligence suggests that the exporter have booked huge orders, which are under process of exportation.
 4. Sales to the tune of about 87,000 MT have been lost by the domestic industry in a single order;
- (viii) The Sales volumes of the participating companies as provided to the Authority indicate that sales of the participating companies, which has been increasing till 2000-01 declined in the April-December 2001. Further, the sales volumes are likely to remain low, considering the significant volume of sales lost by the domestic industry.

- (ix) The imports of Caustic Soda from the subject countries have increased dramatically. From a situation of off-and-on imports, the imports made by NALCO alone would be more than the combined volume of imports from all the countries and capacities of many a producers in the Country. The volume of imports is contained in Proforma IV-A. Further, dramatic increase in imports has resulted in significant increase in share of imports in (a) imports of Caustic Soda in India; and (b) demand of Caustic Soda in India.
- (x) Production of the participating companies are given in Proforma IV A. It may be seen that the production of the participating companies, which has been increasing till 2000-01 declined in the April-December 2001. Moreover, the petitioners submit that the change in the production level alone may not indicate injury to the domestic industry. More important parameter is the price at which offers for sale have been made by the exporters from the subject countries and the prices at which the domestic industry has been forced to sell or may be forced to sell in view of the dumped imports from the subject countries.
- (xi) Caustic Soda industry has provided very large-scale employment in the Country. Any sickness in the industry would have crippling effect on the employment
- (xii) The petitioners have lost significant sales due to the dumped imports. The NALCO order lost is a significant loss of sales for the domestic industry.
- (xiii) Profitability of the participating companies is given in Proforma A. It may be seen that the domestic industry is making huge losses.
- (xiv) Imports of Caustic Soda from Other Countries (excluding countries already attracting anti-dumping duties or countries against which investigation is under progress), are de-minimis or are at a price not causing any injury to Indian industry.
- (xv) Demand of the Caustic Soda is increasing continuously. In fact, the demand has registered significant growth over the past five years. The domestic industry has sufficient capacity to meet the requirement of the Country. The changes in the demand have, therefore, not contributed to any injury to the domestic industry
- (xvi) Material injury has been caused to domestic industry from dumped imports from the subject countries. As stated elsewhere in the petition also, the domestic industry is producing Caustic Soda for the several years. The technology adopted by the domestic industry is comparable to the technology adopted by the exporters. There is no significant difference in the manufacturing process. It is submitted that the lowering of prices by the exporter from the subject countries alongwith the dumped imports from Other Countries (which are already attracting duties are against which the investigations are in progress) is the reason for the present injury to the domestic industry.

2 IMPORTER'S VIEWS

1. M/S NALCO

a) PRODUCT UNDER CONSIDERTION

- (i) MANUFACTURE OF VALUABLE BY PRODUCTS ALONGWITH CAUSTIC SODA - The Petition deliberately does not disclose the fact that the process of manufacturing Caustic Soda also leads to the manufacture of Chlorine and Hydrochloric Acid. The Petition itself admits that the Petitioner is engaged in protecting the interests of the domestic producers of not only Caustic Soda but also Chlorine, which goes on to show that there is a substantial monetary benefit obtained from the production of Chlorine. This is neither reflected in the particulars furnished by the Petition with respect to the cost of production being apportioned between the two products nor is the realisation resulting from the Chlorine mentioned therein. It is submitted that the cost realisation of the Chlorine is substantial and any Petition with respect to Caustic Soda would be incomplete without the examining the Chlorine production as regards both determination of dumping and injury. This fact is also important as the description of the domestic industry expressly specifies that all the companies are multi product companies or are engaged in the production of Caustic Soda by products. The implications on the cost of production are dealt with in greater detail subsequently in the present response.
- (ii) NALCO verily believes that the Petitioner has also filed a petition for imposing Anti Dumping Duty on Chlorine. It is further verily believed that the domestic industry has sought to make out a case of dumping and injury therein by attributing the entire production cost towards production of Chlorine. In light of the aforesaid, it is respectfully submitted that the Hon'ble Authority in accordance with its powers under R* 8 of the Anti Dumping Rules, 1995 should seek a declaration on affidavit with respect to Chlorine petition or through such other appropriate means from the Petitioner, in order to verify the accuracy of the information furnished the in present Petition. The Hon'ble Authority has in the past sought such an assurance in the investigations initiated with respect to the import of **Iso Propyl Alcohol, Case No. 12/1/ 2000 DGAD.**

b) DOMESTIC INDUSTRY

- (i) The inclusion and support of the domestic producers mentioned in the Petition does not disclose the true factual picture with respect to the act solely responsible for the present Petition i.e. the NALCO tender. An examination of the NALCO tender in question (**the Tender**) and the other tenders of NALCO in the past would clearly disclose the absence of any cause of action in favour of the domestic producers specifically supporting in the Petition. The industries expressly supporting the present Petition have not in past participated in the tenders of NALCO due the cost logistics arising from their geographical location. The members of the domestic industry who have participated in the tender process have either insufficient quantities to satisfy the tender quantity or have

expressed their inability to transport the quantity. A detailed description of the logistical problems is set out hereinbelow.

- (ii) NALCO's annual requirement of Caustic Soda for manufacture of Alumina is approx 100,000 DMT on 100% NaOH basis. The Caustic Soda is purchased in lye form with approx 50% NaOH content. As such, total quantity of Liquid Caustic Soda required by NALCO works out to 200,000 MT.
- (iii) The problem associated with supply of caustic soda to NALCO is that its alumina plant is located at Damanjodi, which is at a higher altitude. Therefore the railway does not allow 4 wheel wagons for dispatch to Damanjodi and thus supply can only be made through 8 wheel wagons with air break system. Such wagons being not available with railway, therefore none of the Caustic Soda domestic manufacturers can supply NALCO by rail.
- (iv) Given the peculiar nature of Caustic Soda and as also admitted in Petition i.e. a quantity of Caustic Soda supplied would be twice the amount needed under a tender, at 50% NaOH basis, even supply by road tankers is not an economically viable option. A road tanker can carry only limited quantity of approximately 5 – 6 DMT (10 – 12 Liquid MT Caustic Soda). Therefore, only industries, which are geographically proximate from Damanjodi like M/s Andhra Sugar, M/s Rayalaseema (in Andhra Pradesh) and M/s Jayshree Chemicals in Orissa, are able to use the road route option. Even with respect to the aforesaid industries the quantity supplied are small for reasons mentioned above.
- (v) Accepting larger quantity by road is problematic for unloading at plant given the quantity supplied in a tanker. For supply of 2,000 DMT in a month number of tankers to be handled works out to 400 nos i.e. 16 – 20 tanker a day. As such, accepting more tankers will be physically improbable because for supply by tankers, samples are required to be collected from each tanker and analysed for specification confirmation and weighment. The process of verification is time consuming and involves additional cost for testing.
- (vi) The major supply to NALCO comes through the Vizag port from sea, where it has its own Caustic Soda storage tanks to store approx 30,000 Liquid MT. NALCO uses its own railway tank wagon for transporting Caustic Soda from Vizag to Damanjodi. As regards supply by sea only 2 domestic suppliers namely M/s DCW and M/s SPIC had offered to use the sea route. **It is stated that none of the domestic manufacturers on western coast of India including but not limited to those supporting the Petition have offered to supply Caustic Soda using the sea route to NALCO due to high freight element.** M/s IPCL had once offered to sell Caustic Soda to NALCO subject to the condition that NALCO should arrange for lifting the same from the IPCL plant, which was not acceptable to NALCO given the logistic problems in transportation mentioned above. It is further stated manufacturers on the western coast either do not have arrangements for shipment by sea or sea freight to Vizag and are unable to supply Caustic Soda to NALCO.
- (vii) In light of the aforesaid the Petitioner's true motivation of seeking the support of the domestic producers mentioned is adequately borne out, namely to ride on the shoulders of the industries not actually supplying NALCO and to ensure that the

Petition does not suffer from the lack of numbers required to fall within the definition of domestic industry under R. 2(b) of the *Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (the Anti Dumping Rules)*. The aforesaid rule sets out the definition of "domestic industry" and requires that the domestic producers filing the Petition should constitute **a major proportion of the total domestic production**. Though the domestic producers constitute a major proportion of the domestic production the definition of domestic industry in the facts and circumstances of the present case would have to be determined in accordance with the proviso to the aforesaid rule under sub clause (ii), which reads as follows:

"Provided that in exceptional circumstances referred to in sub rule (3), of Rule 11, the domestic industry in relation to the article in question shall be deemed to comprise two or more competitive markets and the producers within each of such market would constitute a separate industry if-

(i) the demand in the market is not in any substantial degree supplied by the producers of the said article located elsewhere in the industry"

- (viii) Therefore the investigation of the Hon'ble Authority should be confined to the domestic producers actually participating in the NALCO tenders in the past i.e. from 1994-95 to 2001-2002. The capacity utilisation, cost of production and injury determination should be sought specifically from the aforesaid producers. A table listing out the various domestic producers who have supplied/offered to supply NALCO alongwith the quantity offered is provided on confidential basis.

c) **LIKE ARTICLE**

- (i) It is submitted that the Custom Tariff classification deals with that Caustic Soda under Tariff 2815.11 relating to solid Caustic Soda and 2815.12 relates to liquid Caustic Soda. Though in the present petition under Part-1, Para-3, the petitioner has mentioned that Caustic Soda produced in India are predominantly produced by using Mercury cell technology and Membrane cell technology, but the details of these technologies have not been intentionally furnished in the Petition. Whereas the same domestic producers while filing Anti Dumping petition for imposition of Anti Dumping duty on Caustic Soda imports from Qatar had set out the manufacturing process under both the technologies.
- (ii) A perusal of the process description in the earlier petition, discloses that the process of manufacture of Caustic Soda results in the production of three distinct products i.e. Caustic Soda Liquid, Chlorine and Liquid Hydrochloric Acid. It may be mentioned here that for every 1 MT of Caustic Soda manufactured, approximately 0.8 MT of Chlorine is also produced. The Caustic Soda comes out of the process is in liquid form having NaOH concentration of around 47% - 50% and balance is water. Thereafter, liquid Caustic Soda has to be further processed in order to manufacture solid Caustic Soda in the form of Flexes/Pearls. As stated herein above the Petitioner has deliberately not disclosed the fact that the process of manufacture of Caustic Soda, results in the production of two commercially

valuable co-products i.e. Chlorine and Hydrochloric Acid. It is further stated that the Petition does not disclose the additional process involved for converting Liquid Caustic Soda to Solid Caustic Soda with the intention to conceal the actual cost of production of Solid and Liquid Caustic Soda and the Petitioner is put to strict proof thereof.

d) INJURY

- (i) A perusal of the installed capacity & production status given in the Petition at **Annexure-VIII** it may be seen that the 5 parties who are the only participants in NALCO's tenders, are producing almost around 90% of installed capacities. Further it can be seen that these parties have only offered quantities which can satisfy at an average 50% - 60% of NALCO's requirement and they represent hardly 15% of domestic production. Therefore when the parties who can be affected by NALCO's import, are producing above 90% of their installed capacities and not able to offer quantities required by NALCO, it is hard to believe that 'import by NALCO can sustain any material injuries to these industries. Further other parties in the petitions having no interest in NALCO's tender and unable to supply due to logistic problem can by no means be affected by NALCO's import. NALCO reserves its rights to file further submissions when such information is furnished by the industries as indicated.
- (ii) The imports figure indicated in the Petition with respect to Caustic Soda imports in **Annexure-II** and claimed as being ostensibly based on reports of DGCI&S, are denied as being misleading and are quoted out of context. The imports have been considered taking Solid, Flexes and Liquids together whereas it is submitted that these three products are completely different from each other in all aspects. It is further submitted that the manufacturing process, production cost and selling price for these products are different. Furthermore, even the end uses of these products are different. Therefore, considering all these products under a single head for purpose of determining Anti Dumping Duty is not only misleading but also constitutes a misrepresentation. It is stated that NALCO has been only importing Liquid Caustic Soda. In light of the aforesaid it is submitted that each of these products should be considered separately. Therefore their respective importation effect, prices and dumping margin should also be determined separately. It is further submitted that the solid and liquid Caustic Soda have different uses, pricing, consumer perceptions and tariff classifications and cannot be treated as "like articles" under R. 2(d) of the Anti Dumping Rules, 1995.
- (iii) The international price as can be seen from the Chlor-Alkali Report, on which Petition has also placed reliance, shows wide variation in the prices of these products i.e. Solid and Liquid Caustic Soda. For example for the month of April, 2001 in USA the Caustic Soda Liquid price is shown in the range of US\$ 300 – 325 on FOB US Port basis, the Chlorine price under spot market was in the range of US\$ 0 – 40. However, if the pricing position is seen for the month of March, 2002 i.e. the end of investigation period, it shows that the Liquid Caustic Soda price in USA spot market was US\$ 50 – 75 per DMT on FOB US Port basis, whereas the Chlorine spot price was US\$ 80 - 100. Similarly in Europe market, the Caustic Soda price in April, 2001 was in the range of US\$ 325 – 355 per DMT FOB at that time the Caustic Soda Flexes / Pearls price was US\$ 350 – 370

per MT FOB. Whereas in March, 2002, the Caustic Soda Liquid price was in the Europe market was US\$ 90 – 110, whereas Flexes / Pearls price was US\$ 260 – 290 per MT.

- (iv) The above figures show that there can be no comparison between the price of solid Caustic Soda with that of liquid Caustic Soda. Even in liquid Caustic Soda there will be variation in price between Mercury process and Diaphragm process and considering all the prices together to arrive at any decision is totally misleading. The above international price trends shows that when the realization from Caustic Soda is high, producers are willing to supply Chlorine at a lower price to meet the Caustic Soda demand. Likewise the situation reverses when there is demand for Chlorine. Chlorine price can go up even upto US\$ 300 per MT and at such time Caustic Soda can be supplied at a lower rate. This happens regularly in the international market since the producer is interested in total realization i.e. from Caustic Soda, Chlorine and Hydrochloric Acid and from any single product. In light of the aforesaid link between these commercially valuable products Anti Dumping Duty determination can only be done if the prices of all these products are considered to determine whether there is dumping and the resultant injury therefrom in a market. Without this examination, the whole process would lead to an incomplete understanding of the Caustic Soda market, which would result in misleading and incorrect conclusions.
- (v) It is submitted that an indigenous producer who participated in the Tender, M/s. DCW and who is also a part of the Petition, had offered an ex-work price of Rs. *** per DMT. The exchange rate (i.e. Bill Selling Rate) prevailing on November 9, 2001 was US\$ 1 = Rs.48.38. Therefore, the indigenous ex-work price offered was US\$ ***. Against this imported landed price considering Custom Duty rate of 35% works out to around US\$ *** per DMT. Therefore, the imported landed price was much higher than the offered ex-work price of Caustic Soda prevailing in domestic market. The domestic offer because of logistic problems and the higher element of freight for supply mentioned above was not competitive.
- (vi) It is submitted that during the period of investigation that the domestic industry was selling Chlorine at ex-work price of approx. Rs. *** per MT in September, 2001. Therefore, the total realization to Indian manufacturers with Caustic Soda and Chlorine together works out to Rs. *** per MT, which is much higher than the cost of production of Caustic Soda, Chlorine together. From the above, it is adequately shown that domestic industries has filed the present Petition solely motivated by the desire of higher profit margins due to which they are losing business to overseas parties. Therefore, it is not correct to state that international parties are supplying at much below the normal value as being alleged.
- (vii) The Alkali Association represents the Association of Indian Manufacturers of Caustic Soda and Chlorine. Most of these manufacturers have multi-product plant and part of the Chlorine and in some cases 100% Chlorine is utilized by them for manufacture of value added products and they get larger margins by selling Chlorine. For them, Caustic Soda is only a by-product. The very purpose of Anti Dumping Petition by the Alkali Manufacturers is to increase the indigenous price of Caustic Soda in the country. Through Alkali Manufacturers Association these manufacturers have conspired to keep Caustic Soda price at a level, which will be

just lower than the imported price of Caustic Soda with Anti Dumping Duty. It may be mentioned here that out of the countries, who are capable of exporting Caustic Soda to India due to Petition by these Alkali Manufacturers Association and due to non-participation of the countries on whom Dumping was alleged, Anti Dumping Duty have been levied in respect of 5 countries i.e. USA, France, Saudi Arabia, Iran and Japan. Provisionally Anti Dumping Duty has also been imposed from imports from Qatar. With imposition of Anti Dumping Duty from Korea and China almost 90% of exporting countries of the world that can export Caustic Soda will get covered. It may be seen that in March, 2002 when the whole world can buy Caustic Soda at the prevailing market price of US\$ *** FOB and considering average freight of US\$ *** from most of the countries of the world to India the landed price would have been US\$ *** C&F. Against this with Custom Duty of 35% then applicable, the landed price works out to US\$ ***. Against this the Hon'ble Authority should consider the landed price as US\$ *** which is arrived at by taking into account the Anti Dumping Duty applicable now. The additional implication per MT over normal international price works out to approx. US\$ *** per MT with an exchange rate of Rs.48.38 this works out to Rs. *** per MT. For NALCO's requirement of 100,000 DMT the additional implication will be Rs. ***. **When any Aluminum Manufacturers in the world can buy at a price of US\$ *** per DMT with the imposition of Anti Dumping Duty in India, NALCO will be forced to buy at US\$ ***. This will only make Indian Aluminum Industry non-competitive and will give rise to increase in indigenous price of Aluminum, which will result in import of Aluminum. The Indian Alkali Industries who are already producing almost to the full capacities and their productions are increasing their profit margin are increasing, but inspite of above, they want further profit by imposition of Anti Dumping Duty which is against the object and spirit of India's commitments to the WTO. There is no injury to indigenous industries and on the contrary this Anti Dumping Duty is solely motivated by the desire of the indigenous manufacturers to join hands and increase the price of Caustic Soda much above their cost of production and gain supra competitive profits. The Designated Authority should look into this game plan of Alkali Association and should reject their Petition in view of misrepresentation, suppression and submission of distorted facts**

DUMPING

- (i) It is incorrect to state that all countries in the world are dumping Caustic Soda into Indian market. The Chlor-Alkali report based on which the Petitioner has endeavored to establish the normal value of the product in countries like China and Korea gives details of price summary on monthly basis as prevailing in the world. The copies of price summary report for the period of investigation i.e. April, 2001 - March, 2002 is submitted herewith and marked as ANNEXURE "C". A perusal of the report, shows that the prices of liquid Caustic Soda per DMT was in the range of US\$ *** in USA US\$ *** in western Europe, US\$ *** in eastern Europe in April, 2001 on FOB basis. At that time the export price in Far East was in the range of US\$ *** per DMT. During the year gradually the Caustic Soda price had started falling and by March, 2002 the Caustic Soda price in USA had come down to US\$ *** in Western Europe, US\$ *** in Eastern Europe, US\$ *** in Far East to US\$ *** per DMT on FOB

basis. This being the nature of variation of price for this product in the whole world, if the domestic price in April, 2001 is considered in a particular country it will give a high value of Caustic Soda whereas the same domestic price in March, 2002 would be drastically different. Since the variation is in the range of 500% – 600% for this product in a period of one year, it will be erroneous to rely upon the figures given by the Petitioner at a particular period are only considered in determining the normal value. It may be appreciated that the normal value in USA is US\$ *** in April, 2001, the same normal value has become US\$ *** in March, 2002. **Therefore, in order to find out whether there is any dumping or not, one has to go to the point when the contract for import was finalised and what was the price prevailing at that period in those countries. This is required as the prices changes not only on a month to month basis but also very drastically. Therefore any conclusion drawn on the basis of isolated figures given by Petitioner would be erroneous and not reflect the true Caustic Soda market.**

- (ii) The allegations that NALCO's import order of 88,000 DMT placed at a price of US\$ *** for Membrane / Mercury grade and US\$ *** for Diaphragm grade is being imported at less than normal value and is therefore being dumped into Indian market is denied as being false and misleading. NALCO invited Global Press Tenders for its annual requirement and the parties submitted the tender on September 28, 2001. The commercial points were clarified and thereafter prices were opened. The price bid opening was held on November 9, 2001. From the pricing summaries given in the Petition, it may be seen that the C&F, Visakhapatnam price offered by parties from Korea, China, Romania, Qatar, Iran in the tender was in the range from US\$ ***. It may be appreciated that since this tender was submitted in September, 2001, **the international price of Caustic Soda as prevailing in September is relevant as parties participating in the tender consider the prevailing international price and assume the price trend and quotes in the Tender.** Due to logistic reasons, the offers from Far East were more competitive given the freight element. From the Chlor-Alkali report of September, 2001, it may be seen that the prices in Far East was in the range of US\$ *** per DMT on FOB basis. The freight charges from China and Korea are in the range of US\$ *** per DMT showing that for the exports from Far East the available international market price on C&F India ports will work out to US\$ *** per DMT. Further the trend of price was downward for Caustic Soda liquid during that period whereas the Chlorine prices had started picking up. Considering this, the price finalized in NALCO's tender is purely as per the prevailing international price and therefore cannot be considered as a price below the normal market price.

2. M/S Grasim

- (i) M/s Grasim has submitted that they have never imported Caustic Soda from any country till now rather have purchased Caustic Soda from Indian manufacturers.

3. M/s Transpek Industry Limited**a) INJURY & OTHER ISSUES**

- (i) We would like to inform you that we do not use Caustic Soda in our manufacturing activities. However, we would like to present the indirect effect of dumping of Caustic Soda in Indian market.
- (ii) We use Chlorine in large quantities. Chlorine is manufactured by plants like GACL and is a co-product with Caustic Soda.
- (iii) As a result of dumping of Caustic Soda by manufacturers in China and Korea, the manufacturers of Caustic Soda and Chlorine have to reduce their prices of Caustic Soda to face the competition. The loss incurred by them in disposal of Caustic Soda will have to be compensated by them by a corresponding increase in price of Chlorine.
- (iv) As pointed out above, we shall be forced to pay higher prices of Chlorine which is consumed by us in large quantities. In fact, the prices of Chlorine have been revised upwards from Rs.4750/- per tonne in January to Rs.9350/- per tonne in June, 2002.
- (v) It will be observed that correspondingly prices of Caustic Soda have decreased from Rs.12810/- per tonne in January, 2002 to Rs.8960/- per tonne in June, 2002. Some of the products like Thionyl Chloride, in which Chlorine is used, are being exported by us. These exports are likely to suffer as the prices of our product in international market would not be competitive.
- (vi) We therefore strongly plead your taking suitable action by imposing anti dumping duty on Caustic, which will go a long way in stabilising the costs of Caustic and Chlorine to a natural level, and thus help Chlorine based industries situated in and Gujarat.

4. M/s Deepak Nitrite Limited, Nandesari**a) INJURY & OTHER ISSUES**

- (i) We consume Caustic Soda Lye in manufacture of our product, Sodium Nitrite. We are principal producer of this material in India and also export around 10-15% of our production.
- (ii) Caustic Soda Lye is one of the very basic ingredients which is used by almost all chemical industries, and hence any action which might increase the price, will have a cascading effect on the price and competitiveness of range of chemicals. It will reduce the competitiveness of Indian end-user industry vis-à-vis given material from abroad.
- (iii) Manufacturing of Caustic Soda Lye concurrently produces chlorine, hydrochloric acid and hydrogen. Overall competitiveness of chloro-alkali industry depends on availability of balanced demand for this basket of products as well as limitations in storage of chlorine and hydrogen. Depending on overall industrial growth, different regions have different demand pattern, and hence price realisation of Caustic Soda Lye alone should

- not be considered as deciding factor. One should rather check over all price for baskets of products, i.e. main product and co-products, in an exporting country to determine whether exporter has dumped material to India
- (iv) The petitioner has claimed Normal Value of subject goods in Korea RP on the basis of selling price i.e. export price. However, this appears to be hypothetical because to the best of our knowledge there is negligible import of Caustic Soda Lye into India from Korea.

While announcing the Normal Value of China, the Authority has considered the price of Caustic Soda Lye only and the prices of other products such as chlorine, hydrochloric acid and hydrogen does not appear to have considered.

- (v) The petitioners have indicated CIF price as per the DGCI&S data wherein they have referred to the tender floated by NALCO. NALCO is the largest consumer of Caustic Soda Lye in the country and the tender price received by them cannot be considered as the reference price for this purpose.
- (vi) Principal cost of components in the manufacture of Caustic Soda Lye and its co-products is cost of electricity. Majority of countries names in the investigation have significantly lower cost of Electricity, i.e. almost 1/3rd to 1/5th of Indian cost, enabling them to sell the product at lower price as compared to domestic manufacturers.
- (vii) Capacity set up in India are far in excess of Indian demand, which leads to poor utilisation. It should be noted that percentage of imports as such is insignificant and, in fact, is reducing in last three years. The price of imported product is not falling, but has more or less stabilised. It should be noted that Caustic Soda Lye is being imported from various countries, i.e. from continents of Europe, America and Asia. The price levels of Caustic Soda Lye exported to India are thus a reflection of overall competitiveness of Caustic Soda Lye industry abroad based on economy of scale afforded by large size plants, cheap power and other raw material as well as matching demand pattern for the basket of products.
- (viii) Under these circumstances, we request the Designated Authority to kindly examine the issues in overall perspective while ascertaining the nature of dumping, if any.

3. EXPORTER'S VIEWS

1. M/S TRICON ENERGY LIMITED, USA

a) STANDING OF THE PETITIONER

- (i) The petitioners claim that the petition is being filed by M/s Alkaline Manufacturers Association of India. Further in the petition, "participating companies" data is produced for the injury analysis.
- (ii) It is respectfully submitted that this is contrary to the Anti Dumping laws and practice in India. All the supporting petitioners must provide full and complete data for this proceeding. Clearly data of "participating companies cannot be the basis for injury to the industry as a whole. In fact it may well be the case that the

data of the "non "participating companies" might indicate that there is no injury at all.

b) PRODUCT UNDER CONSIDERATION

The product under consideration as defined by the petitioners is "Sodium Hydroxide" generally known as Caustic Soda. Caustic Soda is chemically known as NaOH. It is an organic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff act. Caustic Soda is produced in two forms –lye and solids. Solids can be used in the form of flakes, prills, granules or any other form. All forms of Caustic Soda are the subject matter of the present petition.

- (i) It is submitted that the petitioners have erroneously gone ahead and evolved only one Normal Value for both lye and solids, which is clearly not permissible under the Anti Dumping laws in India as the two ciA/Ta. Globally the chlor-alkali industry is being driven by the demand-supply of chlorine, unlike in India and therefore globally, Caustic Soda is considered as a by-product. Demand for Chlorine is higher than that of Caustic and many a times a part of Caustic produced in the process is wasted.
- (ii) This is reflected in the fact that only 4 out of 42 domestic producers of caustic soda have participated in the NALCO tender. Furthermore it is noteworthy that none of these four were awarded any quantity in the global tender, the reasons for which are not prima facie apparent.
- (iii) Caustic Soda solutions are produced as a co-product with Chlorine electrolytically by three technologies, mercury cells, membrane cells and diaphragm cells. Each of these processes utilize NaCl salt as the primary raw material. The salt is electrolytically split using direct current (DC) electricity, resulting in Chlorine and an available sodium ion (Na^+) that is reacted with water in the cell to make Caustic Soda and by-product Hydrogen. The Hydrogen by-product produced is used as a fuel source, sold to Hydrogen customers, or to produce high purity (burner grade) Hydrochloric Acid. A fourth technology that produces commercially available quantities of Caustic Soda solutions is a chemical conversion of trona ore. This process produces low quality Caustic Soda.
- (iv) The mercury cell operation utilizes mercury as the cathode for the electrolytic reaction, as well as for the sodium amalgam that is reacted to deionized water to produce the Caustic Soda solution. There is essentially no wet consumption of mercury in process, as all cells are 'closed loop' with regards to mercury flow across the bottom of the cell and through the cell decomposer, where the amalgam is reacted to Caustic Soda solution. The solution produced by this process is 50-52% by weight NaOH, produced directly from the cell without any additional evaporation. This process produces the highest purity Caustic Soda commercially available.

The high purity characteristic is descriptive of the very low concentrations of contaminants in the product. Salt, or NaCl, is typically less than 10 ppm, with a maximum of 30 ppm. Sodium Chlorates, or NaClO_3 are typically 0.5 ppm, with a maximum limit of 1 ppm. Sodium Carbonates, or Na_2CO_3 , are typically 0.02 weight %, with a maximum limit of 0.06 weight %, Sodium Sulfates, or Na_2SO_4 , are typically 10 ppm, with a maximum of 20 ppm.

The mercury cell produced Caustic Soda is typically referred as Mercury Cell Grade, or more commonly, Rayon Grade. Most product of rayon fiber is dependent on the availability of the high purity Rayon Grade Caustic Soda solution. Another very common use of this high purity caustic solution is for Domestic Industry water exchangers. The Domestic Industry unit resin literature often specified Rayon Grade Caustic Soda only for regeneration. One must remember that this literature was published prior to the availability of membrane cell produced solution.

- (v) The Diaphragm Cell process utilizes asbestos, or alternate substitutes to asbestos, to separate the co-products Caustic Soda and Chlorine. The production of 50% Caustic Soda occurs primarily outside of the electrolytic cell. The diaphragm cell produces a very weak 'cell liquor' which contains 12-14% by weight, NaOH and roughly the same concentration NaCl salt. The 'cell liquor' is subsequently evaporated in a three or four 'effect' evaporation process to a final nominal concentration of 50% NaOH by weight (49-52% range). The excess salt is precipitated and filtered through the evaporation process for subsequent reuse/recycle. The process produces the lower quality electrochemical Caustic Soda solution.

The quality considerations with respect to the diaphragm cell produced Caustic solutions include relatively high salt, chlorates, carbonates, and sulfates. Salt as NaCl, concentrations are typically 1.0% with maximums ranging from 1.1 to 1.3 weight %, depending on producer. Sodium Chlorates are typically 0.15 weight %, with a maximum of 0.3 weight %. Sodium Carbonates are typically 0.1 weight %, with a maximum of 0.2 weight %. Sodium Sulfates are typically 0.01 weight %, with a maximum of 0.02 weight %.

The diaphragm cell produced Caustic Soda is often referred to as Diaphragm Cell Grade. It is also called Commercial Grade, Technical Grade, and occasionally Technical Diaphragm or other similar combinations.

An additional 'Grade' of Caustic Soda produced by the diaphragm cell process is the purified Grade. The production of Purified Grade involves the further evaporation of the 50% Diaphragm Grade Caustic Soda solution to reduce the salt concentration. The higher Caustic Soda concentration forces precipitation of the salts, which are soluble in Caustic Soda solution in an inverse relationship. The higher concentration solution is then re-diluted to the 50% concentration that is commercially available as Purified Grade Caustic Soda.

Common uses include process and wastewater neutralization, textiles production, soaps and detergents and aluminum production. These uses and applications generally will refer to the Caustic Soda as any of the various grades previously addressed, dependent on supplier's terminology.

- (vi) The membrane cell process utilizes a selective membrane that separates the Chlorine and Sodium ions. The membrane allows the Sodium ion to 'migrate' across the membrane while keeping the Chlorine gas and salt (brine) solution in a compartment on the other side of the membrane. The sodium ion is reacted with purified water as in the mercury cell to produce the Caustic Soda. The solution

produced by the membrane cell process is nominally 33-35 weight % Evaporation is utilized, as in the diaphragm process, to raise the concentration up to the nominal 50 weight % solution suitable for shipments The salt concentrations are not concentrated as significantly in this evaporation process due to the selective osmotic nature of the membranes as well as the reduced amount of evaporation required in this process opposed to the diaphragm evaporation Minute quantities of salt do migrate across the membrane, concentrating upto to the maximum 75 ppm Note that other producers employing the membrane cell technology may have a higher maximum limit of 100 ppm on the allowable salt concentration in the Caustic Soda solution

The high purity characteristic is descriptive of the low concentrations of contaminants in the product Salt, or NaCl, is typically less than 30 ppm, with a maximum of 75 ppm Sodium Chlorates, or NaClO₃ are typically 3 ppm, with a maximum limit of 5 ppm Sodium Carbonates, or Na₂CO₃ are typically 0.03 weight %, with a maximum limit of 0.05 ppm Sodium Carbonates, or Na₂SO₄, are typically 15 ppm, with a maximum of 20 ppm Note that these limits are Olin specific, with some slight deviation to be expected amongst the various membrane cell operation

The Caustic soda produced by the membrane cell process is most commonly referred to as Membrane Grade

- (vii) It is a well known fact within the Caustic Soda production, consumption and trading industry that the cost of caustic soda is linked to the cost of chlorine, as both are produced during the same process In effect when chlorine prices are high, caustic soda prices are low and vice versa It is a well known fact that during the POI, chlorine prices globally were at an all time high and consequently caustic soda prices were at historic lows
- (viii) It is respectfully submitted that M/s Tricon Energy Limited sold caustic lye in India pursuant to a global tender dated 31.8.2001 for 1,00,000,00 DMT, plus/minus 5% (on 1000 NaOH basis)
- (ix) Two alternatives were offered and M/s Tricon Energy were awarded the tender to supply 30,000 DMT plus/minus 5% of caustic soda lye on 10% NaOH basis This caustic soda was to be produced by the diaphragm method which is typically USD 5 cheaper than caustic soda lye produced through a membrane method This fact was recognized in the tender document itself wherein it was noted that "for comparison of prices of mercury/ membrane grade with that of diaphragm grade caustic soda lye, a financial loading of USD 5 per DMT shall be loaded in the price of the diaphragm grade"
- (x) It may be pertinent to note that DMT means dry metric tonne. Caustic Soda Lye being in a liquid form will contain caustic soda plus water To obtain caustic soda on DMT basis the water will have to be evaporated Typically, for example obtain 500 DMT of caustic soda on 100% NaOH basis, 1000 MT of caustic soda lye will be shipped in a soluble form When evaporated, it will result in 500 DMT of caustic soda on 100% NaOH basis
- (xi) M/s Tricon Energy Limited, represented M/s Hanwa Chemical Corporation in the aforesaid tender M/s Tricon Energy Limited inter alia put up the earnest money deposit and the performance guarantee bond In addition to this there were

several other requirements of the tender which were fulfilled by M/s Tricon Energy Limited.

- (xii) The main response has been filed by M/s Hanwha Chemical Corporation, which accurately reflects the role played by M/s Tricon Energy Limited on a purely documented and commercial manner. To explain this position briefly, M/s Tricon Energy Ltd., contracted with M/s Hanwha Corporation for supply of 30000 DT +/- 5% at USD 189.36/DMT CFR vizag as per Sale and Purchase contract dt. December, 10, 2001. Proforma Invoice for L/C opening was however issued by Hanwha Corporation at USD 184.79/DMT CFR Visakhapatnam for adjustment of USD 4.57/DMT from previous transaction between M/s Hanwha Chemical Corporation and M/s Tricon Energy.

c) INJURY AND CAUSAL LINK

- (i) It is denied and disputed that the Domestic Industry has suffered the injury
- (ii) First as stated above, Chlorine prices were at record high and the domestic producers must have reaped benefits of that.
- (iii) Second, notwithstanding the representations on capacity, it is submitted that the domestic units, have a much lower capacity of caustic soda that has been represented. The size of the unit compared with the outdated technology and the high cost of power, clearly indicate that the injury if any, is not caused by any dumping. Furthermore, one of the domestic producers who also manufactured epichlorohydrin M/s Tamil nadu Petro Products Limited admitted that the high cost of energy was the reason for their 'serious injury' in a safeguard proceeding. As part of their restructuring plan, they had committed to introduce a captive power plant, which would reduce their cost of production. Thus it is admitted that Indian industry was being injured due to factors other than dumping.
- (iv) As stated above, M/s NALCO floated global tender with a view towards obtaining the most competitive price for its requirement. It may be noted that the supplies were made to M/s NALCO at non dumped prices based on then prevailing market rate. On the other hand, the local suppliers were at an inherent disadvantage in as much as the local transportation costs were prohibitively high based on the requirement of M/s NALCO that the shipment may be in liquid form. Furthermore, the four Indian bidders offered almost identical prices, irrespective of their method of production or capacity. It is respectfully submitted that prima facie such pricing is not possible.

Without any prejudice to the aforesaid, it is respectfully submitted that the Domestic Industry could not have been injured by the minimal supplies made by M/s Hanwha Chemical Corporation and M/s Tricon Energy Limited pursuant to the NALCO tender.

2. M/S HANWHA CHEMICAL CORPORATION, KOREA RP

a) PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- (i) Hanwha group is one of the top ten conglomerates from the Rep. Of Korea. Further Hanwha Chemical Corp. is the manufacturers of the Caustic Soda, which is being sold in the overseas market through the group's trading window

- (Hanwha Corp , Seoul, Korea) and some other traders (if any, for example in present case the cargo sold to NALCO through M/s Tricon-Energy, USA).
- (ii) Our plants are fully integrated plant as against this the local makers in India (the petitioners) are running the smaller capacity plants where they are not able to effectively manage the output of Chlorine and thereby making hue and cry about their higher cost of production of Caustic Soda.
 - (iii) In a Chlor Alkali unit, from the common salt primarily we get two things, Caustic Soda and Chlorine, now, if Chlorine (which is a commodity which cannot be trade in the international market due to its extremely hazardous nature) cannot be used in some other effective way (like production of product like Epichlorohydrin and EDC \rightarrow VCM $>$ PVC) the burden of Chlorine prices would be reflected on Caustic Soda.
 - (iv) Caustic Soda is a commodity; the general price reference is drawn from the Electric Chemical Unit, also known as ECU (this includes the Caustic Soda + Chlorine). Further in case of global size plants, the prices are influenced by various factors. The main factors are as follow:

+ the price movements of $\text{EDC} > \text{VCM} > \text{PVC}$

- (v) For all the above two factors one of the basic raw materials is Chlorine – now, if the international market demands more PVC, it means that the demand of Chlorine is high, now to produce more Chlorine, more of Caustic Soda will be generated. So, while looking into the pricing factors, the other related factors may kindly be looked into before coming to any conclusion and determination of prices.
- (vi) Further the global practice is to produce primarily Chlorine and thus Caustic Soda as by-product, whereas in India it seems to be otherwise.

i) INJURY

- (i) In the written petition of the Alkali Maker's Association, we find that the Caustic Soda industry is a very old industry and that there are several makers claiming that their joint capacity to be more than the demand in India. On the other side, we find that India has also enough capacity for PVC and Epichlorohydrin – however if we make further observations, we find that the PVC plants in India are importing EDC and/or VCM as their basic feedstock (and not able to produce EDC and/or VCM locally by using the local Chlorine). The Designated Authority may ask this to the petitioners and we are sure the findings would be that the local Caustic units were planned considering only the local rather neighbourhood demand for Caustic Soda Lye only - it is not out of place to mention that we have come across situations whereby the local Caustic producers were said to be disposing chlorine at virtually nil cost – this in a way clearly shows their inefficient handling of production costs.
- (ii) Irrespective of any protection they seek, this situation would never going to change – rather, the user industry would keep on suffering while the Caustic units making merry just because of the protections.
- (iii) We are not engaged in dumping of Caustic Soda Lye in India market by merely offering international price. No intention to dumping Caustic Soda Lye in India and causing injury to the Domestic Industry in India.

- (iv) First of all, we have not sold any cargo to India market directly. Basically, we received one inquiry from Tricon Energy, USA and we have given them offers considering the prevailing international market for supplies to NALCO in India. And, Tricon have further participated in the NALCO tender
- (v) The export volume during the investigation period from Korea RP was very little i.e only 12569.32 DMT and the percentage of total inputs as compared to total consumption in India which is 1600000 DMT is a meager 0.78% only. This cannot cause any injury to the Domestic Industry
- (vi) The Caustic Soda Lye has become a commodity and for this the price reference is drawn from the international price indexes – the prices are quoted like metals in London Metal Exchange (LEM for various metals) and PLATT/ICIS for Polymers, etc. Rather if the Designated Authority compare the prices prevailing in the international market at the time of the shipments that we have made to NALCO, the same is fairly higher.
- (vii) There is a global size Alumina producer in India-NALCO - they consume big quantity of Caustic Soda Lye and to get a better pricing they invite global tenders where the local makers and as well as the global producers participate. The Designated Authority has seen the cost comparison presented by the petitioner related to the offers made by the overseas suppliers – however, if we examine the participation by the local makers in that tend, we find that out of the 42 producers only 4 companies participated, the total qty. offered by them (83,000 DMT +/-5%) the Designated Authority may look into this situation prior to coming to any conclusion
- (viii) We from Hanwha have offered only Diaphragm Process to NALCO(though we have Membrane Process also) We further reiterate that based of the petition of the petitioner, there seems to be only one maker of Diaphragm Process in India and their installed capacity is approx.7250 MT Which is only 1/4th of the NALCO's total requirement of particular process. Considering this fact it is not at all a dumping rather we have offered a grade, which is not offered by the local maker.
- (ix) Petitioner has mentioned that Caustic Soda produced by the three process are same – the Designated Authority may note that there are some critical difference in the specifications. The Chloride content in the Diaphragm Grade Caustic Soda is higher than that of Mercury and Membrane Grade.
- (x) Though in the petition the petitioners have mentioned that there are three production processes to produce Caustic Soda Lye, prima facie it appears that the local companies in India use either Mercury cell or membrane cell based Caustic Soda Lye.
- (xi) On further analysis of the capacities of the participating local makers in the NALCO's said tender, we find that only Tamilnadu Petroproducts Ltd. (TPL- Capacity 49500 MT) and Andhra Sugars (Capacity 30000 MT) have membrane cell technology and their operation ratio during year 2000-2001 has been almost touching 100%.
- (xii) The Designated Authority may please look into the fact that the local companies, operating at near about 100% of their capacity or above, without selling their products to NALCO – offer to NALCO in tender anywhere 30% to 60% of their total capacity – the obvious intentions seems to be to exploit the regional market which they are catering to.
- (xiii) Though the petitioner claims that in India, Caustic Soda is produced by using all the three processes (Mercury, Diaphragm and Membrane), however, we find in

- their submissions that only one maker (Sirpur Paper) has a production process based on Diaphragm Cell, that too a very small capacity of 7250 MT/year.
- (xiv) One of the plea that the local makers take about their higher cost of production is that the cost of power is very high in India and as since power plays a very important and significant role in Caustic production so they should be given protection.
- (xv) Here we draw the reference of one submissions made by one of the Caustic producers in India – Tamilnadu Petroproducts Ltd. (TPL) – during one hearing hearings in the Safe-Guard duty on Epichlorohydrin imports into India. – TPL has referred that they are producing Caustic Soda and as well as Epichlorohydrin and further that by way of installation of a captive power plant they propose to reduce the cost of the Chlorine to one third the existing cost – at this juncture we would like to draw the attention of the Designated Authority – as TPL (one of the Caustic Soda producers has clearly established the link in the production of Caustic Chlorine and ECH) and further, they say that the captive power plants can drastically reduce the cost of productions. Therefore, our submission is that while determining the costing of Caustic Soda, these factors may kindly be looked into more closely.
- (xvi) In their petition- the petitioners have described the characteristics of Caustic Soda Lye and the solid/flakes –the Designated Authority can very well understand from a first glance that for supplies of Caustic Soda Lye some special provisions have to be made (because crystallization begins at 12-15 Deg Celsius) and further the boiling point is 142-148 Deg. Celsius.
- (xvii) Nowhere we find that among the petitioner companies location from the user (NALCO) are far off- which means that they have to make special arrangements for transportation of Lye. This also means that many of inland producers have primarily no right to seek Anti Dumping duty on a product which they cannot deliver practically to their buyers owing to geographical locations. Further for the other producers, one has to really look into the facilities for loading into a specialised vessels and subsequent deliveries to the buyer (NALCO). We feel that this is one of the main reasons for only 4 local companies participating in the NALCO tender.
- (xviii) If we examine the India's exports of Caustic Soda – this becomes more evident that India is not able to export Caustic Soda Lye whereas the exports of Solid and Flake types are there.
- (xix) Now the Designated Authority may look into the submissions made by the petitioner-represent the imports of Caustic Soda, it is seems that the petitioner is trying to mislead the investigations by mixing the two (Caustic Soda Lye and Caustic Soda flakes/solid)
- (xx) The petitioner in their non-confidential submissions has taken total imports during the POI 163,012 mt, after annualizing the data of imports from April-December, 2001. However the supporting annexure of their submissions covers the data for April, 2001 –November, 2001 only. In fact it seems that the petitioner is trying to mislead the Authority by adding total quantity awarded in the NALCO tender as imports during the POI. The fact is that the quantity awarded is to be supplied as staggered shipments till December, 2002. The actual imports during the POI is much less as compared to the previous year. Further if we annualize the data on the basis of the imports (April 01 –January 02) the total imports also shows considerable decline in Caustic Soda Lye imports.

- (xxi) Now think of the problems that could be faced by the buyers like NALCO who need Caustic Soda Lye-if they are supplied with Caustic Soda Flakes/Solid and if they have to arrange to convert that to Lye again-it leaves a big question mark?
- (xxii) One of the basic reasons for imposition of anti dumping duty on the imports of Caustic Soda from Korea (Hanwha Chemical Corporation) together with others – the petitioner states in their petition that the capacity in these countries are far higher than their basic domestic requirement. It is observed from the Korea's import statistics for the Caustic Soda - it is evident from our submissions, that Korea imports large volume of Caustic Soda as well as exports. The basic reason for this trading is to effectively manage the Caustic situation in Korea.
- (xxiii) Here it not out of place to mention that we participated in the NALCO tender during the 2nd half of year 2001- by that time prices had started to come down in the international market. Further, if the Designated Authority may look at the prices in the international market prevailing during April, 2002 it touched USD 30 per DMT FOB US GULF – however from May, 02, the prices have again started to move upwards sharply.
- (xxiv) Our capacity of production, cost of production, local sales volume and the costing etc. are being submitted in the specified formats as prescribed by the Designated Authority and in view of the sensitivity of the information, we are submitted those details as absolutely confidential. The ex-factory export price to India is much higher than the ex-factory domestic selling price in Korea. The Designated Authority or the nominated officials can verify these data for this purpose in our head office in Korea at any mutually suitable date and time.

3. **CHLOR SHANGHAI CHEMICAL CO. LTD. , PR CHINA**

- (i) The exporter has filed exporter questionnaire and have mentioned that this is company limited by shares duly established in accordance with the Company Law in China which independently operates business and production activities and selects suppliers and customers and develops sales market acceptance to the signals of the market.
- (ii) The respondents have claimed a market economy/individual treatment.
- (iii) The exporter has indicated that the respondent quotes the export price according to the terms and conditions of its trading company in Hong Kong who then passes the sales documents to its customers in Japan which are invoiced to the Indian customers.
- (iv) Hong Kong company is acting on a commission basis.
- (v) It has also been requested that comparison should be made at appropriate percentage on caustic soda basis and that 99% subject goods be excluded..
- (vi) The exporter has provided transactions of the domestic sales during POI of the subject goods and the associated export prices to India along with the relevant cost of production details.

C. **EXAMINATION BY AUTHORITY**

The foregoing submissions made by the exporter, petitioner and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and have a bearing upon the case, have been examined, considered and dealt with at appropriate places in these findings.

1. PRODUCT UNDER 'CONSIDERATION

The product under consideration in the present investigation is Sodium Hydroxide (chemical nomenclature NaOH), commonly known as Caustic Soda originating in or exported from Korea RP and PR China. Caustic soda is an inorganic, soapy, strongly alkaline and odourless chemical and finds application in various fields like manufacture of pulp and paper, newsprint, viscose yarn, staple fibre, aluminium, cotton, textiles, toilet and laundry soaps, detergent, dyestuffs, drugs and pharmaceuticals, petroleum refining etc.

Caustic soda is classified under chapter 28 of the customs Tariff Act, 1975 under Customs Head 2815.11 and 2815.12. As per ITC Eight Digit classification, the product is classified under the Custom Heading 2815.1101, 2815.1102 and 2815.1200. The classification, is however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

Caustic soda is produced in two forms, i.e. lye and solids by three technology processes, i.e. mercury cell process, diaphragm process and membrane process.

Caustic Soda can be imported under OGL and attracts a basic customs duty of 35%. The present investigation covers all forms of caustic soda.

The Authority notes that it has been mentioned by various interested parties that the three different types of production process of caustic soda produces different quality of caustic soda. It has also been indicated that the Membrane type process is used by a very few producers in India. Further it has been mentioned that 99% caustic soda be excluded from the purview of the scope of the investigation.

The Authority however notes that both M/s Tricon Energy Ltd., USA and M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP have indicated an adjustment of 5 \$/MT on the basis of the membrane technology as indicated in the NALCO's tender. The Authority therefore notes that M/s NALCO has loaded an adjustment of 5\$/MT for such a technology depending on its own requirements and the Authority has appropriately considered this adjustment while evaluating the dumping margin for M/s Hanwha Chemical Corporation. Therefore the Authority notes that the difference in terms of quality can best be addressed by way of appropriate adjustment as and when evidenced and claimed. The adjustment granted to M/s Hanwha Chemical Corporation has been for the purpose of preliminary determination pending final determination. The Authority also notes that the investigation covers all forms of caustic soda both Lye and flakes and all that are different forms of the same subject goods and are used substitutably depending on the requirement of the user. The two forms in various concentrations are therefore the subject matter of the investigation. The Authority further for the purposes of dumping margin has made appropriate comparisons on DMT basis only.

2. LIKE ARTICLE

The Authority notes that the petitioner has claimed that the goods produced by them are like article to the goods produced, and exported from the subject country. Also both are technically and commercially substitutable and the consumers are using the domestically produced and imported goods interchangeably. It has been indicated that

the Caustic soda is processed by three processes viz. Mercury cells process, diaphragm process and membrane process world over. The difference in these processes does not mean difference in product in terms of various characteristics. Also there is no significant difference in the cost of production for the three processes. The petitioner has claimed that the goods produced by them and those exported from the subject countries are like article within the meaning of the Rules. The Authority in view of submissions made by other interested parties and keeping in view the substitutability and interchangeability of the goods exported from subject countries and those produced by the Domestic Industry, considers the subject goods exported and the domestically produced subject goods as like article as per Rule 2(d) for the purpose of preliminary determination pending final determination.

3. DOMESTIC INDUSTRY

The petition has been filed by M/s Alkali Manufacturers Association of India on behalf of the domestic industry. The petition has been supported by M/s DCW Limited, Mumbai, M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Limited, Vadodara Gujarat, M/s Gujarat Alkalies, Dahej, M/s Search Chem Industries Limited, Mumbai, M/s Indian Rayon and Industries Ltd., Veraval, Gujarat, M/s Grasim Industries, Nagda, M.P, M/s SIEL Chemical Complex, Patiala, Punjab, M/s Bihar Caustic & Chemicals, Ltd., Jharkhand, M/s Jayshree Chemicals Limited, Orissa, M/s Andhra Sugars Limited, Tanaku, Bilt Chemicals, DCM Sriram, New Delhi and Punjab Alkalies & Chemicals, Chandigarh. None of the domestic producers has opposed the petition.

The Authority notes that various interested parties have mentioned that only a limited number of domestic producers participated in the NALCO's tender and that shipping the goods to NALCO by domestic producers is a costly affair because of the high inland freight. It has been indicated that the Domestic Industry definition be limited to these producers who have actually participated in NALCO's tender. The Authority does not consider this argument appropriate since NALCO happens to be only one of the consumers of caustic soda. Also the Authority notes that inability to supply in a cost effective manner to NALCO is a matter to be appropriately considered under injury examination and not to be addressed for the scope of the Domestic Industry. Also the Authority notes that in any event of any displacement of the domestic producers situated in proximity to NALCO, the injury occurring to them would eventually be transmitted to the other domestic producers. However the dumping of goods and their imports by NALCO is to be appropriately addressed as per Anti Dumping Rules. Therefore the argument of the interested parties that suppliers and non-suppliers to NALCO form two different competitive market does not hold merit..

The Authority also notes that the domestic producers who have supported the petition constitute more than 50% of the total domestic production and therefore have the standing to file the petition on behalf of the domestic industry as per Rule 5 (3) (a) and (b) of the Anti-Dumping Rules and also represent Domestic Industry in terms of Rule 2(b)

4. NORMAL VALUE & EXPORT PRICE

Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section(6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The normal value and ex-factory export price determination is illustrated below.

A. NORMAL VALUE

1. M/S SHANGHAI CHLOR CHEMICAL ALKALI CO. LTD. PR CHINA

The Authority notes that the exporter has provided details on sales in their home market of ion exchange Membrane Grade Caustic Soda (48%) during the Period of Investigation (POI). The ex-factory export price has been indicated as ****\$/Dry Metric Tonne (DMT). The exporter has provided the cost of production of the subject goods during the POI as ****\$/DMT. The weighted average domestic sales price has been shown to be making profits and thereby in the ordinary course of trade. In claim of market economy/individual treatment, the exporter has indicated that they are established in accordance with the Company Law of China and is a public listed company at the Shanghai Stock Exchange. The exporter independently operates business and production activities, freely selects suppliers and customers and develops sales markets in response to the signals of the market. The Authority in this regard notes the specific provisions in the notifications pertaining to Anti Dumping Rules No.28/2001 dated 31st May, 2001 and Notification No. 1/2001 dated 4th January, 2002 in which the conditions for 'non-market

economy' country has been defined. In the Notification dated 4th January, 2002, a country would be presumed as non-market economy in case the country has been determined to be or has been treated as non-market economy for the purpose of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent Authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation.

The Authority also notes that information pertaining to various specified criteria has been sought for from the cooperative exporter in order to consider the rebuttal on the treatment as non-market economy. On perusal of the response provided by the exporter, it is noticed that only a broad statement of fact has been provided regarding the operation on the market signals but no specific information on various criterion as listed in the Custom Notification dated 4th January, 2002 has been provided with adequate evidence to justify treating the exporter to be operating on the market principles. The Authority therefore for the purpose of preliminary determination pending final determination does not propose to consider the broad statement provided by the exporter as a justification for their being operating on the market economy principles. The Authority also recalls that the China has been treated as non-market economy in Steel Concrete Reinforcing Bar by PR China to USA dated 22.6.2001, Bicycles by China to EU dated 30.6.2001 and Non-Frozen Apple Juice Concrete by China to EU dated 13.4.2000 during the last three years. This has also been indicated in the preliminary finding pertaining to dumping of STPP from China and Chinese Taipei which have also been implemented by the Department of Revenue vide their Notification dated 17.6.2002. The cost data of the subject goods as available from the petitioners which has been duly normated by adopting the best practices on constructed cost of production with appropriate adjustments to arrive at the constructed Normal Value as per Annexure 1 to the Anti Dumping Rules and Section 9A(1)(c)(ii) (b) of the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995. The constructed Normal Value of the subject goods has therefore been referenced as ****\$/DMT for the POI. The Authority in this regard also notes that the data furnished by the exporter on the ex-factory domestic selling price and the ex-factory export price also indicates the incidence of dumping to an extent of ****\$/DMT.

B. EXPORT PRICE

The Authority notes that the exporter has provided the ex-factory export price of the subject goods during the POI as ****\$/DMT and have also claimed adjustments of ****\$/DMT as discounts/commission and have provided the ex-factory export price as ****\$/DMT. The Authority on the basis of the information provided by the exporter has correlated the exports made by the exporter with the response provided by M/s NALCO, the importer of the subject goods during the POI.

The Authority for the purpose of preliminary determination pending final determination has considered the ex-factory export price as provided by the exporter and allowed the adjustments on discounts/commission.

The ex-factory export price comes to ****\$/DMT. The Authority in this regard also notes the submissions made by the exporter that the appropriate comparison for the purpose of dumping margin be made i.e. 48% subject goods should be compared with 48% of the subject goods and 100% concentration of the subject goods should be compared with 100% of the subject goods. In the instant case, the Authority notes that the export price has been provided on the DMT basis and that the Normal Value as

indicated above has also been computed on the DMT basis for the purpose of comparison.

C. ASSESSMENT OF NON-COOPERATING PRODUCERS/EXPORTERS FROM PR CHINA

A. NORMAL VALUE

The Authority notes that none of the exporters other than M/s Shanghai Chlor Alkali Chemical Co. Ltd, PR China has responded to the questionnaire sent by the Authority for the purpose of investigation. In view of this non-cooperation, the Authority upholds the claim of the petitioners for treating such producers/exporters on the non-market principle. Keeping in view the treatment as considered in various EU/ES cases cited above, the Authority has therefore constructed the normal value by adopting normated cost of production by benchmarking best practices.

The Authority has referenced the Normal Value for such producers/exporters as ****\$/DMT.

B. EXPORT PRICE

The Authority notes that the export price has been provided by the petitioners on the basis of the data collected by them from DGCI&S and other secondary prices. The petitioners have also claimed adjustments on ocean freight, ocean insurance, commission, inland freight, port expenses and credit cost to an extent of ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT and ****\$/DMT respectively. The Authority notes that as per the DGCI&S data imports of subject goods to an extent of 8210 MT have been shown from PR China. As per the response of one of the cooperating importer viz. M/s NALCO, the imports from PR China are shown to an extent of 26505 MT. The DGCI&S data is therefore not exhaustive and complete and therefore cannot be referenced. Since NALCO is one of the importer, there would be other imports of the subject goods made by other importers which may not have been reflected in the DGCI&S data. Also no response has been received from the Customs regarding the details of the imports made during the POI. Since the best available information under such circumstances for the non-cooperating exporter could only be the information as available from the cooperating exporter, viz. M/s Shanghai Chlor Alkali Co. Ltd. whose export price also happens to be the lowest on the basis of the information as available with the Authority, the Authority considers it appropriate to reference this export price for the non-cooperating exporters from PR China. The adjustments allowed on the CIF on account of ocean freight, ocean insurance, commission, inland freight and port expenses to an extent of ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT and ****\$/DMT respectively

The ex-factory export price is referenced as ****\$/DMT.

KOREA RP**M/S HANWHA CHEMICAL CORPORATION, KOREA RP.****A. NORMAL VALUE**

The Authority notes the response filed by the exporter regarding their domestic selling prices of subject goods during the POI. The Authority notes that the transaction wise details on the domestic selling price for the POI has been provided by the exporter during the POI. The exporter has claimed adjustments on the domestic sales on account of discounts, inland freight, inland insurance and others to an extent of ****\$/DMT, ****\$/DMT, ****\$/DMT and ****\$/DMT respectively. The exporter has also submitted that the domestic sales made during the period as near to the period of exports to India should be referenced for the purpose of appropriate comparison. The Authority notes that the sample evidence pertaining to the domestic selling price has been provided by the exporter. The exporter has claimed an adjustment on account of inland freight to an extent of ****\$/DMT which has been substantiated by the exporter by way of expenses incurred on the freight component.

The Authority for the purpose, of preliminary findings pending final determination has considered the adjustments as claimed on the inland freight. The Authority for the purpose of preliminary determination pending final determination also allows the other adjustments on inland insurance and commission. The Authority has referenced the domestic selling price for the period December, 2001-March, 2002 which is comparable to the period of exports made to India for the purpose of determination of the Normal Value. The Authority also notes that the cost of production of subject goods as claimed during the POI indicates that the domestic selling prices are in the ordinary course of trade. However the Authority has considered this cost of production for the purpose of preliminary findings pending final determination.

Therefore for the purpose of preliminary determination pending final determination, the Authority has referenced the Normal Value as ****\$/DMT.

B. EXPORT PRICE

The Authority notes that the exporter has provided the ex-factory export price as ****\$/DMT. The exporter has provided export price to M/s Tricon Energy Limited, USA who in turn have exported the subject goods to India during the POI. Further the exports have been made through M/s Hanwha Corporation, the trading arm of M/s Hanwha Chemical Corporation. The exporter has claimed adjustments on account of discounts/commission to M/s Hanwha Corporation to an extent of ****\$/DMT. The Authority has also correlated the exports made by M/s Tricon Energy Limited, USA to M/s NALCO, the importer of subject goods in India who have provided the CIF price of the subject goods during the POI to India. The Authority for the purpose of final determination pending final determination has considered the adjustments as claimed by the exporter on discounts, adjustment on terms of sales as per NALCO's tender and adjustment on previous transaction sales to M/s Tricon to an extent of ****\$/DMT.

The ex-factory export price comes to ****\$/DMT.

C. ASSESSMENT OF NON-COOPERATING PRODUCERS/EXPORTERS FROM KOREA RP

A. NORMAL VALUE

The Authority notes that none of the exporters other than M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP has responded to the questionnaire sent by the Authority for the purpose of investigation. In view of this non-cooperation, the Authority has constructed the normal value on the basis of the data provided by the petitioners by referencing the best normated cost of production.

The Authority has referenced the Normal Value for such producers/exporters as ****\$/DMT.

B. EXPORT PRICE

The Authority notes that the DGCI&S data indicates the imports from Korea RP to an extent of 56 MT. The Authority notes that one of the importers viz. M/s NALCO has provided response indicating imports from Korea RP to an extent of 6270.43 MT whereas the exporter has during this period exported quantity to an extent of 12569 MT. Thus the information as provided by DGCI&S does not capture the import data fully and is being lowest and best available information. Therefore the CIF price of M/s Hanwha Chemical Corporation has been referenced for the non-cooperating exporters as well. The adjustments on the export price are considered on ocean freight, ocean insurance, commission, port and inland freight to an extent of ****\$/MT, ****\$/MT, ****\$/MT, ****\$/MT and **** \$/DMT respectively on the basis of the information made available by the petitioners and the cooperative exporter.

The ex-factory export price comes to ****\$/DMT.

5. DUMPING-Comparison of Normal Value & Export Price

The rules relating to comparison provides as follows:

“While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability.”

The authority has carried out weighted average normal value comparison with the weighted average ex-factory export price in Period of Investigation, for evaluation of the dumping margin for all the exporter/producers of the subject country.

The dumping margin for exporter/producers comes as under:

SI.No.	Exporter/Producer	Ex-factory Export Price (\$/MT)	Dumping Margin as % of EP
1.	KOREA RP 1. Hanwha Chemical Corporation.	****	Deminimis
	2. Other producers/exporters	****	53.22
2.	PR CHINA 1.M/s Chlor Shanghai Chemical Co. Ltd.	****	74.02
	2. Other producers/exporters	****	80.03

6. INJURY AND CAUSAL LINK

Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, “....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, we may consider such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

As regards the threat of injury, the Authority notes that the Anti-Dumping Rules states as follows:

“A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the DA shall consider, inter-alia, such factors and;

- a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to

Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports,

- c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports, and,
- d) inventories of the article being investigated

The Authority notes that various interested parties have mentioned that it is in totality that the price of chlorine and hydrochloric acid along with caustic should be considered. It has also been mentioned that the domestic producers of caustic soda in India are using obsolete technology and have high cost of production on account of electricity cost. The issue of high inland freight for supply to NALCO has also been indicated.

It has also been further mentioned that there is an excess capacity in India which is leading to injury to the domestic producers. Submissions have also been made that world over chlorine is the main product and whereas in India it is the caustic soda which is the main product. The Authority after noting the above submissions holds that the non-injurious price has been evaluated for the various domestic producers by appropriately considering the sales realisation from the related products. Also in order to eliminate inefficiencies, the Authority has normated and benchmarked the best practices on utilisation of raw materials, utilities etc.

As regards the injury which could happen on account of higher cost of production in India, the Authority notes that under the Indian Anti Dumping Rules it is the lesser duty rule which is applied. Further in any event the anti dumping duties cannot exceed the dumping margin. Therefore in any event if injury to Domestic Industry which could exceed the dumping margin it is certainly not addressed under the Rules of the Anti Dumping.

However despite the above, the Authority appropriately considers the cost of production of the domestic producers and normates the same for determination of Non-Injurious Price (NIP). As regards the injury on account of inland freight is concerned, the Authority holds that the comparison of landed value of dumped goods with NIP is made at the ex-factory level which does not include the inland freight. Therefore the importer viz Ms NALCO could import the material at non-dumped price and thereby may not place order on to the domestic producers in India in case the freight was consideration for them.

As regards the submissions on usage of obsolete technology is concerned, the Authority notes that the various domestic producers in India are using all the three technology and that the inefficiencies in the cost of production are appropriately considered while determination of the Non-Injurious Price. As regards filing of separate petitions on chlorine by the Domestic Industry is concerned, the Authority notes that the related product if at all comes for anti dumping duty investigation, its cost of production and non-injurious price would be appropriately considered as per the general accounting and costing principles.

The Authority notes and observes the following economic parameters in the case of the domestic producers who have supported the petition:-

	1999-00	2000-01	2001-02
Capacity (MT)	830000	830000	842500
Production (MT)	712146	730625	711556
Capacity utilisation (%)	85.8	88.03	84.46
Sales (MT)	588455	583221	544046
Net Sales Realisation (Rs/MT)	****	****	****
Cost of production (Rs/MT)	****	****	****
Imports all countries (MT)	86743	73622	93291
Imports from China (MT)	19	17	26505
Imports from Korea (MT)	21	33	12569
Market share of imports from subject countries (%)	.05	.07	41.88
Demand (MT)	1477061	1488052	1510619

It could be seen from the above that

- Sales of the Domestic Industry have decreased from 588455 MT in 1999-2000 to 544046 MT in 2000-2001.
- It is also seen that there is slight fall in the capacity utilisation from 85.8% in 1999-2000 to 84.46% in 2001-2002.
- The production of the Domestic Industry has also decreased from 712146 MT in 1999-2000 to 711556 MT in 2000-2001.
- Though the Net Sales Realisation have increased from **** MT in 1999-2000 to **** MT in 2001-2002, the cost of production have shown an increase during the period. The Net Sales Realisation is however below the Non-Injurious Price determined for the period of investigation on account of the price undercutting caused by the dumped imports and thereby leading to lower Net Sales Realisation as compared to Non-Injurious Price, and consequently erosion of profitability.

7. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

The Authority notes that it has been indicated by M/s NALCO that the anti dumping duties would affect their export competitiveness. The Authority in this regard holds that there are various schemes under the EXIM policy which permit imports of goods for export production without levy of anti dumping duty. Therefore there are appropriate schemes which an exporter could avail of for the purpose of export production. The Authority also holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

The Authority also recognises that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice of the subject goods to the consumers. Imposition of anti-dumping measures would also not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

8. LANDED VALUE

The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

D. CONCLUSIONS:

It is seen, after considering the foregoing, that:

- a) The subject goods in all forms originating in or exported from the subject country have been exported to India below its normal value except M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea R/P.
- b) The domestic industry has also suffered material injury by way of financial losses due to depressed Net Sales Realisation (NSR) on account of price depression caused by low landed prices of the dumped subject goods.
- c) The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries.
- d) The Authority recommends anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 28 originating in or exported from the subject countries.
- e) It was considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping so as to remove the injury to the domestic industry accrued on account of dumping. Accordingly, it is proposed that provisional anti

dumping duties equal to the difference between the amount of Column 3 of the Table below and landed value of subject goods in \$/MT be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries under Chapter 28 Customs sub-heading 2815 11 and 2815 12 of the Customs Tariff, pending final determination except on exports by M/s Hanwha Chemical Corporation

SI No	Exporter/Producer	Amount (US\$/MT)
1.	KOREA RP All producers/exporters except M/s Hanwha Chemical Corporation	353 4
2.	PR CHINA 1 M/s Chlor Shanghai Chemical Co Ltd 2. Other producers/exporters	362 34 362 34

E. FURTHER PROCEDURE

The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- a. The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings,
- b. Exporters, Importers, Petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- c. The Authority would conduct verifications to the extent deemed necessary;
- d. The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions, for which the date and time shall be communicated to all known interested parties separately;
- e. The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

L V. SAPTHARISHI, Designated Authority

